E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com
website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक -18 | प्रयागराज, सोमवार, 23 मार्च, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

मिडिल ईस्ट युद्ध

'नागरिकों पर हमला नामंजूर,होर्मुज का रास्ता रोकना स्वीकार्य नहीं, 41 देशों से तेल-गैस इंपोर्ट कर रहे'- नरेंद्र मोदी

नयी दिल्ली। पश्चिम एशिया में जंग के हालातों पर पीएम मोदी ने पहली बार सार्वजनिक बयान दिया। लोकसभा में 25 मिनट की स्पीच में उन्होंने कहा कि तनाव खत्म होना चाहिए। बातचीत से ही समस्या का समाधान है। पीएम ने कहा कि नागरिकों और पावर प्लांट पर हमले मंजूर नहीं हैं। होमुर्ज का रास्ता रोकना स्वीकार नहीं होगा। पीएम ने कहा- 'सरकार की कोशिश है कि देश में तेल-गैस संकट न हो। इसके लिए 27 की जगह अब 41 देशों से इंपोर्ट कर रहे हैं। पश्चिम एशिया में एक करोड़ भारतीय रहते हैं। उनकी सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है।' उन्होंने बताया कि अभी 3 लाख 75 हजार भारतीय सुरक्षित देश लौट चुके हैं। ईरान से ही हजार भारतीय सुरक्षित लौटे हैं। 700 से ज्यादा मेडिकल की पढ़ाई करने वाले युवा हैं। मोदी की 6 बड़ी बातें, कहा- हम सभी देशों के सप्लायर्स से संपर्क में- तेल-गैस संकट परः आज हमारे पास 65 लाख मीट्रिक टन की रिजर्व की व्यवस्था पर काम जारी है। सरकार अलग अलग देशों के सप्लायर्स से संपर्क में है। प्रयास है जहां से संभव हो वहां से सप्लाई होती रहे। तेल गैस फर्टिलाइजर से जुड़े जहाज भारत तक सुरक्षित पहुंचे, इसके लिए सहयोगियों से संवाद कर रहे हैं। अन्न-राशन परः हमारे पास पर्याप्त अन्न भंडार है। आपात स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त इंतजाम हैं। उस वक्त भी

ग्लोबल सप्लाई चेन में कमी आई थी। भारत के किसानों को यूरिया की एक बोरी 300 रुपए से भी कम कीमत में दिलाई गई। भारतीयों की सुरक्षाः संकट की घड़ी में भारतीयों की सुरक्षा हमारी बहुत बड़ी प्राथमिकता रही है। अभी 3 लाख 75 हजार भारतीय सुरक्षित देश लौट चुके हैं। ईरान से ही हजार भारतीय सुरक्षित लौटे हैं। 700 से ज्यादा मेडिकल की पढ़ाई करने वाले युवा हैं। पॉवर सप्लाई परः युद्ध का एक चैलेंज यह भी है कि देश में गर्मी का मौसम शुरू हो रहा है। आने वाले समय में बिजली की डिमांड बढ़ती जाएगी। देश के पावर प्लांट में कोल स्टॉक उपलब्ध है। पावर जनरेशन से लेकर सप्लाई तक हर सिस्टम की मॉनीटरिंग की जा रही है। एनर्जी सेक्टर परः हम जानते हैं एनर्जी आज इकोनॉमी की रीढ़ है। ग्लोबल नीड को पूरा करने वाला सोर्स वेस्ट एशिया है। भारत पर इस युद्ध से उत्पन्न दुष्प्रभाव का असर कम हो इसके लिए एक रणनीति से काम कर रहे हैं। भारत सरकार ने एक ग्रुप बनाया है जो हर रोज मिलता है जो आयात-निर्यात में आने वाली दिक्कतों पर निरंतर काम करता है। जंग को लेकरः डिप्लोमेसी में भारत की भूमिका स्पष्ट है। हमने गहरी चिंता व्यक्त की है। मैंने वेस्ट एशिया के प्रमुखों से बात की है। सभी से तनाव कम करने की अपील की है। कॉमर्शियल जहाजों पर हमला और रुकावट अस्वीकार्य है। भारत सभी पक्षों को जल्द से जल्द शांतिपूर्ण समाधान के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। वेस्ट एशिया विवाद पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, हमें हर चुनौती का सामना सब्र, संयम और शांत मन से करना चाहिए। यही हमारी पहचान है, यही हमारी ताकत है। हमें बहुत सावधान और सतर्क भी रहना चाहिए। जो लोग हालात का फ़ायदा उठाना चाहते हैं वे झूठ फैलाने की कोशिश करेंगे। हमें उनकी कोशिशों को कामयाब नहीं होने देना चाहिए। मैं इस सदन के ज़रिए सभी राज्य सरकारों से भी अपील करूंगा। ऐसे समय में ब्लैक मार्केट करने वाले और जमाखोर एक्टिव हो जाते हैं। इसके लिए कड़ी मॉनिटरिंग ज़रूरी है। जहां भी ऐसी शिकायतें आएं, तुरंत एक्शन लेना चाहिए। जब ??हर सरकार और देश का हर नागरिक मिलकर काम करेगा, तो हम हर चुनौती को चुनौती दे सकते हैं।11 साल में देश में अपने सोलर पावर कैपिसिटी 140 गीगा वॉट तक पहुंचाई है। 40 लाख रूफ टॉप सोलर पैनल लगे हैं। गोवर्धन योजना के तहत 200 बायोगैस प्लांट काम कर रहे हैं। सरकार ने भविष्य की तैयारी बढ़ाते हुए शांति एप माध्यम से न्यूक्लियर एनर्जी उत्पादन को बढ़ावा दिया है।

ईरान की धमकी

फारस की खाड़ी में बारूदी सुरंगें बिछा देंगे,तटीय इलाकों पर हमला बर्दाश्त नहीं, होर्मुज स्ट्रेट यहीं मौजूद

तेहरान। अमेरिका-इजराइल और ईरान युद्ध का आज 24वां दिन है। ईरान ने चेतावनी दी है कि अगर उसके तटीय इलाकों या आइलैंड पर हमला किया गया, तो वे फारस की खाड़ी के समुद्री रास्तों पर बारूदी सुरंगें (माइन्स) बिछा देंगे। ईरान की नेशनल डिफेंस काउंसिल ने सोमवार को कहा कि इस रास्ते से गुजरने के लिए देशों को ईरान के साथ बातचीत करनी होगी। दुनिया की अहम शिपिंग रूट होर्मुज स्ट्रेट यहीं मौजूद है, जहां से दुनिया के 20फीसदी तेल का ट्रांसपोर्ट होता है। ट्रम्प ने दो दिन पहले ईरान को धमकी दी थी कि अगर 48 घंटे में होर्मुज रूट नहीं खोला गया तो वो ईरान के पावर प्लांट पर बड़ा हमला करेंगे। इस धमकी की डेडलाइन आज रात खत्म होने वाली है।ईरान ने सीजफायर के लिए 3 नई शर्तें रखीं हैं। ईरान के एक बड़े अधिकारी ने लेबनानी मीडिया अल मयादीन से रविवार को कहा कि उनका देश पहले से तय योजना के हिसाब से काम कर रहा है। ईरान की तीन नई शर्त- इलाके में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को बंद किया जाए, होर्मुज स्ट्रेट के लिए नए नियम बनाए जाएं और ईरान के खिलाफ माने जाने वाले मीडिया से जुड़े लोगों पर कार्रवाई की जाए और उनका प्रत्यर्पण किया जाए। जबकि इससे पहले ईरान कहा था कि सीजफायर के लिए भविष्य में दोबारा युद्ध न

होने की गारंटी दी जाए, नुकसान का मुआवजा दिया जाए और पूरे क्षेत्र में चल रहे युद्ध खत्म किए जाएं। ईरानी अधिकारी का कहना है कि उनका देश तब तक कार्रवाई जारी रखेगा, जब तक दुश्मनों को सबक नहीं सिखा देता।ईरान जंग के कारण चीन और हॉन्गकॉन्ग के शेयर बाजारों में करीब एक साल की सबसे बड़ी गिरावट देखने को मिल रही है। मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव के कारण आर्थिक सुस्ती की आशंका बढ़ गई है और इसका असर वैश्विक वित्तीय बाजारों पर पड़ रहा है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने इस स्थिति को देखते हुए आपात बैठक बुलाने का फैसला किया है, क्योंकि युद्ध के आर्थिक असर लगातार बढ़ रहे हैं। इस बीच ईरान, इजराइल और खाड़ी देशों में हमले और जवाबी कार्रवाई जारी है, जिससे पूरे क्षेत्र में तनाव बना हुआ है।ईरान में देशभर में लागू इंटरनेट बंदी अब 24वें दिन में पहुंच गई है। इंटरनेट मॉनिटरिंग ग्रुप नेटब्लॉक्स के मुताबिक, यह बंदी 552 घंटे से ज्यादा समय तक जारी है। नेटब्लॉक्स ने कहा कि यह दुनिया के किसी भी देश में दर्ज सबसे गंभीर इंटरनेट ब्लैकआउट में से एक है। रिपोर्ट के अनुसार, आम लोगों के लिए अंतरराष्ट्रीय इंटरनेट कनेक्टिविटी अब भी बंद है, जबकि सरकार ने कुछ चुनिंदा सेवाओं के लिए सीमित एक्सेस दिया हुआ है।दक्षिणी लेबनान में हुए एक हवाई हमले में एक नागरिक की मौत हो गई है। लेबनान की नेशनल न्यूज एजेंसी के अनुसार, टायर के अल-शहाबिया इलाके में यह हमला हुआ। रिपोर्ट के मुताबिक, इस हमले से रिहायशी इलाके में भारी नुकसान हुआ है। अब तक इजराइल के हवाई हमलों में 1,000 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है और करीब 10 लाख लोग अपने घर छोड़ने को मजबूर हुए हैं।ईरान ने चेतावनी दी है कि अगर उसके तटीय इलाकों या द्वीपों पर हमला किया गया, तो वह पर्शियन गल्फ में समुद्री रास्तों पर बारूदी सुरंगें (माइन) बिछा देगा। ईरान की नेशनल डिफेंस काउंसिल ने कहा कि ऐसी स्थिति में खाड़ी क्षेत्र की सभी समुद्री संपर्क लाइनों को माइन कर दिया जाएगा। साथ ही यह भी कहा गया कि इस रास्ते से गुजरने के लिए देशों को ईरान के साथ बातचीत करना होगा। यह बयान ऐसे समय आया है जब अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने ईरान के पावर प्लांट पर हमले की धमकी दी है। रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रम्प प्रशासन ईरान के खार्ग द्वीप पर कब्जा करने के विकल्प पर भी विचार कर रहा है।

आसिम मुनीर की शिया धर्मगुरुओं को धमकी बोले- 'ईरान से मोहब्बत तो वहीं चले जाओ'

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के

सेना प्रमुख आसिम मुनीर ने गुरुवार को शिया धर्मगुरुओं से कहा कि जो लोग ईरान से इतना प्यार करते हैं, वे वहां चले जाएं। उनके इस बयान को शिया समुदाय के नेताओं ने अपमानजनक और भड़काऊ बताया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मुनीर ने रावलपिंडी में शिया समुदाय की एक इफ्तार पार्टी में यह बात कही। उन्होंने कहा कि वे किसी को भी, किसी दूसरे देश के लिए अपनी वफादारी की वजह से, पाकिस्तान में अफरा-तफरी फैलाने की इजाजत नहीं देंगे। इससे पहले उन्होंने यह भी चेतावनी दी थी कि किसी दूसरे देश की घटनाओं के आधार पर पाकिस्तान में हिंसा बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस बयान के बाद शिया समुदाय का कहना है कि यह उनकी देशभक्ति पर सवाल उठाने जैसा है। उनका मानना है कि यह बयान उनकी धार्मिक भावनाओं और पहचान को गलत तरीके से पेश करता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक बैठक के बाद उलेमाओं से कहा गया था कि डिनर के बाद फिर से बातचीत होगी। लेकिन जनरल मुनीर अचानक कार्यक्रम छोड़कर चले गए। इससे शिया नेताओं को लगा कि उनके साथ न सिर्फ औपचारिक बल्कि व्यक्तिगत तौर पर भी अपमान किया गया है। शिया समुदाय के नेताओं ने इस विवाद के बाद कहा कि उनकी वफादारी पाकिस्तान और इस्लाम दोनों के प्रति है। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि पाकिस्तान के निर्माण में शिया समुदाय का अहम योगदान रहा है। देश के कई बड़े नेता और संसाधन इस समुदाय से जुड़े रहे हैं। शिया नेताओं का कहना है कि मक्का, मदीना, इराक और ईरान जैसे धार्मिक स्थलों से उनका जुड़ाव उनकी आस्था का हिस्सा है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उनकी देशभक्ति कम है। उन्होंने साफ कहा कि धार्मिक संबंधों को देशभक्ति से जोड़कर देखना गलत है।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...**

दावा- ईरान से सीजफायर वार्ता करना चाहते हैं ट्रम्प

वॉशिंगटन डीसी। डोनाल्ड ट्रम्प की टीम ईरान के साथ सीजफायर पर बात करना

चाहते हैं। इस काम में ट्रम्प के सलाहकार जेरेड कुशनर और स्टीव विटकॉफ भी लगे हुए हैं। यह जानकारी एक्सियोस न्यूज ने दी है। हालांकि ईरान ने बातचीत के लिए शर्त रखी है कि पहले जंग रोकी जाए और उसे हुए नुकसान का मुआवजा दिया जाए। ईरान का यह भी कहना है कि भविष्य में उस पर फिर से हमला नहीं होगा, इसकी पक्की गारंटी मिले। दूसरी तरफ, ट्रम्प ने साफ कर दिया है कि वे अभी ईरान की सभी शर्तें मानने के लिए तैयार नहीं हैं, खासकर मुआवजे की मांग को।

अमेरिका और ईरान के बीच सीधी बातचीत फिलहाल नहीं हो रही है। लेकिन मिस्र, कतर और ब्रिटेन जैसे देश मध्यस्थ का रोल निभा रहे हैं। अमेरिका चाहता है कि ईरान अपना मिसाइल प्रोग्राम कुछ समय के लिए बंद करे, यूरेनियम एनरिचमेंट रोक दे और अपने परमाणु ठिकानों को भी बंद करे। इसके अलावा, ईरान हिजबुल्लाह और हमास को पैसे देना भी बंद करे। ईरान के राष्ट्रपति मसूज पजशकियान ने शनिवार को पीएम मोदी से फोन पर बात की। इस दौरान उन्होंने कहा कि ब्रिक्स को ईरान पर हो रहे हमले रोकने में भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि ब्रिक्स को बिना किसी दबाव के, अपने दम पर काम करना चाहिए और इस मामले में आगे आना चाहिए।ईरान के राष्ट्रपति ने यह भी सुझाव दिया कि मिडिल ईस्ट के देशों को मिलकर एक नया सुरक्षा सिस्टम बनाना चाहिए। इससे इलाके में शांति और स्थिरता बनी रहेगी और बाहर के देशों का दखल कम होगा।

ईरान को लेकर बढ़ते युद्ध के बीच आर्थिक असर को देखते हुए ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने आज इमरजेंसी बैठक बुलाई है।

सरकार के मुताबिक, इस बैठक में वित्त मंत्री रेचल रीव्स, बैंक ऑफ इंग्लैंड के गवर्नर एंड्रयू बेली, विदेश मंत्री और ऊर्जा मंत्री भी शामिल होंगे।

बैठक में परिवारों और कारोबार पर पड़ रहे असर, ऊर्जा सुरक्षा, इंडस्ट्री और सप्लाई चेन की स्थिति, साथ ही अंतरराष्ट्रीय हालात पर चर्चा की जाएगी। यह बैठक 'कोबरा' फॉर्मेट में हो रही है, जो संकट के समय बुलाई जाती है। ब्रिटेन अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए बड़े पैमाने पर इंपोर्टेड गैस पर निर्भर है।

ऐसे में अमेरिका-इजराइल के हमले जारी रहने के बीच ऊर्जा कीमतों में और बढ़ोतरी की आशंका जताई जा रही हैयूएई की राजधानी अबू धाबी में मिसाइल हमले के दौरान गिरे मलबे से एक भारतीय नागरिक घायल हो गया। अबू धाबी मीडिया ऑफिस के मुताबिक, यह घटना उस वक्त हुई जब एयर डिफेंस सिस्टम ने राजधानी को निशाना बना रही बैलिस्टिक मिसाइल को हवा में ही नष्ट कर दिया। मलबा अल शावामेख इलाके में गिरा है।

ईरान को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की चेतावनियों के बाद अंतरराष्ट्रीय तेल बाजार में तेज उतार-चढ़ाव देखा गया। ट्रेडिंग शुरू होते ही अमेरिकी बेंचमार्क डब्लू.टी.आई क्रूड करीब 1.8फीसदी चढ़कर 100 डॉलर प्रति बैरल (करीब रु8,300) के पार पहुंच गया, हालांकि बाद में इसमें हल्की गिरावट आई।

वहीं, ब्रेंट क्रूड भी इसी रफ्तार से बढ़कर 113.44 डॉलर प्रति बैरल (करीब रु9,400) तक गया, लेकिन करीब 45 मिनट बाद यह फिसलकर लगभग 111 डॉलर (करीब रु9,200) के आसपास आ गया। 27 फरवरी को जब अमेरिका-इजराइल की ओर से ईरान पर हमले शुरू होने से एक दिन पहले, डब्लू.टी.आई 67.02 डॉलर (करीब रु5,600) और ब्रेंट 72.48 डॉलर (करीब रु6,000) प्रति बैरल पर था।अमेरिकी विदेश विभाग ने दुनियाभर में अपने नागरिकों के लिए चेतावनी जारी की है। इसमें खास तौर पर मिडिल ईस्ट में ज्यादा सतर्क रहने को कहा गया है। एडवाइजरी में कहा गया है कि विदेश में रह रहे अमेरिकी नागरिक अपने नजदीकी दूतावास या कॉन्सुलेट की ओर से जारी सुरक्षा निर्देशों का पालन करें। साथ ही, समय-समय पर एयरस्पेस बंद होने से ट्रैवल करने में दिक्कत आ सकती है। अमेरिका ने यह भी चेतावनी दी है कि उसके राजनयिक ठिकानों को निशाना बनाया जा चुका है और ईरान समर्थक समूह दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अमेरिकी हितों या अमेरिकी नागरिकों से जुड़े स्थानों को निशाना बना सकते हैं।

ईरान की शर्त- पहले मुआवजा दो, आगे हमला नहीं होगा इसकी गारंटी भी चाहिए

शंकराचार्य 2.18 लाख सैनिकों की चतुरंगिणी सेना बनाएंगे

वाराणसी। वाराणसी में शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने सोमवार को चतुरंगिणी

सेना बनाने का ऐलान किया। उन्होंने कहा- चतुरंगिणी सेना में 2 लाख 18 हजार 700 सैनिक होंगे। इसमें देशभर से लोग भर्ती होंगे। उन्होंने बताया- यह सेना गोरक्षा, धर्म रक्षा, शास्त्र रक्षा और मंदिर रक्षा का कार्य करेगी। उनकी ड्रेस पीली होगी। हाथ में परशु (फरसा) होगा। अविमुक्तेश्वरानंद ने चतुरंगिणी सेना बनाने के लिए श्रीशंकराचार्य चतुरंगिणी सभा का गठन किया है। इसमें 27 सदस्य होंगे। इसका अध्यक्ष वे खुद होंगे। शंकराचार्य ने अपनी सेना के काम करने के तरीके बताए। उन्होंने कहा- 'पहले टोको, यानी टोकेंगे। कहो कि यह गलत हो रहा है। नहीं माने तो रोको। भाई, आपको रुकना पड़ेगा। नहीं तो फिर ठोको। ठोको का मतलब सीधे प्रहार करना नहीं है। मुकदमा करना, शिकायत करना और पंचायत करना भी ठोको में आएगा। ये सभी संवैधानिक तरीके अपनाते हुए काम करेंगी।' शंकराचार्य ने कहा- 1 पत्ती (टीम) में 10 लोग होंगे। 21 हजार 870 टीमें बनेंगी तो सेना तैयार हो जाएगी। भारत में अभी करीब 800 जिले हैं। अगर हर जिले में 27 टीमें, यानी 270 लोग तैयार हो गए, तो 2 लाख 16 हजार लोग तैयार हो जाएंगे। उत्तराखंड के बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर में गैर-हिंदुओं के प्रवेश पर रोक के मामले में शंकराचार्य ने कहा- मक्का-मदीना में 40 किलोमीटर पहले ही दूसरे धर्म के लोगों को रोक दिया जाता है। वह गलत नहीं है। ठीक है। वैसे ही हमारे भी धर्म स्थल हैं। हमें भी अपनी पवित्रता चाहिए। हमें भी अपने ढंग से पूजा-पाठ करना है। वहां दूसरा क्यों जाएगा। हमारे यहां परंपरा है कि धार्मिक परिसरों में उसी धर्म के लोग जा सकते हैं, जिसे वे मानते हैं।शंकराचार्य को चतुरंगिणी सेना बनाने की जरूरत क्यों पड़ी- आदि शंकराचार्य ने आठवीं सदी में 13 अखाड़े बनाए थे। इन अखाड़ों का गठन हिंदू धर्म और वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए किया गया था। धर्म की रक्षा के लिए नागा साधुओं की एक सेना की तर्ज पर ही अखाड़ों को तैयार किया गया था। जिसमें उन्हें योग, अध्यात्म के साथ शस्त्रों की भी शिक्षा दी जाती है। इन अखाड़ों को शंकराचार्य की सेना भी कहा जाता था। आजादी के बाद 1954 में अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद का गठन हुआ था। 1954 के प्रयाग (इलाहाबाद) कुंभ में मची भगदड़ के बाद, व्यवस्था सुधारने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की पहल पर, 13 अखाड़ों के प्रतिनिधियों ने मिलकर इस संस्था की स्थापना की। ऐसा माना जाता है कि अखाड़ा परिषद बनने के बाद इनकी कमान परिषद के अध्यक्ष के हाथ में आ गई और धीरे-धीरे शंकराचार्यों का कमांड इन पर से कम हो गया। 18 जनवरी (मौनी अमावस्या) को शंकराचार्य प्रयागराज माघ मेले में अपने शिविर से पालकी में सवार होकर संगम स्नान के लिए रवाना हुए। पालकी को संगम नोज तक ले जाने को लेकर विवाद हो गया। इसके बाद शंकराचार्य धरने पर बैठ गए, लेकिन किसी भी अखाड़े ने उनका समर्थन नहीं किया। उस वक्त अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवींद्र पुरी ने कहा था- मुख्यमंत्री को लेकर शंकराचार्य की कड़े शब्दों में की गई टिप्पणियां गलत हैं। 10 दिन बाद 28 जनवरी को शंकराचार्य बिना स्नान किए काशी लौट गए। इसके बाद वे यूपी सरकार पर लगातार हमलावर रहे। उन्होंने 'गो-प्रतिष्ठा धर्मयुद्ध' यात्रा का ऐलान किया और साधु-संतों से साथ आने की अपील की। 7 मार्च को काशी से शुरू हुई यात्रा 11 मार्च को लखनऊ पहुंची। यहां शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने गोरक्षा अभियान का शंखनाद किया, लेकिन साधु-संतों की भागीदारी सीमित दिखी। 11 मार्च को शंकराचार्य ने कहा था कि साधु समाज में विकृति आ गई है। एक लकीर खिंच गई है। उन्होंने सभी अखाड़ों को पत्र लिखकर यह पूछने की बात कही कि वे किसके साथ हैं।

वडोदरा में आदिवासी अधिकार संवाद कार्यक्रम में शामिल होकर सरकार की नीतियों पर करेंगे चर्चा-राहुल गांधी

वडोदरा। राहुल गांधी सोमवार को वडोदरा में 'आदिवासी अधिकार संवाद' कार्यक्रम में भाग लेंगे। इस सम्मेलन में आदिवासी क्षेत्रों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए लगभग 1,000 आदिवासी डॉक्टर, इंजीनियर, गैर सरकारी संगठन के सदस्य, कार्यकर्ता और बुद्धिजीवी शामिल होंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य आदिवासी समाज के अधिकारों के लिए लड़ाई तेज करना, सरकारी नौकरियों में प्रतिनिधित्व और मनरेगा व अन्य योजनाओं में कथित अनियमितताओं पर चर्चा करना है। आगामी स्थानीय निकाय चुनावों और 2027 के गुजरात विधानसभा चुनाव के मद्देनजर यह दौरा कांग्रेस के लिए काफी अहम माना जा रहा है। सम्मेलन के बाद, राहुल गांधी पार्टी के राज्य नेतृत्व के साथ भी बैठक कर चुनावी तैयारियों की समीक्षा कर सकते हैं। गुजरात कांग्रेस के नेता अमित चावडा ने कहा कि राहुल गांधी दोपहर 2 बजे वडोदरा एयरपोर्ट पहुंचेंगे और करीब एक घंटे बाद अजवा रोड स्थित पंडित दीनदयाल उपाध्याय सभागार में होने वाले कार्यक्रम में शामिल होंगे। यहां गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों से आदिवासी कार्यकर्ता और बुद्धिजीवी शामिल होंगे। आदिवासी संस्कृति,

शिक्षा और वनाधिकार कानून जैसे मुद्दों पर भी चर्चा होगी। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक उत्थान से जुड़े कार्यकर्ता पैनल डिस्कशन में भाग लेंगे। गुजरात में नगर निगम और जिला पंचायत चुनावों की घोषणा होने वाली है। राज्य विधानसभा का सत्र 25 मार्च को खत्म हो जाएगा। इसके बाद 26 मार्च गुजरात राज्य चुनाव आयोग लोकल बॉडी चुनावों के लिए शेड्यूल का ऐलान कर सकता है। इससे पहले राहुल गांधी पिछले साल 12 सितंबर को जूनागढ़ पहुंचे थे, तब उन्होंनें सभी जिला अध्यक्षों के कार्यक्रम को संबोधित किया था। निकाय चुनाव के मद्देनजर राहुल गांधी के दौरे के बाद कांग्रेस के कुछ अन्य नेताओं के बीच गुजरात आने की संभावना व्यक्त की जा रही है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अमित चावड़ा ने कहा कि देश में लोगों के संवैधानिक अधिकारों का हनन हो रहा है। हर तरफ से अतिक्रमण हो रहा है। सरकार रक्षा करने के बजाय समर्थन कर रही है। आदिवासी समुदाय के जल और वन भूमि के अधिकार छीने जा रहे हैं। आज भी आदिवासी क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं की कमी है। आज भी आदिवासियों के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है। विकास बजट में भी भारी भेदभाव है। आदिवासियों के नाम पर आवंटित बजट में भ्रष्टाचार है। गुजरात में आदिवासी समुदाय के लोग विभिन्न मुद्दों पर संघर्ष कर रहे हैं। यह समुदाय वर्तमान में संघर्षरत है। राहुल गांधी गुजरात के आदिवासी बहुल इलाकों में संघर्ष कर रहे युवाओं, महिलाओं, कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवी संगठनों के लोगों से सीधे संवाद करने के लिए गुजरात आ रहे हैं। गुजरात से ही देश में आदिवासी समुदाय के लिए आंदोलन की शुरुआत होगी।

'श्रम की पूजा और जहां श्रम का अनोखा दान जल स्रोतों का हनन न हो, इसका पूरा ध्यान हो'

जल संचयन का अमृत प्रयास, बुझ रही धरा की प्यास

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) बाकरगंज कौशांबी। जल संकट के दौर में जब पानी की एक-एक बूंद आवश्यक है संगम नगरी ने

इस दिशा में मिसाल कायम की है जल संरक्षण को बढ़ावा देने वाली अमृत सरोवर योजना का बेहतर उपयोग कर जल संकट की समस्या का हल निकाला जा सकता, प्रयाग मंडल में 583 अमृत सरोवर बनवाएं गये है, जिसमें लगभग 7050 हेक्टेयर क्षेत्रफल में बने इन सरोवरों में 2.5 अब लीटर वर्षा जल का संचय होगा। इसमें 583 गांव के लगभग 2.5 लाख किसानों को सिंचाई के लिए जल मिलेगा। हर वर्ष 22 मार्च को हम जल दिवस के रूप में मनाते हैं हमें संकल्प लेना चाहिए कि खुद जल संरक्षण को आगे लाना है और हमें सभी लोगों के बीच में रहकर लोगों जल संरक्षण के बारे में बताना तथा समझना चाहिए उससे भी बढ़कर हमें आज की युवा पीढ़ी को जल में निर्भरता को समझना चाहिए कि यदि जल है तो कल है। किसी भी प्रकार से देखा जाए तो आज से 5-6 वर्ष पहले वाली पीढ़ी के युवा इसे कम समझते थे आज हमें यह बताने की आवश्यकता है कि हमारी प्रकृति में सभी का संतुलन एक समान होता है यदि किसी की समढिट में कमी आई तो कहीं ना कहीं संतुलन जरूर बिगड़ेगा समाज के लोग विकास अंधाधुन भाग में वनों की कटाई करते जा रहे हैं जिसमें जल का संकट बहता जा रहा है। पृथ्वी का इकट्ठा प्रतिशत हिस्सा जल से अच्छादित जिसमें 1.6 प्रतिशत ही भूमिगत जल और लगभग 0.001 प्रतिशत जलवाष्प और बादल के रूप में पाए जाते हैं जिससे हमें पूरा ध्यान जल संरक्षण पर देना चाहिए जिम्मेदारी का निर्वाहन करें, जरूरत के मुताबिक इस्तेमाल करें अपनी आदतों में बदलाव लाकर जल संचित किया जा सकता है, फिजूली जल खर्चो को प्रतिबंध लगाना चाहिए। आज के तरीके के स्नानहार और शौचालय पर जरूर से कहीं ज्यादा जल खर्च होता है बच्चे हो या युवा कहीं ना कहीं मोबाइल में इतनी व्यस्त होते जा रहे हैं कि जल ही प्रमुखता नहीं समझते हैं घर का नल कभी-कभी खुला छोड़ देते बच्चे जल का ज्यादा है। समझकर अनावश्यक उपयोग करते रहते हैं इसलिए हमें बताना चाहिए कि जल हमारा कल तय करता है यदि जल सुरक्षित है तो हम और हमारी आने वाली पीढ़ी हमारी प्रकृति और यहां निवास करने वाली अन्य समष्टि सुरक्षित रहेगी। अतः हमें वनों की कटाई तथा अनावश्यक उपयोग बंद करना होगा क्योंकि इस समय जहां अधिक टिकाऊ भविष्य के निर्माण में व्यस्त हैं वहीं पानी खाद्य तथा ऊर्जा की पारस्परिक निर्भरता को चुनौतियों का सामना हमें करना पड़ रहा है। समय आ गया है जब हम वर्ष का पानी अधिक से अधिक बढ़ाने की कोशिश करें बारिश की एक-एक बूंद कीमती है इन्हें सहेजना बहुत ही आवश्यकता है।जल संरक्षण पर सुझाव 1. हमें जल बचाना है तो हमें आज की पीढ़ी को जागरूकता करना जरूरी है हमें सरकारी अथवा प्राइवेट स्कूलों के बच्चों को बताना चाहिए क्योंकि यह उनके सीखने का सुनहरा अवसर होता है, 2. स्थान -स्थान पर जल संरक्षण का पोस्टर लगाकर लोगों को जागरूक करना चाहिए। 3. स्थान -स्थान पर कमेटी बनाकर जंगलों के काटने का विरोध करना चाहिए। 4. सर्वप्रथम हमें अपने भारत में एकता लानी होगी क्योंकि यदि हम एक साथ किसी कार्य को करते हैं तो पूरी न सही आधी सफलता जरूर मिलती है।

आशा यस ए वन फाउंडेशन दिव्यांग जनों का करेगा हर संभव मदद... संस्थापिका आशा यादव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी।हरहुआ आशा ए-वन फाउंडेशन की ओर से रविवार

को दादूपुर स्थित शिव धाम पैलेस में सम्मान समारोह का आयोजन

किया गया। कार्यक्रम में फाउंडेशन के एक दर्जन से अधिक पदाधिकारियों एवं लगभग 30 सदस्यों को अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और माला पहनाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कन्याओं का विधि-विधान से पूजन कर प्रसाद वितरण किया गया। फाउंडेशन की संस्थापिका आशा यादव एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा कन्याओं की आरती भी की गई। कार्यक्रम में उपस्थित दर्जनों महिलाओं को भी माला एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।फाउंडेशन के संयोजक डॉ. सर्वोदय सिंह ने बताया कि वर्ष 2026 में दिव्यांग व्यक्तियों को चिन्हित कर उन्हें कौशल आधारित शिक्षा प्रदान की जाएगी तथा उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप हर संभव सहयोग उपलब्ध कराया जाएगा। संस्थापिका आशा यादव ने कहा कि फाउंडेशन गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, महिला उत्पीड़न, बाल शोषण एवं पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं के समाधान हेतु विभिन्न कार्यक्रम संचालित करेगा। इस दौरान जिला अध्यक्ष सर्वेश यादव ने कहा कि गरीबों, असहायों एवं दिव्यांग जनों की सेवा ही सच्चा धर्म है। उन्होंने कहा कि यदि सच्चा सुख और आत्मिक शांति प्राप्त करनी है, तो जरूरतमंदों की मदद करना सबसे श्रेष्ठ कार्य है। कार्यक्रम में हरहुआ एवं चिरईगांव ब्लॉक के सैकड़ों महिला-पुरुषों ने भाग लिया। इस अवसर पर रेखा सिंह, निशा कुमारी, सहदेव यादव, कमलेश एवं ओम प्रकाश सहित कई पदाधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन जिला प्रवक्ता अशोक सिंह ने किया। इस मौके पर ललिता कुमारी, गीतांजलि, लक्ष्मी वर्मा, संजू देवी, नीतू देवी, रेखा देवी, दीपिका सिंह, पूनम सिंह, सुमन रावत, जानकी, आकांक्षा मौर्य, सरिता तथा विश्वेश्वर सिंह सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

प्रयागराज - कानपुर सेक्शन में 'कवच' लागू

कानपूर। उत्तर मध्य रेलवे ने आज, 22 मार्च 2026 को प्रयागराज- कानपुर सेक्शन (190 रूट किलोमीटर) पर 'कवच' स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली को सफलतापूर्वक लागू कर दिया है। 'कवच' प्रणाली को औपचारिक तौर पर गाड़ी संख्या 14163 के माध्यम से लागू किया गया। आज इस ट्रेन के लोकोमोटिव में उत्तर मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री एन.पी. सिंह ने 'कवच' प्रणाली के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए ट्रेन संख्या 14163 में सवार होकर सूबेदारगंज से मनौरी स्टेशन तक 'फुटप्लेट निरीक्षण' भी किया। पहले चरण में, 'कवच'

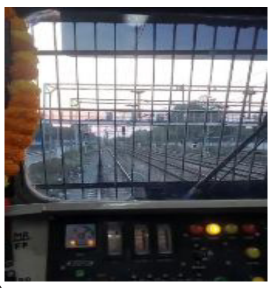

को इस मार्ग पर संचालित हो रही आठ जोड़ी ट्रेनों गाड़ी संख्या 14113/14114, 14163/14164, 12307/12308, 12417/12418, 22437/22438, 15003/15004, 20433/20434, और 12403/12404 पर लागू किया जाएगा। इसके अलावा अन्य ट्रेनों और 'वंदे भारत' ट्रेनों को भी धीरे-धीरे इसमें शामिल किया जाएगा। यह शुरुआत भारतीय रेलवे के सबसे महत्वपूर्ण सेक्शनों में से एक पर 160 किमी/घंटा की गति से ट्रेन चलाने, रेलवे सुरक्षा को बढ़ाने और परिचालन दक्षता में सुधार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

अपर पुलिस अधीक्षक सीतापुर ने नैमिष में ललिता देवी मंदिर में की सुरक्षा का लिया जायजा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सीतापुर। सीतापुर अपर पुलिस

अधीक्षक दक्षिणी दुर्गेश कुमार सिंह द्वारा चैत्र नवरात्रि के दृष्टिगत थाना नैमिषारण्य क्षेत्रान्तर्गत मां ललिता देवी के मदिर प्रांगण में सुरक्षा व्यवस्था में लगे पुलिस कर्मियों की ड्यूटी चेक गयी तथा सम्बन्धित को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये।

आरएसएस के नैनी भाग के स्वयंसेवकों ने किया पथ संचलन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी। नव वर्ष के उपलक्ष में राष्ट्रीय

स्वयंसेवक संघ प्रयाग नैनी भाग के तत्वावधान में रविवार को विराट पथ संचलन किया गया। संचलन माधव ज्ञान केंद्र खरकौनी से निकलकर लोकपुर, अरेल मोड़, काटन मिल चौराहा, शंकर ढाल एफसीआई रोड होते हुए प्रस्थान स्थल पर पहुंचकर समाप्त हुआ। संचालन के आगे मां भारती का रथ चल रहा था। उसके पीछे स्वयंसेवक बैंड बाजा बजाते हुए चल रहे थे। पीछे पूरे गणवेश में दंड के साथ स्वयंसेवक कतारबद्ध होकर चल रहे थे। संचलन का जगह-जगह फूलों की वर्षा कर स्वागत किया गया।

इंदिरा नगर के जी.एस. उत्सव लॉन में प्रख्यात कथावाचक बाल ब्रह्मचारी दंडी स्वामी की श्रीमद्भागवत कथा में उमड़ा आस्था का सैलाब

श्री सद्गुरुदेव भगवान श्री आनंदाश्रम जी महाराज (महाबीरन) के ओजस्वी प्रवचनों से बना आध्यात्मिक वातावरण, भक्ति और वैराग्य का दे रहे संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शहर के इंदिरा नगर स्थित जी.एस. उत्सव लॉन में चल

रही साप्ताहिक संगीतमय श्रीमद्भागवत कथाज्ञान यज्ञ में श्रद्धालुओं की आस्था चरम पर दिखाई दे रही है। 19 मार्च से प्रारंभ होकर 25 मार्च तक चलने वाले इस आध्यात्मिक आयोजन में प्रतापगढ़ जनपद की कालाकाकर तपस्थली से पधारे प्रख्यात कथावाचक बाल ब्रह्मचारी (दंडी स्वामी) श्री सद्गुरुदेव भगवान श्री आनंदाश्रम जी महाराज

(महाबीरन) अपने श्रीमुख से भागवत कथा की अमृतवर्षा कर रहे हैं। कथा के दौरान दंडी स्वामी ने श्रद्धालुओं को जीवन के गूढ़ आध्यात्मिक संदेश देते हुए कहा कि मनुष्य को राग-द्वेष और विकारों से मुक्त होकर निष्कलुष हृदय से भगवान की भक्ति करनी चाहिए। सच्ची भक्ति वही है जिसमें अहंकार का लेश न हो और हर जीव में ईश्वर का स्वरूप दिखाई दे। उन्होंने कहा कि जब मनुष्य अपेक्षाओं के बंधन में बंध जाता है, तो दुखों का कारण स्वयं बनता है, इसलिए जीवन में समत्व भाव अपनाना आवश्यक है। स्वामी जी ने कथा के दर्शन पक्ष को स्पष्ट करते हुए कहा कि श्रीमद्भागवत कथा केवल श्रवण का विषय नहीं, बल्कि आत्मसात करने का माध्यम है। यह मनुष्य को मोह, लोभ और अहंकार से दूर कर विवेक और वैराग्य की ओर ले जाती है। निष्पक्ष और निर्मल मन ही सही निर्णय लेने में सक्षम होता है। कथा स्थल पर प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में महिला, पुरुष और बच्चे पहुंचकर धर्मलाभ अर्जित कर रहे हैं। भक्तिमय वातावरण में 'पिबत भागवतम् रसमालयम्' की गूंज के साथ पूरा परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर है। कार्यक्रम के अंतर्गत 22 मार्च को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, 24 मार्च को श्री रुक्मिणी विवाह तथा 25 मार्च को पूर्णाहुति एवं महाप्रसाद का आयोजन किया जाएगा। आयोजन से जुड़े ज्ञान शंकर तिवारी ने बताया कि कथा के समापन दिवस पर विशाल भंडारे का आयोजन होगा, जिसमें नगरवासियों को सपरिवार आमंत्रित किया गया है। संयोजक मंडल, समस्त शिष्यगण एवं मुख्य यजमान सुनीता शर्मा व मनोज शर्मा ने अधिक से अधिक श्रद्धालुओं से कथा श्रवण कर आध्यात्मिक लाभ लेने की अपील की है। बताते चलें कि एक ओर जहां शहर के डिग्री कॉलेज परिसर में नौ दिवसीय श्रीराम कथा का आयोजन हो रहा है, वहीं दूसरी ओर इंदिरा नगर के जी.एस. उत्सव लॉन में चल रही श्रीमद्भागवत कथा भी हजारों श्रद्धालुओं के आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र बनी हुई है। शहर के प्रबुद्ध नागरिकों, धर्मप्रेमियों एवं सनातन परंपरा के अनुयायियों की लगातार उमड़ती भीड़ इस आयोजन की आध्यात्मिक गरिमा को और अधिक बढ़ा रही है।

सामुदायिक सहयोग से करें जल का संरक्षण - अरुण तिवारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। विश्व जल दिवस के उपलक्ष्य में सी. एम. पी. डिग्री

कॉलेज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में नासी के सभागार में आयोजित आज के वर्कशॉप में पानी एवं हमारा भविष्य विषय पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रख्यात लेखक एवं अध्येता अरुण तिवारी नें कहा कि जल की चुनौतियों से पूरी दुनिया जूझ रही है।भारत का समाज शुरु से प्रकृति का पूजक रहा है। भारत के समाज नें ही तालाब बनाए, कुंएं बनाए, नदियाँ अविरल एवं निर्मल थीं, सदानीरा थीं।आज की चुनौतियों से निपटने के लिए हमें व्यक्ति,संस्था एवं समुदाय के स्तर पर अपनी जिम्मेदारी तय करनी होगी। जल चक्र ठीक करने की आवश्यकता है।कार्यक्रम के संयोजक एवं जल साक्षरता सर्टिफिकेट कोर्स के संयोजक डॉक्टर प्रमोद शर्मा नें कहा कि पानी की एक एक बूंद अमृत के समान हैं।जल प्रबंधन एवं वर्षा जल संचयन एवं वृक्षारोपण से हम बहुत सी समस्याओं को कम कर सकते हैं। शुद्ध पेय जल सबको उपलब्ध होना चाहिए। अतिथियों का स्वागत नासी के अधिशासी सचिव डॉ. संतोष शुक्ला द्वारा हुआ। उन्होंने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए

नासी द्वारा देशभर में स्थापित इसके 21 अध्यायों के माध्यम से संचालित विभिन्न वैज्ञानिक एवं जन-जागरूकता कार्यक्रमों की जानकारी दी। प्रो. शिव मोहन प्रसाद, पूर्व विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, ने भी अपने उद्बोधन में विश्व जल दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने भूजल के अत्यधिक दोहन के दुष्परिणामों के प्रति आगाह किया। उन्होंने बताया कि भूजल स्तर में निरंतर गिरावट से न केवल मानव जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, बल्कि यह पौधों की जड़ों की कार्यप्रणाली को भी प्रभावित करता है। छात्र छात्राओं नें गंगा गैलरी का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर कालेज में संपन्न हुए निबंध लेखन में प्रथम पुरस्कार अनुष्का आरख,द्वितीय पुरस्कार ज्योति त्रिपाठी एवं निष्ठा नाथ को तृतीय पुरस्कार शांति सिंह एवं अनन्या सिंह को दिया गया। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में शिल्पी सिंह को प्रथम पुरस्कार, अनन्या सिंह और वंदना तिवारी को द्वितीय पुरस्कार, मैत्रीय कपूर एवं भूमिखा आरख को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर झल योद्धा आर्यशेखर, प्रो. एस. एम. प्रसाद, डॉक्टर डी.के.साहू, डा सर्वेश सिंह डॉक्टर पूजा गौर डॉक्टर श्रद्धा श्रीवास्तव सहित सी.एम.पी.डिग्री के कालेज के बडी संख्या में छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

महाराजगंज मे युवक की मेडिकल स्टोर संचालक के इलाज के बाद मौत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। औषधि निरीक्षक

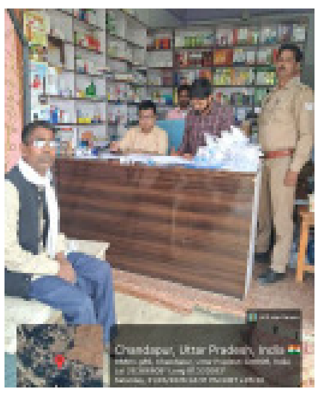

जनपद रायबरेली शिवेंद्र प्रताप सिंह ने बताया है कि मीडिया के द्वारा प्राप्त सूचना 'रायबरेली के महाराजगंज मे शुक्रवार को एक युवक की मेडिकल स्टोर संचालक के इलाज के बाद मौत हो गयी' व अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) से प्राप्त दिशा निर्देश के क्रम में अधोहस्ताक्षरी द्वारा दिनांक 21.03.2026 को J.N. Hospital, Ratapur, रायबरेली के डॉक्टर मल्होत्रा से मृतक दशरथ के इलाज के सम्बद्ध में जानकारी प्राप्त करते हुए थाना चंदापुर तहसील महराजगंज पहुँचकर थाना प्रभारी से उक्त घटना के विषय में पूछताछ कि गयी उनके द्वारा यह बताया गया कि मृतक का पोस्टमार्टम कराया गया है जिसमे मृत्यु का कारण स्पष्ट नहीं होने के कारण ब्रेर्मी को संरक्षित करते हुए हुए उसे विधि विज्ञान प्रयोगशाला प्रेषित किया जा रहा है, अग्रेत्तर प्राप्त पुलिस बल के द्वारा माँ भगवती मेडिकल स्टोर नया पुरवा, चंदापुर, रायबरेली पहुँचे जहा पर मेडिकल स्टोर बंद पाए जाने पर मौके से मेडिकल स्टोर संचालक तथा मृतक के भाई जितेंद्र कुमार को बुलवाया गया, काफी पूछताछ के दौरान यह ज्ञात हुआ कि दिनांक 08.03.2026 को फर्म प्रोपराइटर/फार्मासिस्ट आलोक कुमार कि अनुपस्थिति में उनके भाई आदित्य कुमार के द्वारा DNS (500 ml) कि 1.5 बोतल, NS(100 ml) कि 1 बोतल के साथ Monocef 250, Vomikind Injection तथा Pantop मिलाकर मृतक दशरथ को Infusion अवैद्य रूप से दे दिया गया था, मृतक के भाई जितेंद्र कुमार तथा अन्य परिजन के द्वारा मौके पर बताया गया कि इलाज के अगले दिन दिनांक 09.03.2026 को दशरथ के पूरे शरीर में सूजन हो गया था, दिनांक 17.03.2026 को दशरथ को उनके परिजन द्वारा दिनाक 17.03.2026 को रतापुर स्थित J.N.Hospital, Ratapur, रायबरेली में ऐडमिट कराया गया था जहां से मरीज कि स्थिति में सुधार नहीं होने के कारण डॉक्टर मल्होत्रा द्वारा दिनांक 20.03.2026 को AIIMS /Medical College में रिफर किए जाने को कहा गया, रोगी दशरथ के भाई जितेंद्र द्वारा असमर्थता जताते हुए दिनांक 20.03.2026 को सुबह लगभग 09:30 बजे दशरथ को घर ले जाते समय रास्ते में मौत हो गयी। मेडिकल स्टोर से उपरोक्त अंकित औषधियों के कुल 4 का नमूने संकलित किया गया है जिसे परीक्षण हेतु प्रयोगशाला प्रेषित किया जा रहा है फर्म को तत्काल प्रभाव से पुलिस बल कि उपस्थित में सील करते हुए फर्म से समस्त औषधियों का क्रय विक्रय रोक दिया गया है फर्म को उक्त के संबंध में नोटिस निर्गत की जा रही है फर्म प्रोपराइटर का प्रतिउत्तर प्राप्त होने के पश्चात अग्रिम कार्यवाही औषधि एव सौन्दर्य प्रसाधन अधिनियम के अंतर्गत की जाएगी।

नवनिर्माण के 09 दिवसीय मेले/प्रदर्शनी में विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को वितरित किए गए प्रमाण पत्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। उत्तर प्रदेश सरकार के नवनिर्माण के 9 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आर0डी0ए0 के सामुदायिक केंद्र, रतापुर में 09 आज प्रदेश सरकार के नौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में यह भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इन नौ वर्षों में प्रदेश सरकार ने सुशासन की एक प्रगतिपूर्ण यात्रा तय की है। के युग में बेटियां पूर्णरूप से सुरक्षित एवं निर्भीक होकर किसी भी समय सुगमतापूर्वक आवागमन कर रही, यह हमारे लिए अत्यधिक हर्ष की बात है। जिला

किया जा रहा है। कार्यक्रम में आज मा0 अध्यक्ष जिला पंचायत रंजना चौधरी द्वारा विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टालों का अवलोकन किया गया एवं मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य), स्पॉन्सरशिप योजना, निराश्रित महिला पेंशन योजना के लाभार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया। सूचना एवं सांस्कृतिक विभाग के पंजीकृत दलों द्वारा कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई।इस अवसर पर मा0 जिला पंचायत अध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में कहा कि समाधान और आत्मविश्वास के रूप में उत्तर प्रदेश को एक नयी पहचान दिलायी हैं। वर्ष 2017 से वर्तमान सरकार के सत्ता में आने के पश्चात सरकार ने उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने के लिए अनेक प्रगतिशील कार्य किये हैं। उत्तर प्रदेश अब उत्सव प्रदेश, प्रगति प्रदेश एवं निवेश प्रदेश बन चुका हैं तथा युवाओ के लिए रोजगार और विकास के नये-नये आयाम खोजे जा रहे हैं, जिससे वह प्रदेश की उपलब्धि और प्रगति में भागीदार बन सकें। उत्तर प्रदेश में विगत नौ वर्षो की यात्रा एवं सुशासन द्वारा भी मिशन शक्ति 05 के तहत चलाए जा रहे अभियान के बारे में जानकारी दी तथा प्रोबेशन व महिला कल्याण विभाग की विभिन्न योजनाओं और लाभ परक योजनाओं के बारे में उपस्थित लाभार्थियों को विस्तार पूर्वक बताया गया। मंच का संचालन एस0एस0 पाण्डेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जिला ग्रामोद्योग अधिकारी संतोष कुमार गौतम, जिला समन्वयक कौशल विकास मिशन वंदना सिंह सहित संबंधित कार्मिक व लाभार्थीगण उपस्थित रहे।

राज्यसभा सांसद इमरान प्रतापगढ़ी को दी ईद की मुबारकबाद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। कांग्रेस के नेताओ ने

कांग्रेस पार्टी के नेता राज्यसभा सांसद सुप्रसिद्ध शायर इमरान प्रतापगढ़ी के दिल्ली आवास पर मुलाकात कर ईद की बधाई एव शुभकामनाएं दी, इमरान प्रतापगढ़ी ने आभार व्यक्त करते हुये कहा है कि आज पूरे देश में ईद के मौके पर भाई चारा एव अमन चैन के लिए दुआएँ की जा रही है ईद मिलन भाईचारे के प्रतीक में अपनी तरफ से भी कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारियों सहित देश एवं प्रदेश के लोगो बधाई देता हूँ, बधाई देने वालो में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी अल्पसंख्यक विभाग के राष्ट्रीय सचिव लियाक़त चौधरी,उत्तर प्रदेश कांग्रेस के स्टेट कोडिनेटर बड़ौत बागपत प्रभारी सतेंद्र शर्मा रहे।

सिर्फ इलाहाबाद के ईंट भट्ठों में नहीं, अब उद्योगों में भी भेजा जा रहा कोयला

अवैध कोयले को वैध बनाने खोला भंडारण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) ब्यौहारी। केजीएफ की तर्ज पर अमलाई से उत्तर प्रदेश और गुजरात तक के तारबटुरा और बकहो की अवैध माइंस से

आबाद है टिहकी का कोल भंडारण मुख्यमंत्री तक पहुंचा अवैध कोयला खनन का मामला, भाजपा मंडल अध्यक्ष ने दी शिकायत। जिले में काले सोने की लूट का ऐसा भयावह मंजर है, जिसे देखकर रोंगटे खड़े हो जाएं। यहां कानून की नाक के नीचे कोयला माफियाओं ने अपना समानांतर प्रशासन खड़ा कर लिया है। हद तो तब हो गई जब सत्ताधारी दल के ही एक जिम्मेदार पदाधिकारी को अपनी ही सरकार के मुखिया को पत्र लिखकर गुहार लगानी पड़ी। भाजपा मंडल अध्यक्ष विजयलक्ष्मी राकेश तिवारी द्वारा मुख्यमंत्री को भेजी गई शिकायत ने जिले के प्रशासनिक अमले और पुलिसिया तंत्र की कलई खोलकर रख दी है। सवाल है कि क्या टिहकी का कोयला भंडारण केंद्र वास्तव में अवैध को वैध करने की सबसे बड़ी वॉशिंग मशीन बन चुका है। सफेद होकर निकल रहा काला पत्थर : ब्यौहारी थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत टिहकी इन दिनों विकास के लिए नहीं, बल्कि भ्रष्टाचार की प्रयोगशाला के रूप में कुख्यात है। आरोप है कि यहां संचालित कोयला भंडारण केंद्र महज एक दिखावा है। असल खेल तो रात के सन्नाटे में शुरू होता है। बटुरा और बकहो जैसे क्षेत्रों की बंद और अवैध खदानों से मौत की वादियों में उतरकर निकाला गया कोयला ट्रकों के जरिए टिहकी लाया जाता है। यहां पहुंचते ही इस अवैध कोयले पर सरकारी मुहर लग जाती है और इसे वैध खदानों का माल बताकर रवानगी दे दी जाती है। शासन को हर महीने करोड़ों रुपये के रॉयल्टी का चूना लगाया जा रहा है, लेकिन खनिज विभाग के साहबानों ने शायद अपनी आंखों पर गांधी छाप पट्टी बांध रखी है। शहडोल से गुजरात तक बिछी बिसातः जिले में कोयले का यह कारोबार किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं है। यह टिमहज स्थानीय चोरी नहीं बल्कि एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का सिंडिकेट है। सूत्रों की मानें तो यह काला खेल शहडोल से शुरू होकर अनूपपुर, कटनी और सिंगरौली के रास्तों से होता हुआ छत्तीसगढ़ की सीमा में प्रवेश करता है। गौरेला, पेंड्रा और रतनपुर के रास्ते यह बिलासपुर की मंडियों में खपाया जाता है। इतना ही नहीं, अब यह कोयला केवल इलाहाबाद के ईंट भट्ठों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके तार उत्तर प्रदेश और गुजरात के बड़े उद्योगों से भी जुड़ चुके हैं। ग्रामीणों की सिसकती सांसेंः टिहकी के ग्रामीण आज नर्क जैसी जिंदगी जीने को मजबूर हैं। रात भर चलने वाले भारी भरकम ट्रेलरों और ट्रकों के काफिले ने गांव की सड़कों को मलबे में तब्दील कर दिया है। उड़ती हुई कोयले की धूल बच्चों के फेफड़ों में जहर घोल रही है। पढ़ाई चौपट है और बीमारियां घर कर रही हैं। यदि कोई ग्रामीण इस अवैध कारोबार के खिलाफ आवाज उठाता है, तो उसे माफियाओं के गुर्गे ठिकाने लगाने की धमकी देते हैं। क्या प्रशासन का इकबाल इतना खत्म हो गया है कि जनता अब गुंडों के रहमोकरम पर जिएगी। जब अपनों ने ही खोल दी पोल- इस पूरे मामले का सबसे दिलचस्प और गंभीर पहलू यह है कि शिकायतकर्ता कोई विपक्षी नेता नहीं, बल्कि भाजपा की मंडल अध्यक्ष हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि भ्रष्टाचार की सड़न अब बर्दाश्त के बाहर हो चुकी है। आखिर भाजपा सरकार में ही भाजपा के कार्यकर्ताओं को मुख्यमंत्री की शरण क्यों लेनी पड़ रही है, क्या स्थानीय पुलिस और प्रशासन माफियाओं के पेरोल पर हैं, ब्यौहारी से लेकर बुढ़ार, धनपुरी और अमलाई तक के निकास पॉइंट्स पर आखिर इन ट्रकों को कौन सी अदृश्य शक्ति सुरक्षा कवच दे रही है। मुख्यमंत्री की अग्निपरीक्षा- मुख्यमंत्री कार्यालय तक मामला पहुंचने के बाद अब शहडोल प्रशासन के हाथ-पांव फूल रहे हैं। शिकायत में स्पष्ट तौर पर उच्च स्तरीय जांच और भौतिक सत्यापन की मांग की गई है। टिहकी भंडारण केंद्र के स्टॉक की बारीकी से जांच हो और पिछले छह महीनों के ट्रांजिट पास का मिलान खदानों से निकलने वाले माल से किया जाए। अवैध खनन केवल पर्यावरण का नुकसान नहीं है, यह सरकार के खजाने पर डकैती और आम आदमी के जीवन के साथ खिलवाड़ है। टिहकी का यह काला साम्राज्य यदि अब भी ध्वस्त नहीं हुआ, तो आने वाले समय में यहाँ की जमीन केवल कब्रगाह ही उगलेंगी।

डीएम-एसपी ने तहसील डलमऊ में सम्पूर्ण समाधान दिवस में फरियादियों की सुनी समस्याएं,शिकायतों का समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण से निस्तारण कराए अधिकारी - डीएम

सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 37 शिकायतें आयी, 04 मौके पर हुआ निस्तारण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)रायबरेली। जिलाधिकारी

हर्षिता माथुर की अध्यक्षता में तहसील डलमऊ में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि जन सामान्य की शिकायतों का स्थानीय स्तर पर समाधान किया जाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है जिसके क्रम में तहसील व थानों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया जाता है। इसमें स्थानीय नागरिक उपस्थित होकर अपनी समस्याओं का समाधान करा सकते है। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी अधिकारी जनता की इन शिकायतों का निस्तारण त्वरित एवं समयबद्ध तरीके से एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में यदि कोई समस्या है तो उसका कारण स्पष्ट करते हुए अवगत कराना सुनिश्चित किया जाये। जिलाधिकारी ने बताया कि तहसील डलमऊ में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में राजस्व विभाग 27, विकास 09 व अन्य 01 कुल 37 प्रकरण प्राप्त हुए, जिसमें से 04 प्रकरणों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। शेष प्रकरणों के निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को इस निर्देश के साथ उपलब्ध करा दिये गये कि उनका निस्तारण एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित कराए। पुलिस अधीक्षक डॉ0 रवि कुमार ने भी पुलिस से संबंधित मामलों को सुना और संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 नवीन चंद्रा, उपजिलाधिकारी डलमऊ सतेन्द्र सिंह सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

ग्रीन व्यू सेक्टर 71 में हुआ आर डब्ल्यू ए का चुनाव,अनूप शर्मा अध्यक्ष एवं देवाशीष भट्टाचार्य महासचिव निर्वाचित हुए

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। ग्रीन व्यू आर. डब्लू.

ए.(ब्लॉक - ए), सैक्टर 71 नोएडा की कार्यकारणी के चुनाव मनीष जैन (चुनाव अधिकारी) द्वारा सम्पन्न कराए गए जो निम्नप्रकार अनूप शर्मा अध्यक्ष, वरुण गुप्ता उपाध्यक्ष, देवाशीष भट्टाचार्य महासचिव, भीम सिंह सचिव,रमेश बंसल कोषाध्यक्ष,श्रीमती मंदाकिनी गुप्ता सदस्य ,श्रीमती विमला कुमारी सदस्य , राजीव शर्मा सदस्य डी. न .शुक्ला सदस्य, धर्मवीर चौहान सदस्य, विनेश त्यागी सदस्य को निर्वाचित घोषित किया गया। परमानंद शर्मा को आर डब्लू ए का सर्व सम्मति से संरक्षक नामित किया गया।

संगठन सशक्तिकरण की दिशा में भाजपा का महत्वपूर्ण कदम, दीपक त्रिपाठी बने जिला मीडिया प्रभारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)झाँसी। भारतीय जनता पार्टी ने संगठनात्मक सुदृढ़ीकरण

और विस्तार की अपनी सतत प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है, जो न केवल संगठन की कार्यप्रणाली को गतिशील बनाएगा, बल्कि जनसंपर्क को भी नई ऊर्जा प्रदान करेगा। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी की संस्तुति एवं मार्गदर्शन में, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रदीप पटेल द्वारा झांसी जनपद की जिला कार्यसमिति की घोषणा की गई, जिसमें समर्पण, निष्ठा और सक्रियता के प्रतीक दीपक त्रिपाठी को जिला मीडिया प्रभारी के महत्वपूर्ण दायित्व से अलंकृत किया गया है। दीपक त्रिपाठी लंबे समय से भारतीय जनता पार्टी के संगठन में सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। भारतीय जनता युवा मोर्चा के निवर्तमान प्रदेश कार्यसमिति सदस्य के रूप में उन्होंने संगठन की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने, युवाओं को जोड़ने तथा सामाजिक सरोकारों को सशक्त करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनके इस अनुभव, कार्यकुशलता एवं संगठन के प्रति अटूट समर्पण को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह नियुक्ति न केवल संगठन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का सम्मान है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि भारतीय जनता पार्टी अपने कर्मठ और समर्पित कार्यकर्ताओं को उचित अवसर प्रदान करने में विश्वास रखती है। दीपक त्रिपाठी के जिला मीडिया प्रभारी बनने से संगठन की संवाद प्रणाली और अधिक प्रभावी होगी तथा पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार और अधिक व्यापक स्तर पर संभव हो सकेगा। संगठन के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने इस नियुक्ति पर हर्ष व्यक्त करते हुए विश्वास जताया है कि दीपक त्रिपाठी अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा और दक्षता के साथ करेंगे तथा भाजपा की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

एडीएम ने सलोन में निर्माण कार्यों का किया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ ने आज नगर

पंचायत सलोन के निर्माण कार्यों एवं जल निकासी की समस्या के दृष्टिगत निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सभी संबंधितों को कार्य समय एवं गुणवत्तापूर्ण रूप से करने के निर्देश दिए गए। निरीक्षण के समय अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत प्रियंका तिवारी एवं नायब तहसीलदार सुजीत सिंह आदि मौजूद रहे।

नोएडा में सफाईनायकों के शोषण का मामला, वायरल वीडियो पर उठे सवाल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। से एक चिंताजनक

वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें यह आरोप लगाया गया है कि ईद जैसे महत्वपूर्ण पर्व के अवसर पर भी सफाईकर्मियों से जबरन कार्य कराया जा रहा है। वीडियो में यह भी दर्शाया गया है कि जहां एक ओर बड़े अधिकारी अवकाश पर हैं, वहीं दूसरी ओर नॉर्थ इंडिया डेवलपर्स के ठेकेदार कथित रूप से श्रमिकों से दबाव बनाकर काम करवा रहे हैं। इस पूरे प्रकरण में मैकेनिकल स्वीपिंग मशीनों के उपयोग के बजाय सफाईकर्मियों को मैन्युअल रूप से कार्य करने के लिए मजबूर किया गया, जो श्रमिक अधिकारों और मानवीय संवेदनाओं दोनों पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है। उक्त मामले को लेकर सोशल मीडिया पर तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। इसी क्रम में युवा क्रांति सेना के अध्यक्ष अविनाश सिंह ने भी एक्स पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए प्रशासन से तत्काल संज्ञान लेने की मांग की है। उन्होंने स्पष्ट रूप से इस घटना को सफाईकर्मियों का शोषण बताया और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की बात कही। इस संबंध में संबंधित ट्वीट में नोएडा प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं प्रदेश के मुख्य सचिव को टैग कर मामले की गंभीरता से जांच और आवश्यक कार्यवाही की मांग की गई है।

विधायक पंकज सिंह ने इंटरलाकिग रोड का किया शिलान्यास

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा विधायक पंकज सिंह ने

आज ग्राम गढ़ी चौखंडी में पुस्ता से श्मशान घाट तक लगभग ?37.89 लाख की लागत से 600 मीटर लंबी इंटरलॉकिंग रोड निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। साथ ही, दोनों ओर जल निकासी हेतु नालों का निर्माण भी नोएडा प्राधिकरण द्वारा कराया जाएगा। यह सड़क ग्राम गढ़ी चौखंडी एवं आसपास की कॉलोनियों की लंबे समय से लंबित मांग थी, जिसका आज शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित कॉलोनी वासियों ने पंकज सिंह जी के जय-जय के नारे लगाए और धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष नोयडा महेश चौहान, मेसी यादव, सुशील यादव, चंदगीराम यादव, संजय बाली, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष रामनिवास यादव, रतनपाल यादव, सुदेश तोमर, मनीष तिवारी , महावीर, अनिल, रमेश यादव, भागमल शर्मा, जयवीर यादव, सुन्दर यादव, आदि सहित सैकड़ो की संख्या में ग्राम एवं कॉलोनी वासी उपस्थित रहे।

सांस्कृतिक एकता की मिसालःमीडिया क्लब में होली-ईद-नवरात्रि संग मनाया गया हिन्दी नववर्ष उत्सव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा होली, ईद एवं

नवरात्रि के उपलक्ष्य में रविवार को नोएडा मीडिया क्लब द्वारा 'हिन्दी नववर्ष उत्सव' का भव्य

एवं गरिमामयी आयोजन किया गया। कार्यक्रम क्लब के अध्यक्ष आलोक द्विवेदी, महासचिव जेपी सिंह, सचिव जगदीश शर्मा, कोषाध्यक्ष मनोज वत्स, कार्यकारिणी सदस्य आंचल यादव, गिरीश नारायण मीडिया प्रभारी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें मीडिया क्लब की समस्त कार्यकारिणी,संरक्षक मंडल एवं पत्रकार सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन अरुणा त्यागी ने किया। इस अवसर पर मशहूर भजन गायिका बबीता शर्मा ने अपनी मधुर प्रस्तुतियों से पूरे वातावरण को भक्तिमय और आनंदमय बना दिया। उनके भजनों ने उपस्थित सभी लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया और कार्यक्रम को एक विशेष ऊंचाई प्रदान की। वक्ताओं ने अपने संबोधन में भारतीय संस्कृति, परंपराओं और विभिन्न त्योहारों के माध्यम से समाज में भाईचारे को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन सामाजिक एकता और सद्भाव को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े समाजसेवी और जनप्रतिनिधियों की भी गरिमामयी उपस्थिति रही, जिससे आयोजन की शोभा और अधिक बढ़ गई। सभी ने मिलकर आपसी सौहार्द, एकता और सामाजिक समरसता का संदेश दिया। कार्यक्रम का समापन आपसी मिलन, संवाद और जलपान के साथ हुआ, जहां सभी अतिथियों ने एक-दूसरे को हिन्दी नववर्ष की शुभकामनाएं दीं।

पुरस्कार वितरण समारोह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रकाश जीनियस खेल के मैदान में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय फाउंडर कप का हैमर बॉल प्रतियोगिता गोरखपुर आयोजन नेपाल में किया गया। हैमर बॉल संघ में बालक एवं बालिका सोनभद्र की टीम विजेता रही । जिसमें बालिका वर्ग ने प्रथम स्थान और बालक मे प्रथम स्थान प्राप्त किया।इस उपलब्धि पर जिला हैमर बॉल संघ के अध्यक्ष संतोष कुमार पांडे,कोषाध्यक्ष विनोद धर, उप कोषाध्यक्ष विनय कुमार श्रीवास्तव, उत्तर प्रदेश हैमर बाल संघ के हेड मुर्शिद जमाल, उत्तर प्रदेश सलेक्टर हैमर बाल राकेश केसरी, जिला हैमर बॉल संघ के सचिव दीपक कुमार श्रीवास्तव उपस्थित रहे।

रक्तदान कर दी शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि,शहीद दिवस की पूर्व संध्या पर थाना चोपन के परिसर में आयोजित हुआ स्वैक्षिक रक्तदान शिविर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। शहीद दिवस की पूर्व संध्या पर रविवार को उत्सव ट्रस्ट एवं थाना चोपन के संयुक तत्वावधान में थाना चोपन के परिसर में आयोजित स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में कुल 9 लोगों ने स्वैक्षिक रक्तदान कर शहीद भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की। जिले में पहली बार किसी थाना परिसर में आयोजित हुआ शैक्षिक रक्तदान शिविर। थाना चोपन से रक्तदान करने वालों में थानाध्यक्ष अखिलेश कुमार मिश्र, सिपाही राहुल यादव, एच0 एम0 बिंदुपाल सहित कुछ चोपन वासी रहे। रक्तदाननियों को रीफ्रेशमेंट व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ शहीदों को पुष्प अर्पण, दीप प्रज्वलन व श्रद्धांजलि अर्पित कर इंकलाब जिंदाबाद, भारत माता की जय, वंदे मातरम के उद्घोष के साथ फीता काट कर एवं सर्व प्रथम थानाध्यक्ष थाना चोपन अखिलेश कुमार मिश्र ने रक्तदान कर किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में थानाध्यक्ष थाना चोपन अखिलेश कुमार मिश्र, उत्सव ट्रस्ट के संरक्षक स्वामी अरविंद सिंह, निदेशक डॉ अजय शर्मा, कुंदन सिंह, मनीष तिवारी महंत काली मंदीर चोपन, संजय पाण्डेय एडवोकेट, श्रीश पाठक एवं उत्सव ट्रस्ट के ट्रस्टी आशीष कुमार पाठक के साथ ही ब्लड बैंक के चिकित्साधिकारी डॉक्टर शुभम जैश, काउंसलर रवींद्र प्रसाद, एलटी0 दिनेश मोदनवाल, अखिलेश सिंह, अनिल कुमार, व बी0सी0टी0वी0 वैन चालक साजन तिवारी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन उत्सव ट्रस्ट के ट्रस्टी आशीष कुमार पाठक ने किया।

22 मार्च को आयोजित कार्यक्रम में कुल 17 रजिस्ट्रेशन में 9 लोगों ने किया रक्तदान,उत्सव ट्रस्ट एवं थाना चोपन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ कार्यक्रम,थानाध्यक्ष थाना चोपन अखिलेश कुमार मिश्र ने सर्वप्रथम रक्तदान कर किया शिविर का शुभारंभ,जिले में पहली बार किसी थाना परिसर में आयोजित हुआ शैक्षिक रक्तदान शिविर

म्योरपुर में अधूरे आवासों पर प्रशासन सख्त,लाभार्थियों को नोटिस जारी

सोनभद्र। जिले के म्योरपुर विकासखंड की ग्राम पंचायत आरंग पानी में अधूरे आवास निर्माण को लेकर प्रशासन ने कड़ा रुख अपनाया है। ग्राम पंचायत अधिकारी अरुण कुमार उपाध्याय ने लाभार्थियों को नोटिस जारी कर निर्धारित समय-सीमा के भीतर आवास निर्माण पूरा करने के निर्देश दिए हैं। ऐसा न करने पर कानूनी कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई है। जानकारी के अनुसार, आरंग पानी ग्राम पंचायत में छह लाभार्थियों को मुख्यमंत्री आवास (ग्रामीण) और प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत आवास निर्माण के लिए पहली और दूसरी किस्त की धनराशि उनके बैंक खातों में भेजी गई थी। विभागीय अभिलेखों के मुताबिक, इन लाभार्थियों ने धनराशि निकाल ली है, लेकिन इसके बावजूद कई आवासों का निर्माण कार्य अधूरा पड़ा है। ग्राम पंचायत अधिकारी अरुण उपाध्याय ने बताया कि कई बार मौखिक रूप से अवगत कराने के बावजूद संबंधित लाभार्थियों ने निर्माण कार्य में कोई प्रगति नहीं की। इसे गंभीरता से लेते हुए अब लिखित नोटिस जारी कर चेतावनी दी गई है कि निर्धारित अवधि में आवास पूर्ण न होने पर इसे शासकीय धनराशि का दुरुपयोग माना जाएगा।प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि आदेश की अवहेलना करने वाले लाभार्थियों के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 409 के तहत प्राथमिकी दर्ज कराने के साथ ही धन वसूली की वैधानिक कार्यवाही की जाएगी। इस नोटिस की एक प्रतिलिपि खंड विकास अधिकारी म्योरपुर को भी आवश्यक कार्रवाई के लिए भेजी गई है।इस प्रशासनिक कार्रवाई के बाद क्षेत्र में लाभार्थियों से अपील की गई है कि वे अपने आवासों का निर्माण शीघ्र पूरा करें ताकि किसी भी कानूनी जटिलता से बचा जा सके।

भाजपा की नई जिला कार्यकारिणी का जोरदार स्वागत, सवेरा कंपाउंड में दिखा उत्साह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। भारतीय जनता पार्टी की जिला इकाई सोनभद्र की नई कार्यकारिणी की घोषणा के बाद कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल है। इसी क्रम में रॉबर्ट्सगंज स्थित सवेरा कंपाउंड में नवनियुक्त पदाधिकारियों का भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम में पार्टी कार्यकर्ताओं ने फूल-मालाओं के साथ नई टीम का अभिनंदन करते हुए संगठन को और मजबूत बनाने का संकल्प लिया। प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी, प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह एवं काशी क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष दिलीप सिंह पटेल की संस्तुति पर जिलाध्यक्ष नन्दलाल के नेतृत्व में नई कार्यकारिणी घोषित की गई है। इसमें कई नए चेहरों को अवसर दिया गया है, जिससे संगठन में नई ऊर्जा का संचार हुआ है। नई कार्यकारिणी में 8 जिला उपाध्यक्ष, 3 जिला महामंत्री और 8 जिला मंत्री बनाए गए हैं। जिला उपाध्यक्ष के रूप में शंभूनारायण सिंह, बृजेश कुमार श्रीवास्तव, महेश्वर चन्द्रवंशी, अमरेश पटेल, विशाल पाण्डेय, मनोज कुमार मिश्रा, सरजू बैसवार और अजीत रावत को जिम्मेदारी सौंपी गई है। वहीं अशोक कुमार मौर्य, संतोष कुमार शुक्ला और शारदा खरवार को जिला महामंत्री बनाया गया है। जिला मंत्री पद पर प्रसन्न पटेल, मनोज सोनकर, प्रमिला जायसवाल, मंजू गिरी, अनिल कुमार सिंह, मनोज कुमार सिंह (बबलू), सुषमा गोंड़ और मणिकर्णिका कोल को नियुक्त किया गया है। इसके अलावा आकाश जायसवाल को जिला कोषाध्यक्ष, अमित गोयल को सह कोषाध्यक्ष, कैलास त्रिपाठी को जिला कार्यालय प्रभारी तथा बलराम सोनी को जिला कार्यालय मंत्री बनाया गया है। रजनीश रघुवंशी को जिला मीडिया प्रभारी और अमन मौर्य को सह मीडिया प्रभारी की जिम्मेदारी दी गई है। सोशल मीडिया एवं आईटी प्रबंधन के लिए मनोज सिंह को जिला संयोजक (सोशल), लवकुश केशरी को जिला संयोजक (आईटी) तथा विवेक सिंह तोमर को सह संयोजक (आईटी/सोशल) नियुक्त किया गया है। कार्यकारिणी में सामाजिक संतुलन का भी विशेष ध्यान रखते हुए 17 विभिन्न जातियों को प्रतिनिधित्व दिया गया है। इसके साथ ही जयप्रकाश चतुर्वेदी, रामशकल, नरेन्द्र कुशवाहा, रुबी प्रसाद, तिरथराज, अरुण प्रताप सिंह, रमेश मिश्रा, ओंकार केशरी, धर्मवीर तिवारी, अशोक मिश्रा, अजीत चौबे, श्रवण सिंह गोंड, रामनरेश पासवान, रामलखन सिंह, नागेश्वर पाण्डेय, डॉ. गोपाल सिंह और देवेन्द्र पटेल को विशेष आमंत्रित सदस्य बनाया गया है, जबकि 62 जिला कार्यसमिति सदस्यों की भी घोषणा की गई है। स्वागत समारोह में वक्ताओं ने कहा कि नई टीम संगठन को नई दिशा और गति देगी तथा आने वाले समय में पार्टी को और सशक्त बनाएगी। कार्यक्रम के दौरान कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह और एकजुटता देखने को मिली।

हर कदम पर संवेदना, हर पल सुरक्षा-पुलिस का मानवीय स्वरूप,महिला को सुरक्षित परिजनों से मिलाया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पीआरवी 6070 थाना रॉबर्ट्सगंज पर सूचना प्राप्त हुई कि मेडिकल कॉलेज/पुलिस लाइन के पास एक अज्ञात महिला अकेली एवं असहाय अवस्था में मिली है। सूचना को गंभीरता से लेते हुए पीआरवी 6070 तत्काल मौके पर पहुंची तथा महिला की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए उससे नाम, पता एवं परिजनों के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई। पूछताछ के दौरान महिला द्वारा अपना नाम सुकुमारी पुत्री रामजी मौर्य, निवासी ग्राम विसुंधरी, थाना रॉबर्ट्सगंज, जनपद सोनभद्र बताया गया। महिला की स्थिति को ध्यान में रखते हुए पीआरवी टीम द्वारा अत्यंत संवेदनशीलता, धैर्य एवं मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए उसके बताए पते का सत्यापन किया गया। तत्पश्चात पीआरवी टीम द्वारा बिना किसी विलंब के महिला को सकुशल उसके घर ग्राम विसुंधरी पहुंचाया गया, जहां उसकी माता सुशीला देवी एवं भाई की उपस्थिति में उसे सुरक्षित सुपुर्द किया गया। परिजनों से पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि उक्त महिला लगभग 20 दिनों से लापता थी, जिसकी तलाश परिजन लगातार कर रहे थे। महिला को सकुशल पाकर परिजनों द्वारा राहत व्यक्त की गई तथा पुलिस टीम के प्रति आभार प्रकट किया गया। इस सराहनीय एवं मानवीय कार्य में पीआरवी 6070 पर तैनात पुलिस टीम मे कांस्टेबल आलोक कुमार, महिला कांस्टेबल शालिनी शुक्ला,महिला कांस्टेबल प्रतिमा कुमारी, एचजी चालक मनोज पांडेय की विशेष भूमिका रही।

वैज्ञानिकों ने किसानों को दी आधुनिक खेती की जानकारी

सोनभद्र। म्योरपुर ब्लॉक के ग्राम पंचायत बभनडीहा स्थित सामुदायिक परिसर में सोमवार को कृषि संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से जुड़े कृषि वैज्ञानिकों ने इसमें किसानों को आधुनिक खेती की जानकारी दी। यह कार्यक्रम बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के कृषि वैज्ञानिक डॉ. रामस्वरूप मीणा के निर्देशन में संपन्न हुआ।संगोष्ठी में बभनडीहा, भलूही और बलियरी के आदिवासी बहुल क्षेत्रों के किसानों और महिला समूहों को मक्का तथा उड़द के बीज वितरित किए गए। उन्हें आधुनिक एवं जैविक खेती के प्रति जागरूक किया गया। वैज्ञानिकों ने बताया कि मिश्रित खेती और जैविक पद्धति अपनाकर किसान आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकते हैं।मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख मान सिंह गोंड़ ने कहा कि इस दूरस्थ आदिवासी क्षेत्र में ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन कम होता है। उन्होंने जल संकट का जिक्र करते हुए कहा कि यहां के किसान इस समस्या से जूझते हैं, इसलिए जल संरक्षण और सामूहिक खेती पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।विशिष्ट अतिथि डॉ. अभिलाष ने कम पानी वाली खेती पर जोर दिया। लोगों को खाली पड़ी भूमि पर इमारती पौधे लगाने की सलाह दी और स्थानीय वन विभाग के सहयोग से उपयुक्त प्रजातियों के चयन और पत्तियों से जैविक खाद बनाने की बात कही। बीएचयू के औषधीय वैज्ञानिक डॉ. दिनेश ने किसानों को वर्षा जल संचयन, मौसम आधारित खेती और औषधीय पौधों की खेती अपनाने की सलाह दी, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सकती है। कार्यक्रम के मुख्य आयोजक डॉ. रामस्वरूप मीणा ने मक्का और उड़द की बुवाई से लेकर भंडारण तक की विस्तृत जानकारी प्रदान की।कार्यक्रम में बीएचयू के शोध छात्र संजीव कुमार (पीएचडी) और मास्टर्स छात्र आजाद ने भी अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर ग्राम प्रधान संत कुमार, उमेश कुमार सहित क्षेत्र के लगभग 120 किसान उपस्थित थे।

सुभासपा की बैठक सिंचाई डाक बंगला हुई संपन्न

आगामी त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव पर हुई चर्चा,संगठन विस्तार पर जोर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सोनभद्र सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी की मासिक बैठक राबर्ट्सगंज के सिंचाई डाक बंगला में संपन्न हुई कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष सोनभद्र मनोज देव पाण्डे ने की बैठक के मुख्य अतिथि प्रदेश संगठन मंत्री व मंडल प्रभारी विंध्याचल राजेंद्र पटेल रहे विशिष्ट अतिथि विंध्याचल मंडल प्रमुख महासचिव विकास प्रजापति रहे। बैठक में आगामी त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव पर विशेष रूप से चर्चा हुई और संगठन विस्तार पर भी जोर दिया गया बैठक को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष मनोज देव पांण्डे ने कहा कि सभी कार्यकर्ता संगठन विस्तार और त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने का आवाहन किया गांव गांव में जन चौपाल लगाए पार्टी की नीतियों व सरकारी योजनाओं को जनता से बताएं और पत्र व्यक्ति को लाभ दिलवाएं। मुख्य अतिथि राजेंद्र पटेल ने कार्यकर्ताओं में उत्साह भरते हुए त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में भाग लेने के लिए प्रेरित किया और फ्रांटल के सभी पदाधिकारियों को अपनी कार्यकारणी जल्द से जल्द गठित करने का निर्देश दिया और सरकार द्वारा चलाई जा रही सरकारी योजनाओं सुभासपा की नीतियों को जनता को बताएं और पार्टी से जुड़ने के लिए प्रेरित करें साथ ही मुख्य अतिथि राजेंद्र पटेल ने कहा कि पार्टी पंचायत चुनाव में पूरी मजबूती के साथ चुनाव लड़ेगी पार्टी कार्यकर्ता ही पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी होंगे। बैठक में कुछ पुराने पदाधिकारियों को प्रमोट किया गया जिसमे पूर्व में जिला महासचिव के पद पर रहे सत्यनारायण मौर्या को जिला मीडिया प्रभारी बनाया गया , महासचिव,सुरेंद्र सोनी जिला उपाध्यक्ष विजेंदर मिश्रा जिला महासचिव,विजय चौहान जिला सचिव बनाया गया। बैठक में मुख्य रूप से महिला फ्रंटल की जिलाध्यक्ष सोनमती,मंजू देवी, पुष्पा,बेबी,अरुण कुमार पासवान,लालबहादुर,अजय कुमार, राजकुमार,शेष मड़ी, अनुराग बियार,अनिल कुमार सिंह,राजू आदि लोग उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मिले एससी एसटी आयोग के उपाध्यक्ष

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आयोग के उपाध्यक्ष जीत सिंह खरवार ने लखनऊ मे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। उन्होंने सोनभद्र जनपद की समस्याओं के सिलसिले में पत्र सौंपा। खरवार ने अपने पत्र में जनपद सोनभद्र के कनहर विस्थापितों के प्रमुख मुद्दों को उठाया, जिसमें ग्रामीणों का आय, जाति, निवास प्रमाण पत्र जारी न होना शामिल है। इसके अलावा, बरसात के मौसम में बिजली गिरने से जनहानि को रोकने के लिए तड़ित चालक यंत्र लगवाने की मांग की। मुख्यमंत्री ने उनकी समस्याओं को सुना और जल्द से जल्द समाधान का आश्वासन दिया। इस अवसर पर आयोग के अन्य सदस्य भी मौजूद रहे। अगर आपको और जानकारी चाहिए, तो आप ऑनलाइन सर्च कर सकते हैं।

रेणुकूट ईएसआई में डेंटल ओपीडी शुरू,स्थानीय स्तर पर मिलेगा दांतों का इलाज

सोनभद्र। रेणुकूट स्थित ईएसआई अस्पताल में सोमवार से डेंटल ओपीडी की शुरुआत हो गई है। इस नई सुविधा से क्षेत्र के श्रमिकों और औद्योगिक कर्मचारियों को अब दांतों के इलाज के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा। उन्हें स्थानीय स्तर पर ही बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध होगी। नगर पंचायत अध्यक्ष ममता सिंह ने फीता काटकर डेंटल ओपीडी का उद्घाटन किया। अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. आशुतोष दत्त त्रिपाठी ने बताया कि डेंटल सेवाएं शुरू होने से मरीजों को समय पर उपचार मिल पाएगा और इलाज में होने वाली देरी से भी राहत मिलेगी। यह उल्लेखनीय है कि अस्पताल में डेंटल मशीन लगभग 20 वर्षों से उपलब्ध थी। हालांकि, दंत चिकित्सक की तैनाती न होने के कारण अब तक डेंटल ओपीडी का संचालन नहीं हो पा रहा था। कुछ वर्ष पूर्व बिड़ला मार्केट स्थित डिस्पेंसरी में तैनात प्रभारी चिकित्सक डॉ. ऋषिमणि त्रिपाठी के पास एमबीबीएस के साथ बीडीएस की भी डिग्री है। उनकी योग्यता को देखते हुए डॉ. आशुतोष दत्त त्रिपाठी ने शासन से पत्राचार कर डेंटल यूनिट संचालन की अनुमति प्राप्त की, जिसके बाद यह सुविधा शुरू हो सकी। निगम के निदेशक डॉ. सौम्य पांडेय ने वर्चुअल माध्यम से डेंटल ओपीडी के शुभारंभ पर अपनी शुभकामनाएं दीं। उन्होंने ओपीडी संचालन की अनुमति दिलाने के लिए हुए पत्राचार में सक्रिय भूमिका निभाई, जिससे यह सुविधा जल्द शुरू हो पाई। इस अवसर पर डॉ. आनंद पटेल, अनिल सिंह, डॉ. ऋषिमणि त्रिपाठी, डॉ. अखिलानंद मिश्र सहित बड़ी संख्या में स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

सरकार के 9 वर्ष पूरे,उपलब्धियों पर संगोष्ठी और प्रदर्शनी का आयोजन

सोनभद्र। नगवां ब्लॉक सभागार में सोमवार को उत्तर प्रदेश सरकार के नौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक क्षेत्रीय संगोष्ठी और प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सरकार की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया। संगोष्ठी का शुभारंभ नगवां के ब्लॉक प्रमुख आलोक सिंह और खंड विकास अधिकारी अनिल सिंह ने किया। इसमें बेसिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन और बाल विकास परियोजना विभाग, नगवां खंड सहित विभिन्न विभागों द्वारा प्रदर्शनी के लिए स्टॉल लगाए गए। ब्लॉक प्रमुख आलोक सिंह ने उत्तर प्रदेश सरकार के विकास और सतत समृद्धि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सामाजिक कल्याण और विकास की योजनाएं नगवां के दूरदराज के ग्रामीण अंचलों तक पहुंचाई जा रही हैं। उन्होंने बताया कि ग्रामीणजन सरकार की अनेक योजनाओं से लगातार लाभान्वित हो रहे हैं। प्रदर्शनी में बेसिक शिक्षा विभाग की ओर से मेघा सौनकिया, रविकांत मौर्य और संजय जायसवाल ने अपनी शिक्षण सामग्री का प्रदर्शन किया। बाल विकास परियोजना से आंगनवाड़ी कार्यकर्ता अनुराधा सिंह, इंद्रावती, इंदु देवी और पूजा सिंह ने भाग लिया, जबकि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से गीता, पूनम और सुनीता ने आजीविका मिशन के उत्पादों को प्रदर्शित किया। इस अवसर पर देवी सिंह, महेश पटेल, पन्नालाल, प्रशांत सिंह, रमाकांत, चंद्रभान सिंह और ब्लॉक के अन्य कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

हाई हील्स से टेढ़े हो सकते हैं पैर,दुनिया के 23फीसदी लोगों को बूनियन डिजीज

नयी दिल्ली। बूनियन पैरों की एक कॉमन समस्या है, जिसमें पैर के अंगूठे के पास हड्डी जैसा उभार आ जाता है। अंगूठा उंगलियों की तरफ मुड़ जाता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, पूरी दुनिया में लगभग 23फीसदी एडल्ट्स को यह समस्या है। महिलाओं में यह खतरा पुरुषों की अपेक्षा 2 से 10 गुना ज्यादा होता है। टाइट और पॉइंटेड शूज, खासकर हाई हील्स पहनने से पैरों पर दबाव पड़ता है। अगर समय पर ध्यान न दिया जाए, तो यह दर्दनाक हो सकता है। चलने में तकलीफ, जूते पहनने में परेशानी और यहां तक कि आस्टियोआर्थराइटिस भी हो सकता है। बूनियन कोई नई समस्या नहीं है। यह जेनेटिक कारणों से भी हो सकता है या फिर गलत जूते-चप्पल पहनने से हो सकता है। हालांकि, सही जूते चुनकर, एक्सरसाइज करके और डॉक्टर की सलाह से इसे मैनेज किया जा सकता है। आज बूनियन डिजीज के बारे में बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- बूनियन क्या है और इसे कैसे पहचानें? यह क्यों होता है और इसके खतरे क्या हैं? इसे कैसे मैनेज करें और कैसे इलाज करें? बूनियन क्या है? बूनियन पैर के बड़े अंगूठे के जोड़ पर होने वाला एक उभार है। यह हड्डी की गांठ जैसा बन जाता है, जो पैर के अंदर की तरफ बढ़ता है। मेडिसिन की भाषा में इसे हेलक्स वैल्गस भी कहते हैं। अंगूठे पर बूनियन सबसे कॉमन है। इसमें अंगूठे के आधार पर उभार हो जाता है। हालांकि, बूनियन सिर्फ अंगूठे में नहीं, छोटी उंगली में भी हो सकता है। यह जन्म से, टीनएज में या उम्र बढ़ने पर धीरे-धीरे विकसित होता है। बूनियनेटः छोटी उंगली के आधार पर, टाइट जूतों से। कॉन्जेनाइटल बूनियनः जन्म से ही बच्चों में।जुवेनाइल बूनियनः 18 साल से कम उम्र में। बूनियन को कैसे पहचानेंगे? बूनियन की शुरुआत धीमी होती है। पहले तो बस हल्का उभार नजर आता है, लेकिन धीरे-धीरे दर्द बढ़ता जाता है। अगर आपका बड़ा अंगूठा दूसरी उंगलियों की तरफ मुड़ रहा है, या जूते पहनने पर रगड़ लगती है, तो सावधान हो जाएं। कई लोग सोचते हैं कि यह बस थकान है, लेकिन असल में यह बूनियन का संकेत हो सकता है। लक्षणों को

इग्नोर न करें, क्योंकि समय के साथ यह बदतर हो जाता है। चलने में लंगड़ाहट आ सकती है, या पैर सुन्न पड़ सकते हैं। महिलाएं ज्यादा प्रभावित होती हैं, क्योंकि फैशन के चक्कर में वे असुविधाजनक जूते चुनती हैं। एक दोस्त ने बताया कि उसकी मां को हाई हील्स की वजह से इतना दर्द हुआ कि वे घर पर भी चप्पल नहीं पहन पाती थीं। बूनियन कोई एक वजह से नहीं होता। कई फैक्टर मिलकर इसे ट्रिगर करते हैं। सबसे बड़ी वजह है गलत जूते। हाई हील्स या नुकीले टिप वाले शूज पैरों पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं, जिससे अंगूठा अपनी जगह से हट जाता है। जेनेटिक्स भी रोल प्ले करता है- अगर परिवार में किसी को है, तो आपको भी हो सकता है। इसके अलावा, पैर की बनावट, जैसे फ्लैट फुट या हाई आर्च, खतरा बढ़ाते हैं। गठिया जैसी बीमारियां, चोट लगना या ज्यादा देर खड़े रहना भी कारण बन सकता है। महिलाओं में हॉर्मोनल बदलाव, जैसे प्रेग्नेंसी, इसे और खराब कर देते हैं। एक स्टडी कहती है कि 70इ से ज्यादा मामलों में फैमिली हिस्ट्री जुड़ी होती है। सो, अगर आपका वजन ज्यादा है या काम ऐसा है कि पैरों पर जोर पड़ता है, तो सतर्क रहें। अगर बूनियन का इलाज न किया जाए, तो यह सिर्फ दर्द तक सीमित नहीं रहता। यह बर्साइटिस का कारण बन सकता है, जिसमें जोड़ों के आसपास सूजन आ जाती है। हैमर-टो की समस्या हो सकती है, जहां उंगलियां मुड़ जाती हैं। लंबे समय में आस्टियोआर्थराइटिस हो सकता है, जो जोड़ों को कमजोर कर देता है। चलना-फिरना मुश्किल हो जाता है, और रोजमर्रा के काम प्रभावित होते हैं। कुछ मामलों में पैर सुन्न पड़ जाते हैं या इन्फेक्शन का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए, शुरू में ही डॉक्टर से मिलें। मेरी सलाह है कि दर्द को नजरअंदाज न करें, क्योंकि बाद में सर्जरी की नौबत आ सकती है। डॉक्टर पहले पैर की जांच करते हैं। वे उभार देखते हैं, दर्द पूछते हैं और चलने का तरीका चेक करते हैं। अगर जरूरी हो, तो एक्स-रे करवाते हैं, जो हड्डियों की एलाइन्मेंट दिखाता है। किसी पोडियाट्रिस्ट से मिलना अच्छा रहता है। वे बताते हैं कि समस्या कितनी गंभीर है। ज्यादातर मामलों में सर्जरी की जरूरत नहीं पड़ती है। शुरू में लाइफस्टाइल बदलाव से ही कंट्रोल हो जाता है। सबसे पहले जूते बदलें- चौड़े और आरामदायक शूज चुनें, जिनमें टो बॉक्स बड़ा हो। बूनियन पैड्स या टेपिंग से दबाव कम करें। दर्द कम करने के लिए डॉक्टर से पूछकर पेन किलर ले सकते हैं। बर्फ से सिंकाई करें, इससे सूजन कम होती है। ऑर्थोटिक्स (शू इंसर्ट) पैरों को सपोर्ट देते हैं। फिजिकल थेरेपी से एक्सरसाइज सीखें, जो पैरों को मजबूत बनाती हैं। अगर दर्द बहुत ज्यादा है, तो कोरटीकोस्टरॉयड इंजेक्शन लगवाएं। अगर ये सब काम न करें, तो सर्जरी ऑप्शन हो सकता है। इसमें हड्डी को सही जगह पर लाया जाता है। सर्जरी के बाद 2-3 महीने में नॉर्मल लाइफ पर लौट सकते हैं। लेकिन सर्जरी आखिरी विकल्प है। प्रिवेंशन इलाज से बेहतर है। सही जूते चुनें- नुकीले या टाइट वाले अवॉइड करें। दिन के अंत में जूते ट्राई करें, क्योंकि पैर थोड़े सूज जाते हैं। अगर पैरों में कोई समस्या है, जैसे फ्लैट फुट, तो ऑर्थोटिक्स यूज करें। वजन कंट्रोल में रखें, क्योंकि एक्स्ट्रा वेट पैरों पर दबाव डालता है। रोज पैरों की एक्सरसाइज करें, जैसे अंगूठे को स्ट्रेच करना। महिलाएं हाई हील्स कम पहनें, और अगर पहनें तो ज्यादा देर न रहें। बच्चों में अगर संकेत दिखें, तो जल्दी डॉक्टर दिखाएं। सवालः क्या बूनियन अपने आप ठीक हो सकता है? जवाबः नहीं, बूनियन खुद से नहीं जाता। लेकिन सही मैनेजमेंट से लक्षण कंट्रोल हो सकते हैं। डॉक्टर से मिलें। सवालः महिलाओं को यह समस्या ज्यादा क्यों होती है? जवाबः महिलाएं हाई हील्स और टाइट शूज ज्यादा पहनती हैं, जो पैरों पर दबाव डालते हैं। हॉर्मोनल बदलाव भी रोल प्ले करते हैं। सवालः सर्जरी कब जरूरी होती है? जवाबः जब दर्द बहुत ज्यादा हो, चलना मुश्किल हो या अन्य तरीके काम न करें। डॉक्टर तय करेंगे। सवालः बूनियन से बचने के लिए क्या करें?जवाबः आरामदायक जूते पहनें, वजन कंट्रोल रखें, पैरों को रेस्ट दें और एक्सरसाइज करें। अगर फैमिली हिस्ट्री है, तो रेगुलर चेकअप करवाएं। बूनियन कोई बड़ी बीमारी नहीं, लेकिन इग्नोर करने से परेशानी बढ़ सकती है। सही जानकारी और छोटे बदलाव से इसे मैनेज कर सकते हैं। अगर लक्षण दिखें, तो डॉक्टर से बात करें। पैरों की सेहत अच्छी रखें, क्योंकि ये हमें हर कदम पर साथ देते हैं।

नेमार का वर्ल्ड कप खेलने का सपना लगभग खत्म,ब्राजील फुटबॉल फेडरेशन के साथ विवाद गहराया,फिटनेस पर भी सवाल

नयी दिल्ली। नेमार का 2026 वर्ल्ड कप खेलने का सपना लगभग

खत्मः ब्राजील फुटबॉल फेडरेशन के साथ विवाद गहराया; अनसेलोटी से भी नहीं मिले, फिटनेस पर भी सवाल नेमार जूनियर के 2026 फीफा वर्ल्ड कप में खेलने की उम्मीदें अब लगभग खत्म होती नजर आ रही हैं। नेमार ने पहले संकेत दिए थे कि यह उनका आखिरी वर्ल्ड कप हो सकता है, लेकिन ब्राजील फुटबॉल फेडरेशन (सीबीएफ) के साथ बढ़ते तनाव को देखते हुए ऐसा संभव होता नहीं दिख रहा है। सीएनएन ब्राजील की रिपोर्ट के अनुसार,सीबीएफ के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि नेमार का टीम में चयन अब 'अत्यंत जटिल' हो गया है और यह लगभग नामुमकिन सा लगता है। वार्म-अप मैचों से बाहर, वीडियो में जताई निराशा कुछ दिन पहले ही ब्राजील कोच कार्लो एंसेलॉटी ने आगामी वर्ल्ड कप वार्म-अप मैचों (फ्रांस और क्रोएशिया के खिलाफ) के लिए टीम घोषित की, जिसमें नेमार का नाम नहीं था। नेमार ने साओ पाउलो में एक इवेंट पर कहा कि वे डिसअपॉइंटेड और सैड हैं। उन्होंने एक वीडियो जारी कर अपनी फिटनेस पर काम करने और टीम में वापसी की इच्छा जताई। लेकिन सीबीएफ के अंदर

ये रिएक्शन अच्छा नहीं लिया गया। हाल ही में एक ऐसी घटना हुई जिसने नेमार की टीम में वापसी के रास्ते लगभग बंद कर दिए। ब्राजील के हेड कोच कार्लो अनसेलोटी विशेष रूप से नेमार का खेल देखने के लिए सांतोस एफसी और मिरासोल के बीच मैच देखने पहुंचे थे। अनसेलोटी ने इसके लिए प्राइवेट जेट लिया और आखिरी समय में यात्रा की ताकि वे नेमार की फिटनेस का आकलन कर सकें। हालांकि, नेमार उस मैच में 'वर्कलोड मैनेजमेंट'का हवाला देकर नहीं खेले। इतना ही नहीं, उन्होंने कोच से मिलने या उनसे बात करने की भी कोई कोशिश नहीं की। बोर्ड इसे अनुशासनहीनता और कमिटमेंट की कमी मान रहा है। नेमार की फिटनेस लंबे समय से टीम के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। सांतोस एफसी के लिए खेलते हुए भी वे लगातार चोटिल रहे हैं और मैदान पर कम ही नजर आए हैं। 2023 में घुटने की गंभीर चोट के बाद से वे नियमित रूप से मैच नहीं खेल पा रहे हैं। सीबीएफ के अधिकारियों का मानना है कि इंटरनेशनल स्तर के बड़े टूर्नामेंट के लिए जिस मैच फिटनेस की जरूरत होती है, नेमार फिलहाल उसके करीब भी नहीं हैं। बार-बार लगने वाली चोटों के कारण बोर्ड का भरोसा भी उन पर कुछ कम हुआ है। ब्राजील के कोच कार्लो अनसेलोटी ने हाल ही में प्रेस कॉन्फ्रेंस में साफ कहा कि नेमार वर्ल्ड कप टीम का हिस्सा बन सकते हैं, लेकिन इसके लिए उनका 100फीसदी फिट होना जरूरी है। फिलहाल वे पूरी तरह फिट नहीं हैं, इसलिए उन्हें टीम में शामिल नहीं किया गया है। अनसेलोटी ने यह भी कहा कि नेमार को ट्रेनिंग और मैच खेलकर अपनी फिटनेस और प्रदर्शन के जरिए खुद को साबित करना होगा। क्या अब भी है वापसी की कोई उम्मीद? हालांकि नेमार के पास अभी सांतोस के लिए इस सीजन में कुछ मैच बचे हैं, जहाँ वे अपनी फॉर्म और फिटनेस साबित कर सकते हैं। लेकिन फेडरेशन के भीतर चल रही चर्चाओं को देखें तो उनकी वापसी किसी चमत्कार से कम नहीं होगी। जानकारों का कहना है कि कोच और फेडरेशन अब युवा खिलाड़ियों पर फोकस कर रहे हैं और नेमार के व्यवहार ने उनकी स्थिति और खराब कर दी है। 34 साल के नेमार ब्राजील के ऑल-टाइम टॉप स्कोरर हैं (79 गोल), लेकिन इंजरी ने उनकी करियर को प्रभावित किया है।

गुड हैबिट्स- भोजन में ढेर सारी सब्जियां खाने की आदतःसब्जी खाने से दिमाग होता तेज, बढ़ती उम्र, कब्ज, अपच, बीमारियां दूर रहती हैं

नयी दिल्ली। दुनिया में 5 ब्लू जोन हैं। यहां के लोगों की औसत उम्र 100 साल से ज्यादा है। ये लोग लंबे जीवन के लिए 9 नियम

अपनाते हैं। उनमें सबसे खास है कि प्लांट बेस्ड खाना ही खाएंगे। ऐसी सभी चीजें खाएंगे, जो पेड़-पौधों के रूप में प्रकृति ने हमें दी हैं। ये खाने में ज्यादा-से-ज्यादा सब्जियां शामिल करते हैं। इसमें कोशिश ये होती है कि जितने ज्यादा रंगों की सब्जियां खाने में शामिल कर सकें। सब्जियां विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर से भरपूर होती हैं। इनसे मिले न्यूट्रिएंट्स से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है और डाइजेस्टिव सिस्टम बेहतर होता है। इससे हार्ट डिजीज, स्ट्रोक और टाइप-2 डायबिटीज जैसी क्रॉनिक बीमारियों का जोखिम कम हो जाता है। खास बात ये है कि इनमें कैलोरी और फाइबर कम होता है। आज 'गुड हैबिट्स' कॉलम में ज्यादा सब्जियां खाने की आदत के बारे में जानेंगे। साथ ही जानेंगे कि- खाने में सब्जियां ज्यादा क्यों होनी चाहिए? ज्यादा

सब्जियां खाने के क्या फायदे हैं? सब्जियां क्यों हैं इतनी खास? सब्जियां हमारे शरीर के लिए एक सुपरफूड की तरह हैं। इनमें विटामिन्स, मिनरल्स, फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जो हमें अंदर से मजबूत बनाते हैं। लेकिन ऐसा क्या है जो इन्हें इतना जरूरी बनाता है? विटामिन और मिनरल्स का खजाना- फल और सब्जियां विटामिन ए,सी,ई और मिनरल्स जैसे मैग्नीशियम, जिंक, फॉस्फोरस और फोलिक एसिड से भरपूर होती हैं। पोटेशियम के लिए एवोकाडो, शकरकंद, केला, आलूबुखारा और टोमैटो प्यूरी खाएं। स्वाद और टेक्सचर की ढेरों वैरायटी- हर फल और सब्जी का स्वाद और बनावट अलग होती है। आप चाहें तो तीखे स्वाद वाले प्याज, जैतून और मिर्च ट्राई करें या फिर हल्के स्वाद वाले मशरूम और कॉर्न। मीठा खाने का मन हो तो अंगूर, अनन्नास और आलूबुखारा खाएं और खट्टे स्वाद के लिए नींबू और चकोतरा बढ़िया हैं। फाइबर से भरपूर- अधिकतर फल और सब्जियां फाइबर से भरपूर होते हैं, जो पेट भरने और पाचन को दुरुस्त रखने में मदद करते हैं। ज्यादा फाइबर वाली सब्जियां हैं- मटर, ब्रोकली और फूलगोभी। फाइबर वाले फल हैं- रसभरी, नाशपाती और सेब। कम कैलोरी, कम फैट- अमूमन फल और सब्जियां कम कैलोरी और फैट वाली होती हैं, इसलिए इन्हें ज्यादा मात्रा में खा सकते हैं बिना वजन बढ़ने की चिंता के। उदाहरण के तौर पर, आधा कप अंगूर खाने से आप एक चौथाई कप के मुकाबले 200 से ज्यादा कैलोरी बचा सकते हैं। हां, एवोकाडो, जैतून और नारियल जैसे कुछ अपवाद भी हैं जिनमें थोड़ा ज्यादा फैट होता है। बीमारियों से बचाव- फल और सब्जियों में कुछ खास प्राकृतिक तत्व फाइटोकेमिकल्स होते हैं जो कई बीमारियों से बचाव करते हैं। इन्हें खाने से डायबिटीज टाइप 2, हार्ट अटैक, स्ट्रोक, हाई ब्लड प्रेशर और कैंसर का खतरा कम हो सकता है। खासकर ब्रोकली, पत्ता गोभी, सरसों और जलकुंभी जैसी क्रूसीफेरस सब्जियां कैंसर से बचाव में मददगार मानी जाती हैं। अच्छी सेहत में मददगार- इनमें सैचुरेटेड फैट, नमक और चीनी बहुत कम होती है, इसलिए ये बैलेंस्ड डाइट का हिस्सा बनती हैं। ये वजन कम करने या बढ़ने से बचाने में मदद करती हैं। साथ ही सूजन कम करने, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रेशर घटाने में भी असरदार हैं। बहुत कम सोडियम और कोलेस्ट्रॉल- ताजे फल और सब्जियों में सोडियम बहुत कम होता है। जैसे बहुत लोग मानते हैं कि सेलरी में सोडियम ज्यादा होता है, लेकिन एक डंठल में सिर्फ 30 मिलीग्राम होता है, जो सिर्फ 1फीसदी डेली वैल्यू है। सब्जियां कैसे खाएं? अब सवाल यह है कि सब्जियों को अपनी रोज की डाइट में कैसे शामिल करें। बहुत से लोग सोचते हैं कि सब्जियां

खाना बोरिंग है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। कुछ आसान तरीके हैं-सब्जियों को सलाद बनाएंः पालक, टमाटर, खीरा और गाजर को मिलाकर एक रंग-बिरंगा सलाद तैयार करें। थोड़ा नींबू और नमक डालें, मजा दोगुना हो जाएगा। सूप में डालकर खाएंः ठंड के दिनों में सब्जियों का सूप बनाएं। गाजर, मटर और ब्रोकली डालकर इसे सेहतमंद और स्वादिष्ट बनाएं। भूनकर खाएंः आलू, शिमला मिर्च और बैंगन को हल्का तेल लगाकर भून लें। यह नाश्ते के लिए भी बढ़िया है। स्मूदी ट्राई करेंः पालक या चुकंदर को फलों के साथ ब्लेंड करें। यह पीने में आसान और पोषण से भरपूर होता है। दाल में मिलाकर खाएंः अपनी रोज की दाल में थोड़ी सी सब्जियां डालें, जैसे लौकी या पालक। स्वाद और सेहत दोनों बेहतर होते हैं। सब्जियां खाने के फायदे - सब्जियां खाने से हमारे शरीर को ढेर सारे फायदे मिलते हैं। इसके कुछ खास फायदे हो सकते हैं- पेट की सेहत बेहतर रहती है सब्जियों में फाइबर भरपूर मात्रा में होता है, जो पाचन तंत्र को दुरुस्त रखता है और कब्ज की समस्या नहीं होने देता। बीमारियों से बचाव होता है सब्जियों में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर की कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं और इम्यून सिस्टम को मजबूत करते हैं। वजन कंट्रोल में रहता है सब्जियां कैलोरी में कम और पोषण में ज्यादा होती हैं, जिससे वजन बढ़ने का खतरा नहीं रहता और शरीर फिट रहता है। दिमाग की कार्यक्षमता बढ़ती है हरी सब्जियों में पाए जाने वाले विटामिन्स और मिनरल्स मस्तिष्क को सक्रिय रखते हैं और याददाश्त बेहतर बनाते हैं। त्वचा निखरती है- विटामिन ए और सी से भरपूर सब्जियां त्वचा को स्वस्थ, चमकदार और जवां बनाए रखने में मदद करती हैं। हर दिन कम से कम 2-3 कटोरी सब्जियां खानी चाहिए। इससे न सिर्फ शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि आपका मूड भी अच्छा रहता है। सब्जियां न खाने का नुकसान- अगर सब्जियां नहीं खाते, तो शरीर को जरूरी तत्व नहीं मिलते। इम्यूनिटी कमजोर होती है, पेट खराब रहता है और वजन बढ़ने का खतरा रहता है। लंबे समय तक ऐसा चला तो डायबिटीज और हार्ट की बीमारियां भी हो सकती हैं। आपके शरीर को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है- पाचन की दिक्कतः फाइबर की कमी से पेट खराब रहता है। कमजोरीः विटामिन्स न मिलने से थकान जल्दी होती है। बीमारियों का खतराः दिल और डायबिटीज जैसी बीमारियां बढ़ सकती हैं। वजन बढ़ता हैः सब्जियों की जगह जंक फूड खाने से मोटापा हो सकता है। सब्जियों को खाने में कैसे शामिल करें? सब्जियां खाना कोई मुश्किल काम नहीं है। बस थोड़ा सा दिमाग लगाएं और ये आपकी जिंदगी का हिस्सा बन जाएंगी। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। पहले मुझे पालक और भिंडी बिल्कुल पसंद नहीं थे। कुछ आसान तरीके आजमाएं और अब मेरी थाली में हर दिन कोई न कोई सब्जी जरूर होती है। सब्जियां खाना सिर्फ सेहत के लिए ही नहीं, पूरी जिंदगी के लिए फायदेमंद है। ये छोटी-सी आदत आपको लंबा और खुशहाल जीवन दे सकती है। आज से ही शुरू करें। अपनी थाली में रंग भरें और देखें कि आपका शरीर और मन दोनों कैसे खिल उठते हैं।

पूरा बचपन हॉस्टल में अकेले दिवाली मनाई,आज भी त्योहार पर घर जाने का मन नहीं करता, बढ़ता डिप्रेशन, अकेलापन

नयी दिल्ली। त्योहार हमारे समाज में खुशी, अपनेपन और सामूहिकता का प्रतीक माने जाते हैं। लेकिन कई लोगों के लिए यह समय खुशी का न होकर उदासी, डिप्रेशन और अकेलेपन का होता

है। जब पूरी दुनिया परिवार के साथ मिलकर खुशियां मना रही होती है, कुछ लोगों के लिए ये वो वक्त होता है, जब पुराना ट्रॉमा और पुराने दर्द फिर से उभर जाते हैं। मनोविज्ञान में इसे 'फेस्टिव ब्लूज' कहा जाता है। विषय पर बात करेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी से और समझेंगे उपाय सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- बहुत पहले मैंने एक आर्टिकल में पढ़ा था फेस्टिव ब्लूज के बारे में। फेस्टिवल के समय

कुछ लोग डिप्रेशन और एंग्जाइटी महसूस करते हैं। वो आर्टिकल पढ़कर मुझे लगा कि मेरे साथ भी तो कुछ ऐसा ही होता है। खासकर दिवाली और होली के टाइम पर मैं बहुत डिप्रेशन महसूस करता हूं। शायद इसका कारण फैमिली के साथ मेरे डिफिकल्ट रिश्ते हैं। मैं पांच साल का था, जब मेरी मां की डेथ हो गई। पापा ने दूसरी शादी कर ली और दूसरी मां ने कभी मुझे और मेरी बहन को अपने बच्चों की तरह एक्सेप्ट नहीं किया। रहते हम एक ही घर में थे, लेकिन मुझे मां का प्यार महसूस नहीं हुआ। पापा भी हम बच्चों से बिल्कुल डिटैच ही रहते थे। 12 साल की उम्र में मैं हॉस्टल पढ़ने चला गया। दिवाली के समय जब सारे बच्चे अपने घर जाते थे, मैं हॉस्टल में ही रहता था। अब मेरी उम्र 33 साल है और मैं दिल्ली में जॉब करता हूं। अभी भी जब फेस्टिवल का टाइम आता है और मैं अपने कुलीग्स को घर जाते या घर पर फैमिली के साथ फेस्टिवल मनाते देखता हूं तो मुझे बहुत डिप्रेशन महसूस होता है। दिवाली के दिन मैं घर पर अकेले ही रहता हूं और देर रात तक ड्रिंक करता रहता हूं। क्या आप मुझे कुछ सुझाव दे सकते हैं कि मैं अवसाद और उदासी की इस फीलिंग से कैसे बाहर निकलूं? बचपन में त्योहार का मतलब सिर्फ पटाखे, मिठाई या छुट्टियों तक सीमित नहीं रहता। यह वह समय होता है, जब बच्चा सबसे ज्यादा प्यार, अपनापन और सुरक्षा महसूस करता है। बच्चे के दिमाग में फेस्टिवल के साथ ये सारी मेमोरीज जुड़ जाती हैं- मम्मी प्यार कर रही हैं।पापा के साथ मिलकर पटाखे फोड़ रहे हैं। मां तरह-तरह के पकवान बना रही हैं। घर में दोस्त-रिश्तेदार आ रहे हैं। चारों तरफ रौनक और चहल-पहल है। ब्रेन में यह मेमोरी सेव हो गई है कि फेस्टिवल मतलब खुशी और प्यार। अब उस बच्चे की कल्पना करिए, जिसके मन में फेस्टिवल की ऐसी कोई मेमोरी नहीं है। वो त्योहार के दिन स्कूल के हॉस्टल में अकेला है। मेस का खाना खा रहा है। हॉस्टल के बाकी सारे बच्चे घर जा चुके हैं। एकाध टीचर, मेस वर्कर ही बचे हैं। उसके ब्रेन में फेस्टिवल की मेमोरी उदासी और अकेलेपन की है। कोई भी बच्चा जब उपेक्षा और दूरी महसूस करता है, तो त्योहार उसके लिए खालीपन और असहायता का प्रतीक बन जाते हैं। जैसेकि- मां को जल्दी खो देनाः जब बच्चा पांच साल की उम्र में मां को खो दे, तो त्योहारों पर सबसे बड़ी कमी मां की अनुपस्थिति के रूप में सामने आती है। दीपावली की पूजा हो या होली की तैयारी, सब अधूरा लगता है। सौतेली मां से दूरीः अगर नई मां बच्चे को अपनेपन से न अपनाए, तो त्योहार के समय जब बाकी बच्चे सजाए-संवारे जाते हैं, उन्हें तोहफे और मिठाई मिलती है, वहीं उपेक्षित बच्चा भीतर से टूट जाता है। पिता का इमोशनली डिटैच होनाः जब पिता खुद भी भावनात्मक रूप से दूर हों, तो बच्चा पूरी तरह अकेला महसूस करता है। त्योहारों पर उसके लिए कोई सुरक्षित कोना नहीं होता। हॉस्टल में अकेलापनः जब 12 साल की उम्र से ही बच्चा त्योहारों पर हॉस्टल में रह जाए, जबकि बाकी बच्चे घर जा रहे हों, तो उसके मन को एक गहरी चोट लगती है कि 'मैं अलग हूं, मेरे पास कोई नहीं है।'इन अनुभवों से त्योहार बच्चे के लिए 'खुशियों' की नहीं बल्कि 'खोई हुई चीजों की याद' बन जाते हैं। एडल्ट लाइफ में फेस्टिव ब्लूज- अमूमन लोग बचपन के ट्रॉमा को एडल्ट जीवन में भी कैरी करते रहते हैं। बच्चा जब बड़ा होता है, जॉब करता है और इंडीपेंडेंट होता है, तब भी त्योहार पर वही पुराना ट्रॉमा ट्रिगर होता है। ऑफिस कुलीग्स परिवार के साथ त्योहार मनाते हैं, सोशल मीडिया पर तस्वीरें डालते हैं। यह सब देखकर उसके भीतर का पुराना खालीपन और गहरा हो जाता है। बचपन का पैटर्न फिर से एक्टिव हो जाता हैः त्योहार, अकेलापन, उपेक्षा, तुलना। नतीजा ये होता है कि त्योहार के दिन वह अकेले अपने कमरे में रहता है, देर रात तक शराब पीता है और डिप्रेशन महसूस करता है। यह केवल एक दिन की बात नहीं है। धीरे-धीरे यह सोच मन में पक्की हो जाती है कि 'त्योहार मेरे लिए नहीं हैं' और व्यक्ति जीवन के सुखद पलों को भी खो देता है।गाइडलाइंस बताती हैं कि बचपन की नकारात्मक भावनात्मक यादें वयस्कता में डिप्रेशन और एंग्जाइटी का सबसे बड़ा ट्रिगर हो सकती हैं। सीबीटी की मदद से सेल्फ हेल्प- त्योहारों के मायने बदलें, नई यादें बनाएं याद रखिए, हम अतीत की घटनाओं को नहीं बदल सकते, लेकिन उनसे जुड़ा अर्थ जरूर बदल सकते हैं। यही सीबीटी (कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी) की बुनियादी सोच है।

'पॉटरी कला' को 'नया योग' क्यों कहा जा रहा है?

इस रविवार, वाट्सएप मैसेज का बैकलॉग चेक करते समय मैंने अपने एक दोस्त के स्टेटस पर तस्वीर देखी। वह क्ले से बनी कुछ सजावटी व प्राचीन चीजों के बीच खड़ा था। जब मैंने ये जानने के लिए तस्वीर पर क्लिक किया कि वो कहां है, तो मैं हैरान रह गया। सफेद पैंट-शर्ट पहने हुए उसके हाथ क्ले में भिड़े थे और वह लालटेन पकड़े था। जब मैंने उसे फोन किया, तो उसने मुझे एक और तस्वीर भेजी। इसमें हमारे कुछ अन्य परिचित भी उसके साथ रविवार की एक पॉटरी क्लास में पोज दे रहे थे। हर कोई पिछले तीन रविवार की क्लास में खुद की बनाई कलाकृति पकड़े था। पहले हफ्ते में उन्होंने कला सीखी, दूसरे हफ्ते में कप, गिलास या फूलदान बनाया और एक हफ्ते तक सूखने दिया। इस रविवार को उन्होंने उसे रंगा। उनके चेहरों पर सुंदर-उपयोगी वस्तुएं बनाने की खुशी झलक रही थी। तभी मुझे एहसास हुआ कि सिरेमिक व पॉटरी (क्ले या मिट्टी से कलात्मक चीजें बनाना) की दुनिया युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रही है। यह स्थिरता व आत्म-अभिव्यक्ति का संगम है, जो उनकी व्यस्त जिंदगी में ताजगी भरी राहत प्रदान करती है। आज के समय में जब वेलनेस ट्रेंड्स तेजी से बदल रहे हैं, प्राचीनतम कलाओं में से एक पॉटरी एक बार फिर से लोकप्रिय हो रही है। कई युवा मानते हैं कि यह कला, मानसिक शांति और आराम का सही मिश्रण है, जो योग या ध्यान के समान एक चिकित्सीय अनुभव प्रदान करती है। चाहे आप रचनात्मक पुनरुत्थान की तलाश में हों, तनाव से राहत चाहते हों, या आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम खोज रहे हों, पॉटरी एक नया क्लासरूम बन गया है। पिछले आठ-दस वर्षों में यह अपमार्केट सर्कल में एक ट्रेंड बन गया है। 1 से 12 हफ्तों के ये कार्यक्रम शहरी युवाओं को आकर्षित कर रहे हैं? पहला कारण इसकी पहुंच है और दूसरा ध्यान केंद्रित करने वाला गुण। पहले क्ले पकाने के लिए भट्टी एक बड़ी बाधा थी, पर आज ये छोटे एयर कंडीशंड स्टूडियो में उपलब्ध हैं। दबाव में काम करने वाले अधिकांश युवा समझ चुके हैं कि पॉटरी के चिकित्सीय लाभ हैं। मेरे एक मित्र ने कहा, 'ये ध्यान की तरह है, जो आपको दिनचर्या से अलग करने में मदद करता है। 'अधिकांश शिक्षित लोग इस प्राचीन कला की ओर लौट रहे हैं क्योंकि यह न केवल विज्ञान है, जिसमें सामग्री, ऑक्साइड, फायरिंग, ग्लेजिंग का ज्ञान जरूरी है, बल्कि कला भी है, जिसमें पेंटिंग है। आप ताज्जुब कर रहे होंगे कि आखिर क्यों पॉटरी लोकप्रिय वेलनेस ट्रेंड बनता जा रहा है? इसके पीछे कई कारण हैं। 1. माइंडफुलनेस व मेडिटेशनः मिट्टी के साथ काम करने के लिए फोकस की जरूरत है, इससे मानसिक उथल-पुथल कम होती है। बार-बार चाक घुमाकर बर्तन बनाना या हाथ से आकार देना, दोनों ही क्रियाएं ध्यान की तरह शांतिप्रद और थेरेप्यूटिक होती हैं। 2. तनाव में कमीः मिट्टी को आकार देने का स्पर्श अनुभव व रचनात्मक प्रक्रिया दैनिक चिंताओं से ध्यान हटाने में मदद करती है। इसका सीधा असर होता है कि यह कोर्टिसोल को कम करता है। कोर्टिसोल एक ऐसा हार्मोन है जो तनाव और चिंता से जुड़ा होता है। 3. थेरेप्यूटिक लाभः कुछ लोगों के लिए शब्दों में अपनी बात कहना मुश्किल होता है। उनके लिए कुछ बनाना एक प्रकार का संवाद है। इसका एक स्पष्ट लाभ यह है कि यह स्क्रीन से डिस्कनेक्ट कर प्राकृतिक स्व के साथ जुड़ने का मौका देता है। पॉटरी मूर्त कला के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति की अनुमति देता है। यह प्रक्रिया आत्म-सम्मान और उपलब्धि की भावना को बढ़ा सकती है। 4. शारीरिक लाभः फायदों की सूची में ये सबसे निचले क्रम पर हो सकते हैं। लेकिन मिट्टी को गूंथने, आकार देने और मोल्ड करने की शारीरिक क्रिया उन लोगों के लिए फायदेमंद हो सकती है जो शारीरिक चोटों से उबर रहे हैं। मिट्टी के साथ काम करना फाइन मोटर स्किल्स और हाथ की दक्षता में सुधार कर सकता है। फंडा यह है कि पॉटरी कला युवाओं को उनकी व्यस्त जिंदगी से बचने का मौका देता है। यह कला, माइंडफुलनेस और रिलैक्सेशन का मिश्रण है और इस तरह यह 'नया योग' बनती जा रही है।

बुरी जीत से अच्छा है, शान से हार जाएं

1960 में दक्षिण अफ्रीका में जन्मे केविन कार्टर रंगभेद युग में पले-बढ़े थे। गोरे होने के नाते उन्होंने विशेषाधिकारों का आनंद लिया, पढ़ाई की और वायुसेना में शामिल हुए। 1980 में भेदभाव का सामना कर रहे एक अश्वेत का बचाव करने पर उन्हें पीटा गया। यह घटना उनकी जाग्रति का महत्वपूर्ण मोड़ बनी। 1983 में उन्होंने कुछ भयानक बम विस्फोट देखे और हिंसा से खिन्न होकर उन्होंने रंगभेद की भयावहता को उजागर करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया। 1984 में वे जोहान्सबर्ग स्टार अखबार के फोटोग्राफर बन गए। अगले 10 वर्षों में केविन को विरोध प्रदर्शनों, अंतिम संस्कारों और पुलिस व रंगभेद विरोधी कार्यकर्ताओं के बीच झड़पों की तस्वीरें लेने के लिए कई बार गिरफ्तार किया गया। 1993 में कार्टर को सूडान में एक असाइनमेंट मिला। सूखे और गृहयुद्ध से बर्बाद इस देश पर दुनिया के मीडिया ने तब तक बहुत कम ध्यान दिया था। केविन संयुक्त राष्ट्र के एक फूड-कैम्प में पहुंचे। वहां उन्होंने एक बच्ची को देखा, जो अकाल से ग्रस्त होकर मिट्टी में पड़ी थी। उसके बगल में एक गिद्ध लालचपूर्ण-धैर्य के साथ

उसके मरने का इंतजार कर रहा था। केविन के शरीर की हर रग उस भयावह दृश्य को देखकर चीख उठी। उन्होंने यंत्रवत ही कैमरा उठाया और अनेक छायाचित्रों में हर कोण से उस बच्ची की पीड़ा को कैमरे में कैद कर लिया। उन्हें इस त्रासदी को दुनिया के सामने लाने वाला भयावह दृश्य मिल गया था। कुछ खबरों के मुताबिक केविन ने गिद्ध को भगा दिया था और उस कृशकाय बच्ची को उठाकर उसके कानों में फुसफुसाते हुए उसे सांत्वना दी थी कि जल्द ही सब ठीक हो जाएगा। फिर उन्होंने बच्ची को बचाव दल को सौंप दिया था। लेकिन उन्हें नहीं पता था कि यह तस्वीर उन्हें आजीवन परेशान करेगी। वापस लौटने पर उन्हें इस तस्वीर के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया। लेकिन प्रशंसा के साथ-साथ आलोचना और पड़ताल भी हुई। कई लोगों ने उनके इरादों पर सवाल उठाए और उन पर अपने निजी मकसद के लिए एक बच्ची की पीड़ा का फायदा उठाने का आरोप लगाया। अप्रैल 1994 में जब केविन को पुलित्जर पुरस्कार मिला तो यह उनके लिए सबसे बड़ी उपलब्धि होनी चाहिए थी। लेकिन वह पुरस्कार उन्हें अपने उस असहनीय अपराध-बोध की याद दिलाने लगा। मुझे 1994 में जोहान्सबर्ग में केविन से मिलने का मौका मिला था, जब मैं नेल्सन मंडेला के दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बनने की घटना को कवर कर रहा था। इसके चार महीने बाद ही केविन ने 33 साल की उम्र में आत्महत्या कर ली। उसी साल (1994) और उसी देश (सूडान) से आठ साल के गुओर मारियल गृह युद्ध के दौरान दक्षिण सूडान के एक शरणार्थी शिविर से भाग निकले थे। एक रात सैनिकों ने उनके घर पर छापा मारा था और एक राइफल के प्रहार से उनका जबड़ा तोड़ दिया था। वे बेहोश हो गए। बाद में उन्होंने खुद को एक शरणार्थी शिविर में पाया। उनके परिवार के 28 सदस्य मारे गए, लेकिन वे मिस्र भागने में सफल रहे, और फिर 16 साल की उम्र में स्थायी रूप से अमेरिका चले गए। चूंकि वे बचपन से ही सशस्त्र विद्रोहियों से भागते आ रहे थे, इसलिए 28 की उम्र में उन्हें 2012 के लंदन ओलिम्पिक में मैराथन के लिए प्रतिस्पर्धा करने का अवसर मिला। तब सवाल उठा कि वे किस देश का झंडा लेकर चलेंगे? वे अमेरिकी नागरिक नहीं थे और उनकी मातृभूमि दक्षिण सूडान को 2011 में ही एक स्वतंत्र देश का दर्जा मिला था। वह देश ओलिम्पिक में सम्मिलित होने की पात्रता को पूरा नहीं कर पाया था। यही कारण था कि जब गुओर के समक्ष सूडान का झंडा लेकर चलने की पेशकश की गई, तो उन्होंने विनम्रता से मना कर दिया। क्योंकि सूडान से हुआ गृहयुद्ध ही उनके परिवार की हत्या के लिए जिम्मेदार था। उन्होंने ओलिम्पिक ध्वज उठाया और वे पहले या तीसरे नहीं, बल्कि 47वें स्थान पर रहे। लेकिन पूरी दुनिया और मीडिया ने उनकी 'विजयी' हार का जश्न मनाया, क्योंकि उन्होंने मात्र एक साल पुराने एक देश को पहचान दी थी। फंडा यह है कि तय करें हमारे बच्चों को क्या चुनना चाहिए- एक विजयी हार को अपनाना या एक बुरी जीत का आनंद लेना।

अच्छी सड़कें सिर्फ जोड़ती नहीं हैं, जीवन को भी समृद्ध बनाती हैं

चेन्नई से 300 किलोमीटर दूर-दराज के एक गांव में एक महिला प्रसव पीड़ा में थीं। उन्हें मदद की जरूरत थी। बच्चा जन्म लेने वाला था। लेकिन उन्हें अस्पताल ले जाने के लिए सिर्फ सात किमी की दूरी तय करने में कई घंटे लग जाते। लेकिन यह जोखिम भरा था क्योंकि रास्ते उबड़-खाबड़ थे, कावेरी नदी उफान पर थी और गर्भवती महिला के साथ तैरकर पार करना संभव नहीं था। ऐसे में सबसे आसान और तेज विकल्प था कि दाई को बुलाया जाए। वह दाई उन सैकड़ों पारंपरिक दाइयों में से एक थी जो आसपास के कई गांवों में प्रसव कराती थीं। दाई पहुंची और उन्होंने सबसे पहले महिला से कहा, 'धैर्य रखो, हम मिलकर बच्चे को जन्म देंगे, बस हम पर भरोसा रखो।' इन शब्दों ने महिला को आत्मविश्वास दिया और उन्हें थोड़ा सुकून मिला। गांव की सभी महिलाएं उस घर के सामने इकट्ठा हो गईं। पुरुषों को थोड़ी दूरी पर खड़ा रहने को कहा गया ताकि दाई को कुछ जरूरत हो तो वे बाजार से ला सकें। और अचानक सभी महिलाएं खुशी से झूम उठीं, जैसे क्रिकेट स्टेडियम में छक्का लगने पर होता है। यह खुशी नवजात के रोने की आवाज सुनकर थी। गली के कोने पर खड़े पुरुषों ने भी राहत की सांस ली। कुछ ने आसमान की ओर देखकर भगवान का धन्यवाद किया, तो कुछ ने अपनी गर्दन में लटके लॉकेट को उतारकर सम्मानपूर्वक अपनी आंखों पर लगाया। यह घटना 1940 की है और इसी तरह

मेरी मां का जन्म हुआ था। एक दशक बाद जब उनके सबसे छोटे भाई का जन्म हुआ, तो यह दृश्य दोबारा नहीं देखा गया, क्योंकि तब तक वहां पक्की सड़क बन चुकी थी और लोग बैलगाड़ी में एक घंटे से भी कम समय में गर्भवती महिलाओं को पास के अस्पताल ले जाने लगे थे। हाल ही में जब मैं उस गांव में गया, तो देखा कि अब वही दूरी, आपस में जोड़ती दो लेन की सड़कों के कारण मात्र 15 मिनट में तय हो जाती है। यह पुरानी यादें इस गुरुवार को तब ताजा हो गईं, जब महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और अजीत पवार के साथ नाशिक के इगतपुरी में हिंदू हृदयसम्राट बालासाहेब ठाकरे महाराष्ट्र समृद्धि महामार्ग के अंतिम चरण का उद्घाटन किया। 701 किमी लंबे नागपुर-मुंबई एक्सप्रेसवे के अंतिम 76 किमी खंड के उद्घाटन के साथ ही महायुति द्वारा राज्य के विकास के लिए किया गया वादा पूरा हुआ। यह एक्सप्रेसवे अब राज्य के बंदरगाह आधारित विकास योजना के तहत 24 जिलों को सीधे और अप्रत्यक्ष रूप से बंदरगाहों से जोड़ता है। अपने भाषण में फडणवीस ने कहा कि उनकी सरकार एक और वादा पूरा करेगी, जो है एक्सेस-कंट्रोल्ड शक्तिपीठ हाईवे का निर्माण। महाराष्ट्र के विभिन्न कोनों में चार शक्तिपीठ हैं। इनके जुड़ने से न केवल तीर्थयात्रियों को लाभ होगा, बल्कि इससे मराठवाड़ा के आर्थिक विकास को बल मिलेगा, जिसकी अमेरिका जैसे विकसित देशों के अंतरराज्यीय हाईवे सिस्टम से तुलना की जा सकती है। इसमें कोई शक नहीं कि अमेरिका की सड़कें दुनिया की सबसे बेहतरीन सड़कों में गिनी जाती हैं। खासकर इंटरस्टेट हाईवे सिस्टम देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है। ये सड़कें न केवल परिवहन को सुगम बनाती हैं, बल्कि लॉजिस्टिक लागत को भी कम करती हैं। इससे व्यापारियों को व्यापक बाजार तक पहुंच मिलती है। यह नेटवर्क, उत्पादकों को उपभोक्ताओं से जोड़ता है, सुरक्षा में सुधार करता है और आर्थिक उत्पादकता को बढ़ाता है। इससे जीवन स्तर में भी सुधार होता है। सड़कों के निर्माण से स्वास्थ्य सेवाएं भी अंतिम व्यक्ति तक पहुंचती हैं, जो मानव जाति के लिए एक बड़ा लाभ है। इसके अलावा, सड़क नेटवर्क पर्यटन को बढ़ावा देता है, जिससे होटल, रेस्टोरेंट और मनोरंजन जैसे संबंधित उद्योगों को बढ़ावा मिलता है। फंडा यह है कि अच्छी सड़कों का निर्माण केवल कनेक्टिविटी नहीं बढ़ाता, बल्कि जीवन को भी समृद्ध बनाता है। इससे न केवल व्यक्ति, बल्कि पूरा देश भी समृद्ध होता है, क्योंकि इनसे व्यापार और वाणिज्य में उछाल आता है।

भारत अब केवल कूटनीति पर ही निर्भर नहीं रहने वाला है

अब जब ऑपरेशन सिंदूर को एक महीना पूरा होने आया है, उससे जुड़े कुछ निष्कर्षों को ठीक से समझ लेना जरूरी है। भारत की सेना ने पाकिस्तानी क्षेत्र में आतंकवादी ठिकानों और अन्य फेसिलिटीज पर जोरदार लेकिन ऐहतियाती और टारगेटेड हमला किया था।यहां तक ??कि आक्रमण का समय भी रात को इसलिए चुना गया ताकि नागरिकों को होने वाली क्षति से बचा जा सके। पाकिस्तान हाई-अलर्ट पर था, इसके बावजूद भारत ने सफलतापूर्वक उसकी डिफेंसिव-लाइंस को

भेद दिया और अपने लक्ष्यों पर प्रहार करके कुछ आतंकवादियों का खात्मा करने में सफलता पाई। याद रहे कि इन आतंकवादियों के अंतिम संस्कार में उच्च-स्तरीय पाकिस्तानी अधिकारी शामिल हुए थे।इस ऑपरेशन के बाद पाकिस्तान से भारत के इंगेजमेंट्स की शर्तें हमेशा के लिए बदल गई हैं, क्योंकि अब भारत ने सैन्य-कार्रवाई को लेकर झिझक छोड़ दी है। एक अरसे तक कश्मीर मुद्दे के 'अंतरराष्ट्रीयकरण' के अंदेशे ने भारत को निरर्थक कूटनीतिक प्रक्रियाएं अपनाने के लिए प्रेरित किया था, लेकिन उनसे हमें बहुत कम हासिल हो सका। यहां तक ??कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आतंकवाद प्रतिबंध समिति ने भी लंबे समय तक पाकिस्तान को अपने एक स्थायी सदस्य की छत्रछाया में रहने की अनुमति दी है।भारत अंतरराष्ट्रीय कूटनीति को छोड़ नहीं रहा है, लेकिन अब वह केवल उसी पर निर्भर भी नहीं रहेगा। इसके बजाय, भारत अब आतंकवाद का सैन्य-बल से जवाब देगा और किसी भी जवाबी कार्रवाई का स्पष्ट और दृढ़ संकल्प के साथ सामना भी करेगा। लेकिन भारत पाकिस्तान को उसके परमाणु हथियारों की धौंस दिखाने की अनुमति नहीं देने वाला।2016 में सीमा पार सर्जिकल स्ट्राइक से लेकर 2019 में खैबर पख्तूनख्वा में हवाई हमले तक, भारत ने अपने अभियानों के दायरे का उत्तरोत्तर विस्तार किया है और ऐसा करते हुए नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा दोनों को लांघा है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के गढ़ में प्रहार किए गए। भारत ने दिखाया है कि आतंकवाद का मुकाबला परमाणु-युद्ध को आमंत्रित किए बिना भी एक संतुलित सैन्य-प्रतिक्रिया से किया जा सकता है।पाकिस्तान का सैन्य नेतृत्व अब जब भविष्य में कश्मीर या अन्य जगहों पर तबाही मचाने के लिए आतंकवादियों को भेजने पर विचार करेगा, तो पहले उसे खुद से पूछना होगा कि क्या वह भारत के जवाबी हमले के लिए भी तैयार है? उलटे इससे पाकिस्तान के लोगों को पानी की किल्लत हो सकती है। भारत ने सिंधु जल संधि को स्थगित करके यही संदेश दिया था।जहां उसके बाद से भारत ने जलप्रवाह को मोड़ने के लिए कोई इच्छा नहीं दिखाई है, लेकिन इस संदेश ने उपमहाद्वीप की भू-राजनीति को मौलिक रूप से बदल दिया है। भारत अब शांति के लिए बातचीत भर नहीं कर रहा है; वह पानी की निरंतर आपूर्ति के बदले में आतंकवाद की समाप्ति की मांग भी कर रहा है।ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने दुनिया को यह भी याद दिलाया है कि पाकिस्तान के आतंकवाद से कितने गहरे ताल्लुक हैं। युद्ध विराम को अंजाम देने वाली परदे के पीछे की बातचीतों के बारे में नए विवरण निस्संदेह सामने आएंगे, लेकिन यह निर्विवाद है कि यह भारतीय सैन्य दबाव के बिना संभव नहीं था।इसके बाद अब निकट-भविष्य में भारत और पाकिस्तान के द्विपक्षीय संबंधों में कोई खास बदलाव होने की संभावना नहीं है, क्योंकि ऐसी कोई भी बातचीत- खासकर कश्मीर मुद्दे पर- फिलहाल दूर की संभावना है।वैसे भी कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव का मूल कारण नहीं है, यह तो पाकिस्तान द्वारा भारतीय क्षेत्र पर अपने दावों को सही ठहराने के लिए फैलाया गया एक मिथक है। यह नैरेटिव एक ऐसे कट्टरपंथी तर्क पर आधारित है- जिसे हाल ही में पाकिस्तान के सेना प्रमुख आसिम मुनीर ने दोहराया था- कि मुसलमान गैर-मुस्लिम बहुसंख्यक देश में नहीं रह सकते।भारत व पाकिस्तान में कोई तुलना नहीं है। भारत की जीडीपी पाकिस्तान से 11 गुना अधिक है और उसकी सैन्य-श्रेष्ठता के आगे भी पाकिस्तान नहीं टिकता। पाकिस्तान में उसकी फौज को हासिल अत्यधिक अधिकार, राष्ट्रीय बजट पर नियंत्रण, चीन और तुर्किए के साथ रणनीतिक गठबंधन उसे सशस्त्र संघर्ष को बनाए रखने के लिए शक्तिशाली उपकरण प्रदान करते हैं, जबकि किसी भी पारंपरिक युद्ध में भारत हमेशा पाकिस्तान पर न केवल जीत हासिल करेगा, बल्कि उसे काफी नुकसान भी पहुंचा सकता है। भारत ने सीमापार आतंकवाद का सामना करने में जैसी दृढ़ता दिखाई, उस पर वह गर्व कर सकता है।अब भारत ने सैन्य-कार्रवाई को लेकर झिझक छोड़ दी है। एक अरसे तक कश्मीर मुद्दे के 'अंतरराष्ट्रीयकरण' के अंदेशे ने भारत को निरर्थक कूटनीतिक प्रक्रियाएं अपनाने के लिए प्रेरित किया था, लेकिन उनसे हमें क्या हासिल हुआ? (शशि थरूर)

आपका टैरेस भविष्य में आपको 'पॉवर-फुल' बना सकता है!

हमने परिवहन में इलेक्ट्रिक कारों के विचार को स्वीकार कर लिया है। हमने पेसमेकर के विचार को भी अपना लिया है, जिसे दिल की धड़कनों को स्थिर रखने के लिए डिजाइन किया गया है। लेकिन अब अगले स्तर पर जाने के लिए तैयार हो जाइए।आने वाले समय में इलेक्ट्रिक विमान भी होंगे और वही बिजली रुमाटॉइड आर्थराइटिस जैसी बीमारियों से लेकर ग्लियोब्लास्टोमा जैसे मुश्किल से इलाज होने वाले मस्तिष्क

कैंसर और पैंक्रियाटिक कैंसर को ठीक करने के लिए भी तैयार हो रही है!जी हां, न केवल बीमारियों के संभावित उपचार के रूप में, बल्कि नई ग्रीन-टेक्नोलॉजी को अपनाकर 2050 तक ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के अपने जलवायु-लक्ष्य तक पहुंचने में एविएशन क्षेत्र की मदद करने के लिए भी बिजली तैयार हो रही है।टोरंटो से 135 किमी दूर ओंटारियो के लिंडसे में एक छोटे-से हवाई अड्डे पर आपका स्वागत है। यहां होराइजन एयरक्राफ्ट लिमिटेड नामक कंपनी चुपचाप दुनिया का पहला हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ और लैंडिंग विमान बना रही है।इसे 'ईवीटीओएल विमान' के नाम से जाना जाता है! खोज और बचाव कार्यों, टाइट लैंडिंग्स, छोटे समूहों और क्षेत्रीय उड़ानों के लिए डिजाइन किए गए होराइजन का सात सीटर विमान पायलट सहित किसी हेलीकॉप्टर की तरह टेकऑफ और लैंड करता है, लेकिन वह 450 किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक की गति से यात्रा करने में सक्षम है। कंपनी के सीईओ ब्रैंडन रॉबिन्सन को भरोसा है कि अगले 24 महीनों में उड़ान परीक्षण शुरू करने के लिए एक फुल-स्केल प्रोटोटाइप तैयार हो जाएगा।यदि आप 'ईवीटीओएल विमान' की मदद से दो घंटे की यात्रा करके अमेरिका के सिनसिनाटी विश्वविद्यालय जाते हैं, जो कि वहां से 800 किमी दूर है और पोर्ट्समाउथ, जो कि 900 किमी दूर है, तो आप नोवोक्योर नामक ऑन्कोलॉजी कंपनी के मुख्यालय में पहुंच जाएंगे।वे संयुक्त रूप से पता लगा रहे हैं कि डिवाइस के आकार को कैसे छोटा किया जाए और इलेक्ट्रिक फील्ड्स और पल्सेस को ऐसे कैसे ?उपयोग किया जाए कि इससे कैंसर के इलाज में मदद ली जा सके। उन्होंने पहले से ही ऐसी तकनीक विकसित कर ली है, जो ट्यूमर के विकास को धीमा करने के लिए शरीर के सेल-डि?वीजन में इलेक्ट्र?किल फोर्सेस को बाधित करती है।शरीर में विद्युत-घटकों के होने का यह नया विचार हमारे भविष्य के इलाज के तरीकों के बारे में हमारी सोच को बदल रहा है। नोवोक्योर के सीईओ एशले कॉर्डोवा का तो यही मानना ??है। 62 वर्षीय मैकेनिकल इंजीनियर टिम नुगेंट जैसे ग्लियोब्लास्टोमा के रोगी पहले ही अपने सिर पर इलेक्ट्रोड्स युक्त पैचेस पहन रहे हैं, जो एक बैटरी पैक से इलेक्ट्रोड्स डिलीवर करते हैं।इसके पीछे यह सोच है कि सेल-डिवीजन को बाधित करने के लिए कम तीव्रता वाले इलेक्ट्रिकल फील्ड्स का उपयोग किया जाए। इनमें से कुछ निष्कर्ष अभी मानव परीक्षण के चरण में हैं। यह बताता है कि भविष्य में नई तकनीकें इस बात का दायरा बढ़ाने जा रहे हैं कि कैसे बिजली हमारे दैनिक जीवन में और महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। हो सकता है बिजली कैंसर का इलाज करने में कामयाब हो जाए।आने वाले वर्षों में हमारे जीवन का हिस्सा बन सकने वाली ये वैश्विक गतिविधियां एक प्रमुख बदलाव की ओर इशारा करती हैं।

एक लोकतंत्र में जनता को विश्वास में लेना जरूरी है

अक्टूबर 1962 में चीन ने भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया था। सरकार ने राष्ट्रीय आपातकाल घोषित किया। उस समय संसद में सबसे छोटी पार्टियों में से एक जनसंघ से पहली बार राज्यसभा सांसद बने 36 वर्षीय एक युवा नेता ने प्रधानमंत्री नेहरू से संसद का विशेष सत्र बुलाने का अनुरोध किया। उनका नाम अटल बिहारी वाजपेयी था। पं. जवाहरलाल नेहरू की कांग्रेस सरकार को उस समय लोकसभा में दो-तिहाई बहुमत प्राप्त था। 72 वर्ष के नेहरू वाजपेयी से ठीक दोगुनी आयु के भी थे। लेकिन नेहरू ने उनके अनुरोध पर सहमति जताई और अपनी ही पार्टी के सदस्यों के इस सुझाव को खारिज कर दिया कि यह एक 'गुप्त सत्र' होना चाहिए। जब ??संसद की बैठक हुई, तो वाजपेयी ने सरकार पर तीखा हमला किया। लेकिन नेहरू ने इसे देशभक्ति के खिलाफ नहीं माना। इतिहास को हमारे लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभानी चाहिए। जब ऑपरेशन सिंदूर चल रहा था, तो भारत के लोग सरकार के साथ एकजुट थे और हमारे बहादुर सशस्त्र बलों का पूरा समर्थन किया गया, जिन्होंने सफलतापूर्वक लड़ने के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी। हालांकि, अब जब युद्ध विराम हो गया है, तो ऑपरेशन से संबंधित किसी वैध सवाल को यह कहकर नहीं टाला जा सकता कि यह राष्ट्र-विरोधी है। लोकतंत्र में सरकार को राष्ट्रीय हित की सीमाओं के भीतर लोगों को विश्वास में लेना चाहिए और किसी सवाल को टालना नहीं चाहिए। खास तौर पर, इसको लेकर बहुत प्रासंगिक सवाल उठ रहे हैं कि युद्ध को अचानक क्यों समाप्त कर दिया गया। युद्ध में हमने कितने विमान खोए या नहीं खोए, इसका सटीक विवरण महत्वपूर्ण नहीं है। क्योंकि किसी भी युद्ध में दोनों पक्षों को कुछ ना कुछ नुकसान तो होगा ही, और हमारी सरकार ने पाकिस्तान में महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों को हुए नुकसान के पर्याप्त विजुअल प्रमाण भी उपलब्ध कराए हैं। लेकिन अब सार्वजनिक वृत्त में इस बात पर कुछ गंभीर विरोधाभास सामने आए हैं कि युद्ध विराम कैसे और क्यों हुआ। अमेरिकी वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लुटनिक ने 23 मई को अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय व्यापार न्यायालय में शपथ लेकर कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम 'केवल तभी संभव हो सका' जब ट्रम्प ने उसमें हस्तक्षेप किया और 'एक फुल-स्केल परमाणु युद्ध को टालने' के लिए दोनों देशों को व्यापार-पहुंच की पेशकश की। हालांकि इससे पहले 13 मई को भारतीय विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने सार्वजनिक तौर पर इसके ठीक उलट बात कही थी। अपनी प्रेस ब्रीफिंग में उन्होंने कहा कि 7 से 10 मई के बीच भारतीय और अमेरिकी नेताओं के बीच केवल 'बातचीत' हुई थी और 'व्यापार के मुद्दों पर कोई चर्चा नहीं हुई थी।' जायसवाल ने आगे कहा कि युद्ध विराम भारत और पाकिस्तान के बीच 'सीधे संपर्क' के जरिए हुआ था, 'अमेरिकी मध्यस्थता के जरिए नहीं'। पाठक इस बात से सहमत होंगे कि अमेरिका के सबसे वरिष्ठ मंत्रियों में से एक के द्वारा न्यायालय में शपथ लेकर कही गई बात और हमारे आधिकारिक प्रवक्ता द्वारा प्रेस वार्ता में दिया गया बयान- दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं। भारतीय जनता इन विपरीत रुखों को कैसे समझे? यह भी रहस्य बना हुआ है कि राष्ट्रपति ट्रम्प युद्ध विराम की घोषणा कैसे कर सकते हैं, जबकि हमारे आधिकारिक प्रवक्ता ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम 'प्रत्यक्ष संपर्क' के माध्यम से हुआ है। फिर इस मामले में अमेरिका की क्या भूमिका थी? युद्ध कब छेड़ा जाए और युद्ध को समाप्त करने का सबसे अच्छा समय कौन-सा है- इसको लेकर हमें निर्वाचित सरकार पर भरोसा करना चाहिए। लेकिन सरकार को भी और अधिक पारदर्शी होना चाहिए। ऐसा कहना 'पाकिस्तानी एजेंट' होना नहीं है। अगर सार्वजनिक क्षेत्र में सूचना पर तथ्यात्मक स्पष्टीकरण का प्रावधान है, तो जनता को इसे पूछने का अधिकार है। चुनावी लाभ के लिए तिरंगा यात्रा निकालना इसका उत्तर नहीं है। युद्ध का पक्षपातपूर्ण राजनीतिकरण भले राजनीति के लिए आकर्षक हो, लेकिन इसमें कुछ सतहीपन और अवसरवादिता की झलक मिलती है। लोकतंत्र में परिपक्व-संवाद उसकी मजबूती का प्रतीक है, कमजोरी का नहीं। युद्ध विराम का अमेरिकी संस्करण हमारे संस्करण से अलग क्यों है- सरकार को इसे स्पष्ट करना चाहिए, या तो संसद के विशेष सत्र के माध्यम से या सर्वदलीय ब्रीफिंग के जरिए। अतीत में नेहरू और वाजपेयी द्वारा स्थापित ऐतिहासिक उदाहरण को हमें नहीं भूलना चाहिए। अब जब युद्ध विराम हो गया है, तो ऑपरेशन ??सिंदूर से संबंधित किसी वैध सवाल को यह कहकर नहीं टाला जा सकता कि यह राष्ट्र-विरोधी है। सरकार को राष्ट्रीय हित की सीमाओं के भीतर लोगों को विश्वास में लेना चाहिए। (ये लेखक के अपने विचार हैं।)

आसिम मुनीर की शिया धर्मगुरुओं को धमकी बोले- 'ईरान से मोहब्बत तो वहीं चले जाओ'

शिया धर्मगुरुओं का कहना है कि मुनीर के बयान से ऐसा लगा कि वे ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह खामेनेई की मौत के बाद पाकिस्तान में हुए विरोध प्रदर्शनों के लिए शिया समुदाय को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। बैठक में मौजूद शिया नेताओं ने कहा कि मुनीर ने गिलगित-बाल्टिस्तान में हुई अशांति को सीधे शिया लीडरशिप से जोड़ दिया और पूरे समुदाय को जिम्मेदार ठहराया। शिया धर्मगुरु मोहम्मद शिफा नजफी ने कहा कि उन्होंने वहीं पर मुनीर की बात का विरोध किया। उन्होंने कहा कि सभी शियाओं को इन घटनाओं के लिए जिम्मेदार ठहराना सही नहीं है। सभी को एक ही नजर से नहीं देखा जाना चाहिए। नजफी ने यह भी बताया कि पाकिस्तान की सेना में भी शिया मौजूद हैं और देश के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना भी शिया थे। उनके मुताबिक, जब उन्होंने यह बात उठाई तो मुनीर के रवैये में थोड़ा बदलाव आया, लेकिन फिर भी उन्होंने कहा कि 'अगर आप ईरान से इतना प्यार करते हैं, तो वहां चले जाएं, दरवाजे खुले हैं।'मुनीर का यह बयान ऐसे समय में आया है जब पाकिस्तान अपनी विदेश नीति में संतुलन बदलता हुआ दिख रहा है। पहले वह ईरान और खाड़ी देशों के बीच संतुलन बनाए रखने की कोशिश करता था, लेकिन अब वह सऊदी अरब और उसके सहयोगियों के करीब जाता दिख रहा है। हालांकि, मुनीर के शिया समुदाय के साथ हुई इफ्तार पार्टी को लेकर पाकिस्तान सेना के आधिकारिक बयान में अलग तस्वीर पेश की गई। सेना ने कहा कि मुनीर ने धार्मिक नेताओं से राष्ट्रीय एकता बनाए रखने और सांप्रदायिक तनाव से बचने की अपील की।पाकिस्तान में ईरान के बाद सबसे बड़ी शिया आबादी रहती है, जो कुल जनसंख्या का करीब 15 फीसदी (3.77 करोड़) मानी जाती है। यह विवाद उस समय सामने आया है जब मार्च में खामेनेई की मौत के बाद पाकिस्तान के कई शहरों में प्रदर्शन शुरू हो गए थे।कराची में प्रदर्शनकारियों ने अमेरिकी दूतावास परिसर में घुसने की कोशिश की, जहां अमेरिकी मरीन ने फायरिंग की और कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई। इस्लामाबाद में प्रदर्शनकारियों को रोकने के लिए पुलिस ने आंसू गैस का इस्तेमाल किया। वहीं स्कार्दू में एक संयुक्त राष्ट्र के दफ्तर को आग लगा दी गई। गिलगित-बाल्टिस्तान में भी कई लोगों की मौत की खबरें आईं।

दावा-ईरान ने हीट ट्रैकिंग मिसाइल से अमेरिकी एफ-35 को गिराया,यह दुनिया का सबसे एडवांस फाइटर जेट

तेहरान। ईरान ने 19 मार्च को दुनिया के सबसे एडवांस अमेरिकी फाइटर जेट एफ-35 को गिराने का दावा किया। ईरानी मीडिया प्रेस टीवी के मुताबिक ईरान के इस्लामिक

रिवोल्यूशन गार्ड कॉर्प्स ने अपने स्वदेशी 'मजीद' एयर डिफेंस सिस्टम के जरिए इसे मार गिराया। अगर यह सच है तो ईरान पहला ऐसा देश होगा जो ऐसा कर पाया है। एफ-35 फाइटर जेट को करीब दो दशकों से अमेरिकी सैन्य ताकत का सबसे बड़ा प्रतीक माना जाता रहा है। यह सबसे प्रीमियम फाइटर जेट है, जिसे खास तौर पर इस तरह बनाया गया है कि वह दुनिया के सबसे मजबूत एयर डिफेंस सिस्टम में भी बिना पकड़े घुसकर हमला कर सके। ईरान का दावा है कि उसने इस 'अदृश्य' माने जाने वाले जेट की कमजोरी पकड़ ली है। मजीद डिफेंस सिस्टम ने एफ-35 से निकली इंफ्रारेड यानी गर्मी को पकड़कर उसे निशाना बनाया गया। ईरान का कहना है कि एफ-35 भले ही रडार से बचने में सक्षम हो, लेकिन उसके इंजन से निकलने वाली गर्मी को पूरी तरह छिपाया नहीं जा सकता। वहीं, अमेरिकी वेबसाइट सीएनएन ने भी सूत्रों के हवाले से बताया था कि ईरान के हमलों की वजह से एफ-35 को मिडिल ईस्ट में इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी है।ईरानी मीडिया के मुताबिक पहले यह माना जा रहा था कि एफ-35 को गिराने में 'तलाश' एयर डिफेंस सिस्टम का इस्तेमाल हुआ है। लेकिन अब कहा जा रहा है कि मजीद शॉर्ट-रेंज एयर डिफेंस सिस्टम ने ही एफ35 को गिराया है। मजीद डिफेंस सिस्टम रडार की बजाय इंफ्रारेड तकनीक पर काम करता है। ऐसे में एफ-35 के अंदर जो सेंसर और चेतावनी सिस्टम लगे होते हैं, वे इस खतरे को आसानी से पहचान नहीं पाते। एफ-35 के पास जो इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम होते हैं, वे आम तौर पर दुश्मन के रडार सिग्नल को जाम कर देते हैं। लेकिन यहां यह पूरी तरह बेकार साबित हुए। ईरान की ओर से जारी वीडियो के मुताबिक, इस हमले में सिर्फ एक मिसाइल ही काफी रही। इससे यह दिखाने की कोशिश की गई कि सिस्टम कितना सटीक है और एफ-35 की गर्मी वाली कमजोरी कितनी बड़ी है।मजीद एयर डिफेंस सिस्टम को ईरान ने 2021 में पहली बार सार्वजनिक तौर पर दिखाया था। इसे खास तौर पर नजदीकी दूरी की सुरक्षा के लिए तैयार किया गया है। इस सिस्टम की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह रडार पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि इंफ्रारेड तकनीक का इस्तेमाल करता है। इसी वजह से ऐसे विमान जो रडार से बचने के लिए डिजाइन किए गए हैं, वे भी इसकी नजर से बच नहीं पाते। मजीद सिस्टम आम तौर पर कम ऊंचाई पर उड़ने वाले टारगेट को पकड़ने के लिए बनाया गया है। इसकी मार करने की दूरी करीब 700 मीटर से लेकर 6 किलोमीटर तक मानी जाती है। इस वजह से यह उन हालात में ज्यादा कारगर होता है, जहां दुश्मन के विमान या ड्रोन को किसी खास इलाके के ऊपर आना पड़ता है।इसे 'पॉइंट डिफेंस' सिस्टम कहा जाता है, यानी यह एयरबेस, सैन्य ठिकानों, रडार स्टेशन या किसी महत्वपूर्ण इमारत जैसी जगहों की सीधी सुरक्षा के लिए तैनात किया जाता है। यह सिस्टम आमतौर पर मोबाइल प्लेटफॉर्म पर लगाया जाता है, यानी इसे जरूरत के हिसाब से एक जगह से दूसरी जगह जल्दी शिफ्ट किया जा सकता है। इससे दुश्मन के लिए इसकी सही लोकेशन पता लगाना मुश्किल हो जाता है। ईरान के मुताबिक वे पहले से ही इस तरह की स्थिति के लिए तैयारी कर रहे थे। मसलन कब क्या करना है, कौन सा सिस्टम इस्तेमाल करना है, दुश्मन को कैसे धोखा देना है। ये सब पहले से तय था। बताया गया है कि 28 फरवरी को जब अमेरिका और इजराइल ने पहला हमला शुरू किया, तब ईरान ने जानबूझकर अपने असली रडार सिस्टम को बंद कर दिया और उन्हें सुरक्षित जगहों पर छिपा दिया। उनकी जगह नकली रडार सिस्टम लगा दिए गए। ये साधारण नकली ढांचे नहीं थे, बल्कि ऐसे डिकॉय थे जो असली रडार जैसी ही सिग्नल भेजते थे। हर एक डिकॉय बनाने में करीब 10 हजार डॉलर तक खर्च आता है। अमेरिका और इजराइल के ड्रोन, जो कैमरा और इंफ्रारेड सेंसर से नुकसान का आकलन करते हैं, उन्हें लगा कि उन्होंने ईरान के एयर डिफेंस सिस्टम को तबाह कर दिया है। इन नकली ठिकानों के नष्ट होने और असली रडार के बंद रहने से अमेरिका और इजराइल को यह भरोसा हो गया कि ईरान का एयर डिफेंस पूरी तरह खत्म हो चुका है। इसी आधार पर अमेरिकी सेंट्रल कमांड और इजराइली वायुसेना ने यह मान लिया कि अब उन्हें बढ़त मिल गई है। यहां तक कि अमेरिका के रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने 19 मार्च की सुबह दावा भी किया कि ईरान की हवाई सुरक्षा को खत्म कर दिया गया है। लेकिन यही सबसे बड़ी गलती साबित हुई। इस भरोसे में आकर अमेरिका और इजराइल ने अपने सबसे एडवांस फाइटर जेट, जैसे एफ-35 को ईरान के अंदर गहराई तक भेजना शुरू कर दिया। 10 दिन बाद असली रडार सिस्टम स्टार्ट किए-दूसरी तरफ, ईरान ने चुपचाप अपने असली रडार सिस्टम फिर से चालू कर दिए और मजीद जैसे इंफ्रारेड सिस्टम को उन जगहों पर तैनात कर दिया, जहां से अमेरिका-इजराइल के फाइटर जेट्स आने की संभावना थी। जैसे ही एफ-35 उस इलाके में पहुंचा, उसे कोई कमजोर या बंद पड़ा डिफेंस सिस्टम नहीं मिला। बल्कि उसे पूरी तरह तैयार और मजबूत एयर डिफेंस सिस्टम का सामना करना पड़ा, जो पहले से ही उसी मौके का इंतजार कर रहा था। नोट- यह पूरी जानकारी ईरान के दावों और रिपोर्ट्स पर आधारित है। इसकी अभी तक स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है।

बंगाल में आज आ सकती है सप्लीमेंट्री वोटर लिस्ट,27 लाख वोटरों पर असर

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में आज सप्लीमेंट्री वोटर लिस्ट जारी हो सकती है। चुनाव आयोग के मुताबिक,एसएआर

के दौरान 'अंडर एडजुडिकेशन' में रखे गए करीब 63 लाख वोटरों में से 27 लाख के मामलों का वेरिफिकेशन पूरा हो चुका है। दरअसल, 28 फरवरी को जारी फाइनल वोटर लिस्ट में करीब 63 लाख वोटरों को 'अंडर एडजुडिकेशन' में रखा गया था। यानी जिनके डॉक्यूमेंट या पात्रता पर शक था, उनके नाम पर अंतिम फैसला रोककर जांच शुरू की गई।इनमें से 27 लाख मामलों

का वेरिफिकेशन पूरा हो चुका है। इन वोटरों के नाम रखने या हटाने का फैसला सप्लीमेंट्री वोटर लिस्ट में शामिल किया जाएगा।इसी बीच मालदा में एक बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) की मौत हो गई। परिवार का आरोप है कि काम के दबाव की वजह से उनकी जान गई। एसएआर प्रक्रिया के बाद अब तक 63.66 लाख नाम हटाए जा चुके हैं, जो कुल वोटरों का करीब 8.3फीसदी है। इससे वोटर बेस 7.66 करोड़ से घटकर 7.04 करोड़ रह गया है। वहीं, 60 लाख से ज्यादा वोटर अब भी 'अंडर एडजुडिकेशन' में हैं, जिन पर आगे फैसला होना है।मालदा जिले में एक बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) की हार्ट अटैक से मौत हो गई। 54 साल के बीएलओ उत्पल ठाकुर चांचल-II ब्लॉक के एक बूथ पर तैनात थे। परिवार का आरोप है कि एसआईआर प्रक्रिया के दौरान उन पर लगातार काम का दबाव था। उनके बूथ पर करीब 110 वोटर 'अंडर एडजुडिकेशन' में थे। जिससे लोग लगातार उनसे जानकारी लेने पहुंच रहे थे। हालांकि इस मामले में कोई पुलिस शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है। पश्चिम बंगाल के 294 सीटों पर 23 और 29 अप्रैल को दो फेज में वोटिंग होगी। 4 मई को रिजल्ट आएगा। जिन पांच राज्यों में चुनाव होने जा रहे हैं, उनमें एसएआर के बाद तमिलनाडु से सबसे ज्यादा वोटर्स के नाम कटे हैं। चुनाव आयोग ने बताया कि 27 अक्टूबर 2025 को एसएआर प्रक्रिया शुरू होने के दौरान राज्य में कुल 6,41,14,587 वोटर थे। करीब चार महीने चली एसएआर में 74,07,207 लोगों के नाम हटाए गए हैं। राज्य में अब 5,67,07,380 मतदाता पंजीकृत हैं।

केरल भाजपा अध्यक्ष चंद्रशेखर की उम्मीदवारी रद्द करने की मांग,कांग्रेस का दावा- बेंगलुरु में रु200 करोड़ का बंगला, हलफनामे में जानकारी छिपाई

नई दिल्ली/गुवाहाटी। कांग्रेस ने चुनाव आयोग से केरल भाजपा अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर की उम्मीदवारी रद्द करने की मांग की है। कांग्रेस का आरोप है कि चंद्रशेखर का बेंगलुरु के पॉश इलाके कोरमंगला में 49,000 स्क्वॉयर फीट का बंगला है। जिसकी कीमत करीब 200 करोड़ रुपए के आसपास है। केरल कांग्रेस ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा कि राजीव चंद्रशेखर आदतन अपराधी हैं। उन्हें लगता है कि वे इलेक्शन कमीशन ऑफ इंडिया को बार-बार गुमराह कर सकते हैं। उनके एफिडेविट से यह भी पता चलता है कि अरबपति बिजनेसमैन होने के बावजूद उनके पास कोई रहने की प्रॉपर्टी या कार नहीं है।हम आपसे रिक्वेस्ट करते हैं कि इस मामले में दखल दें और पीपल्स रिप्रेजेंटेशन एक्ट के तहत कैंडिडेट को डिसक्वालिफाई करें। नहीं तो, जनता सवाल करेगी कि क्या चुनाव आयोग निष्पक्ष काम कर रहा है कि नहीं।पश्चिम बंगाल में आज सप्लीमेंट्री वोटर लिस्ट जारी हो सकती है। एसएआर के दौरान 'अंडर एडजुडिकेशन' में रखे गए करीब 63 लाख वोटरों में से 27 लाख के मामलों का वेरिफिकेशन पूरा हो चुका है। असम चुनाव के लिए कांग्रेस ने 7 उम्मीदवारों की लिस्ट जारी की है। पार्टी 101 सीटों पर उम्मीदवार उतार चुकी है। पश्चिम बंगाल में सुवेंदु अधिकारी ने नंदीग्राम में भगवान राम की मूर्ति तोड़ने का आरोप लगाया। असदुद्दीन ओवैसी की AIMIM पार्टी पश्चिम बंगाल में हुमायूं कबीर की आम जनता उन्नयन पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ेगी। पुडुचेरी विधानसभा चुनाव के लिए तमिलगा वेत्री कड़गम ने 30 उम्मीदवारों की लिस्ट जारी की।पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में भाजपा नेताओं ने विधानसभा चुनाव की तैयारी के लिए मीटिंग की। यह मीटिंग मुचिपारा इलाके के एक होटल में हुई और इसमें अलग-अलग जिलों के बीजेपी उम्मीदवार शामिल हुए। इस मौके पर राज्य अध्यक्ष सुकांत मजूमदार, केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव और पार्टी के दूसरे नेता मौजूद थे।केरल के चेंगन्नूर विधानसभा सीट से बीजेपी उम्मीदवार एमवी गोपकुमार ने नामांकन दाखिल किया। उनके साथ छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय मौजूद रहे। पश्चिम बंगाल में चुनाव प्रचार के दौरान मछली बांटने को लेकर बीजेपी उम्मीदवार शरदवत मुखर्जी ने कहा कि बंगाल में लोग नवरात्रि के दौरान भी मछली खाते हैं। ऐसा नहीं है कि वे नहीं खाते। यहां सभी समुदाय नॉन-वेजिटेरियन हैं। खाने की आदतें अपनी पसंद के हिसाब से होती हैं।असम, केरल और पुडुचेरी विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने की प्रक्रिया आज शाम समाप्त हो जाएगी। तीनों राज्यों/केंद्र शासित प्रदेश में 9 अप्रैल को एक ही चरण में मतदान होगा। नामांकन पत्रों की जांच कल होगी, जबकि उम्मीदवार 26 मार्च तक नाम वापस ले सकेंगे।

कांग्रेस का ब्रिक्स और समिट को लेकर पीएम से सवाल,पूछा- पश्चिम एशिया संकट पर समिट आगे क्यों नहीं बढ़ा रहे 'विश्वगुरु'

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना

साधते हुए सवाल उठाया है कि वेस्ट एशिया संकट से निपटने के लिए BRICS+ समिट को आगे क्यों नहीं बढ़ाया जा रहा। पार्टी का आरोप है कि मोदी अमेरिका और इजराइल को नाराज नहीं करना चाहते। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पोस्ट में कहा- भारत इस साल नई दिल्ली में 18वीं BRICS+ समिट की मेजबानी करने वाला है। ऐसे में सरकार को वेस्ट एशिया संकट पर कूटनीतिक पहल के लिए इस मंच का इस्तेमाल करना चाहिए। खुद को 'विश्वगुरु' बताने वाले प्रधानमंत्री इस दिशा में पहल क्यों नहीं कर रहे हैं। रमेश ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को नाराज नहीं करना चाहते। केवल फोन कॉल के जरिए बातचीत की सीमाएं होती हैं, जबकि समिट के जरिए ठोस फैसले और आमने-सामने बातचीत ज्यादा प्रभावी हो सकती है।कांग्रेस ने पिछले हफ्ते भी केंद्र सरकार की आलोचना की थी। पार्टी का कहना था कि BRICS+ चेयर होने के बावजूद भारत ने वेस्ट एशिया संघर्ष पर कोई सामूहिक बयान जारी नहीं किया। 21 मार्च को भी कांग्रेस ने अमेरिका-इजराइल के हमले की निंदा न करने को लेकर सरकार पर सवाल उठाए थे।दरअसल, BRICS समिट 2026 की अध्यक्षता भारत कर रहा है। 18वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की जिम्मेदारी 1 जनवरी को ब्राजील से भारत को मिली थी। 15 जनवरी को विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने थीम, लोगो और वेबसाइट का शुभारंभ किया था। पीएम मोदी ने 2025 में रियो डी जनेरियो में हुए 17वें ब्रिक्स समिट में भारत की योजना को साझा किया था। भारत का लक्ष्य ब्रिक्स को एक नए रूप में पेश करना है, जिसका फोकस है- मानवता पहले-भारत ब्रिक्स को लोगों के हितों को प्राथमिकता देने वाला मंच बनाएगा, जैसा कि उसने जी20 की अध्यक्षता में किया था। लचीलापन और नवाचार- भारत वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए नई तकनीकों और सहयोग पर जोर देगा। सतत विकास -जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण और वैश्विक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर ध्यान दिया जाएगा। ग्लोबल साउथ की आवाजः भारत विकासशील देशों के हितों को बढ़ावा देगा और वैश्विक संस्थानों जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, आईएमएफ और विश्व बैंक में सुधार की मांग करेगा। आतंकवाद विरोधी और आर्थिक मजबूतीः भारत आतंकवाद के खिलाफ कदम और आर्थिक सहयोग को मजबूत करने पर जोर देगा।17वां BRICS समिट 6-7 जुलाई, 2025 को ब्राजील के रियो डी जनेरियो में हुआ। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा की अध्यक्षता में इस समिट का थीम था 'ग्लोबल साउथ के लिए समावेशी और टिकाऊ सहयोग'। इसमें ब्रिक्स के सदस्य देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, इथियोपिया, इंडोनेशिया, ईरान, यूएई) और साझेदार देशों के नेता शामिल हुए थे। मोदी इसमें भाग लेने के लिए ब्राजील गए थे। ये 12वां था जब मोदी BRICS समिट में भाग ले रहे हैं।प्रधानमंत्री ने कहा था, 'ग्लोबल साउथ के देश अक्सर डबल स्टैंडर्ड का शिकार रहे हैं। चाहे विकास हो, संसाधनों की बात हो, या सुरक्षा से जुड़े मुद्दों की, ग्लोबल साउथ को कभी प्राथमिकता नहीं दी गई है। इनके बिना, वैश्विक संस्थाएं ऐसे मोबाइल की तरह हैं, जिसमें सिम कार्ड तो है लेकिन नेटवर्क नहीं है।'

4 महीने बाद आज जेल से निकलेंगे बाहुबली अनंत सिंह,3 लाख रसगुल्ले बन रहे,समर्थको के लिए समोसा, पुलाव, पनीर की सब्जी का इंतजाम

पटना। मोकामा से जदयू विधायक और बाहुबली नेता अनंत सिंह को आरजेडी नेता दुलारचंद हत्याकांड में पटना ज्ञ से जमानत मिल गई है। आज यानी सोमवार को जेल से बाहर आएंगे। अनंत सिंह जेल से छूटने के बाद सीधे विधायक आवास जाएंगे। अनंत सिंह के ग्रैंड वेलकम की तैयारी की गई है। अनंत सिंह के आवास को सजाया गया है। समर्थकों के लिए बड़ी दावत का इंतजाम किया गया है। जिसके लिए 3 लाख रसगुल्ले बनाए गए हैं। समोसा, पुड़ी,सब्जी,पुलाव समेत अन्य व्यंजनों का इंतजाम किया गया है। अनंत सिंह पटना वाले आवास से मंगलवार (24 मार्च) को मोकामा के लिए रवाना होंगे। अपने विधानसभा में 50किमी लंबा रोडशो करेंगे। इस दौरान बड़हिया महारानी स्थान मंदिर तक मोकामा सड़क मार्ग से जाएंगे। रास्ते में कई जगह समर्थक उनका स्वागत करेंगे।30 अक्टूबर 2025 को बिहार विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान दुलारचंद यादव की

हत्या हुई थी। जिसके बाद 1 नवंबर को पटना एसएसपी ने मोकामा आवास से विधायक को अरेस्ट किया था। कोर्ट में पेशी के बाद 2 नवंबर को अनंत सिंह को बेऊर जेल भेजा गया, लगभग 4 महीने बाद बेल मिली है।अनंत सिंह के रिहा होने की खुशी में अनंत सिंह के पटना के माल रोड स्थित आवास पर भव्य स्वागत की तैयारी चल रही है। पटना आवास पर बड़ा-सा पंडाल बनाया जा रहा है। करीब 1 से डेढ़ हजार कुर्सियां मंगाई गई हैं। गर्मी को देखते हुए बड़े-बड़े पंखे-कूलर भी मंगाए जा रहे हैं। ताकि उनके समर्थकों को परेशानी न हो। यहां कल करीब 10-15 हजार से अधिक समर्थकों के जुटने की संभावना है। उनके समर्थकों का कहना है कि जब उनका काफिला चलता है, तो गाड़ियों की गिनती नहीं होती है। अनगिनत गाड़ियां चलती हैं। हजारों की संख्या में जुटने वाले समर्थकों के लिए अनंत सिंह के पटना आवास पर भोज की भी तैयारी की जा रही है। लोगों के लिए तरह-तरह के व्यंजन बनाए जाएंगे।तकरीबन दो से तीन लाख में रसगुल्ले बनाए जा रहे हैं। जो बाढ़ में बनाया जा रहा है। वहीं से रसगुल्ले बनकर पटना लाया जाएगा। पटना में रसगुल्ले के अलावा बाकी सब यहीं बनेगा। अब जानिए दुलारचंद हत्याकांड की पूरी कहानी-हत्या के दूसरी रात हुई थी गिरफ्तारी-30 अक्टूबर को मोकामा टाल में दुलारचंद की हत्या की गई थी। आरोप अनंत सिंह और उनके समर्थकों पर लगा। 1 नवंबर की देर रात पटना के एसएसपी कार्तिकेय शर्मा खुद अनंत सिंह के आवास मोकामा पहुंचे और उन्हें गिरफ्तार किया। करीब 4 महीने से वो जेल में बंद हैं। पिछली सुनवाई में अनंत सिंह के वकील ने बेल को लेकर पटना हाईकोर्ट में 4 दलील रखी थी। पटना HC में रखी गई 4 दलीलें-1. अनंत सिंह पर आरोप था कि उन्होंने दुलारचंद यादव के बाएं पैर की ऐड़ी में खुद गोली मारी थी। जबकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मौत के कारण में लाठी से मारना और गाड़ी से कुचलने का जिक्र है। 2. महत्वपूर्ण दलील यह दी कि घटना स्थल पर मौजूद पुलिसकर्मियों के बयान लिए गए थे और किसी ने भी अपने बयान में ये नहीं कहा कि अनंत सिंह ने गोली चलाई थी। 3. दुलारचंद के जिस पोते के बयान पर केस दर्ज हुआ, उसने अपने पिता को जब पहला कॉल किया था तब कहा कि दादा जी की मौत हो गई है, ये नहीं कहा कि उनकी हत्या हुई है। 4. अनंत सिंह एक पॉलिटिशियन हैं और इस वजह से भी लोग उनके ऊपर बेवजह का आरोप लगाते रहते हैं।पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार, शरीर पर कई जगह गहरे घाव और खून जमने के निशान मिले। फेफड़े (लंग्स) फटे हुए मिले, जिससे अधिक मात्रा में इंटरनल ब्लीडिंग हुई है। छाती की कई पसलियां टूटी हुई पाई गईं। खासकर दाहिनी ओर रीढ़ की हड्डी (वर्टिब्रा) के पास भी चोटों के निशान मिले। सिर, घुटने, टखने और पीठ पर गहरे जख्म और चोटें पाई गईं। इसी के साथ दाहिने पैर के पास फायरआर्म (गनशॉट) इंजरी का जिक्र, यानी गोली लगने के निशान हैं। पटना एसएसपी कार्तिकेय शर्मा के मुताबिक, इस मामले में अब तक 4 एफआईआर दर्ज की गई। बता दें कि पहला केस भदौर थाने में दुलारचंद के पोते नीरज कुमार ने दर्ज कराया। दूसरा अनंत के समर्थक जितेंद्र कुमार ने और तीसरा केस पुलिस ने अपने बयान पर किया है। दुलारचंद ने अनंत सिंह की पत्नी को कहा था नाचने वाली-दुलारचंद ने हत्या से 2 दिन पहले अनंत सिंह की पत्नी के लिए आपत्तिजनक बातें कहीं थीं। उन्होंने कहा था, 'वो नीलम देवी नहीं नीलम खातून है। चुनाव लड़ रही थी तो लोग दरी लेकर दौड़ रहे थे। कह रहे थे कि नाचने वाली आई है। अनंत सिंह ने उसे रख लिया। दोनों की कोई शादी हुई थी? नीलम देवी भूमिहार थोड़े ही है।' जदयू विधायक अनंत सिंह ने ऐलान कहा है कि वो अब विधानसभा चुनाव का चुनाव नहीं लड़ेंगे। राज्यसभा चुनाव के लिए वोटिंग करने के बाद जब वो बाहर निकले तो उन्होंने मीडिया से बात की। अनंत सिंह से पूछ गया कि अगला सीएम कौन होगा। इस पर उन्होंने कहा कि नीतीश जी तय करेंगे। बिना नीतीश के चुनाव लड़के के सवाल पर उन्होंने कहा कि, 'नीतीश नहीं रहेंगे तो मैं भी चुनाव नहीं लड़ूंगा।' निशांत और तेजस्वी में से आपको कौन अच्छा लगता है। इस सवाल के जवाब को अनंत सिंह टाल गए।

विशाल ददलानी ने धुरंधर 2 पर कसा तंज:नोटबंदी वाले सीन पर सवाल उठाए
बोले- फिल्म सिर्फ मनोरंजन के लिए, फैक्ट्स अलग हैं

मुंबई। रणवीर सिंह की फिल्म 'धुरंधरः द रिवेंज' की बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड ब्रेकिंग परफॉर्मेंस के बीच

सिंगर विशाल ददलानी ने फिल्म की आलोचना की है। उन्होंने सोशल मीडिया पर बिना नाम लिए आदित्य धर के निर्देशन पर निशाना साधा है। विशाल ददलानी ने फिल्म में दिखाए गए नोटबंदी के मुद्दे पर लिखा फैक्ट्स तो फैक्ट्स ही होते हैं। फिल्म मनोरंजन के लिए देखिए, लेकिन जानकारी सही सोर्स से लीजिए। यह याद रखना जरूरी है कि फिल्म सिर्फ मनोरंजन है, फैक्ट्स तो फैक्ट्स ही होते हैं, चाहे कुछ भी हो जाए। 'फिल्म में साल 2016 की नोटबंदीको एक मास्टरस्ट्रोक के रूप में दिखाया गया है। फिल्म के मुताबिक, यह पीएम का 'ऑपरेशन ग्रीन लीफ' नाम का एक सीक्रेट मिशन था, जिसका मकसद दाऊद इब्राहिम और जावेद खनानी के 60,000 करोड़ रुपये के नकली नोटों के नेटवर्क को तबाह करना था। फिल्म में दिखाया गया है कि इस फैसले से आतंकी फंडिंग पूरी तरह बर्बाद हो गई।विशाल ददलानी ने रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के आंकड़ों और न्यूज आर्टिकल्स के हवाले से दावा किया कि नोटबंदी के बाद 99.3फीसदी पुराने नोट वापस बैंकिंग सिस्टम में लौट आए थे। नोटबंदी के बावजूद टेरर फंडिंग और आतंकी हमले (जैसे 2019 का पुलवामा हमला) बंद नहीं हुए।आलोचनाओं के बावजूद धुरंधर 2 बीते 4 दिनों में वर्ल्ड वाइड 750 करोड़ की कमाई कर चुकी है। कल यानी रविवार को फिल्म ने भारत में 114.85 करोड़ रुपए की कमाई की। यह फिल्म पुष्पा 2' (रु762 करोड़) के बाद भारतीय सिनेमा की दूसरी सबसे बड़ी ओपनिंग वीकेंड वाली फिल्म बन गई है।

युद्ध और तनाव के बीच दुबई जाएंगे राम कपूर,बुर्ज खलीफा वाले घर का रिनोवेशन कराएंगे

मुंबई। मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव और युद्ध जैसे हालातों के

बीच टीवी और बॉलीवुड एक्टर राम कपूर अगले हफ्ते दुबई जाने की तैयारी कर रहे हैं। दरअसल, दुबई के बुर्ज खलीफा में राम कपूर का अपना एक घर है, जिसका काम लंबे समय से अधूरा पड़ा है। वहां के मौजूदा हालात सफर के लिए सुरक्षित नहीं माने जा रहे हैं, लेकिन काम पूरा करने की मजबूरी और डेडलाइन के दबाव की वजह से राम कपूर यह जोखिम उठा रहे हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया से बातचीत में राम कपूर ने अपने इस फैसले की वजह बताई। उन्होंने कहा, 'पिछली बार हम वहां करीब एक हफ्ते के लिए गए थे। मुझे लगा था कि मुंबई वापस आकर थोड़े दिन इंतजार करूंगा और जब हालात शांत होंगे तब काम शुरू करवाऊंगा। लेकिन अब मेरे पास कोई और चारा नहीं बचा है। ऐसा नहीं लग रहा कि हालात जल्द ठीक होंगे, बल्कि ये और बिगड़ते जा रहे हैं। अगर ऐसा ही रहा तो मैं और देर नहीं कर सकता। मुझे तय टाइमलाइन के हिसाब से काम पूरा करना ही होगा।'राम कपूर ने बताया कि दुबई जाने की जल्दबाजी इसलिए है क्योंकि बुर्ज खलीफा में उनके घर का रिनोवेशन का काम रुका हुआ है। उन्होंने कहा, 'हमें काम पूरा करने के लिए जरूरी परमिशन और एक तय समय-सीमा मिली थी, जो अब खत्म होने वाली है। मैं समय बढ़ाने की गुजारिश कर सकता हूं, लेकिन पता नहीं ये युद्ध वाले हालात कब तक चलेंगे। दुबई में मेरे जितने भी जान-पहचान वाले हैं, वे भी अपनी जिंदगी सामान्य तरीके से जीने की कोशिश कर रहे हैं।

क्या आपको पीरियड्स के समय बुखार आता है,डॉक्टर से जानें क्या है पीरियड फ्लू, किन्हें ज्यादा जोखिम, कैसे करें बचाव

नयी दिल्ली। पीरियड साइकल में काफी असहज अनुभव होता है। खासतौर पर उन महिलाओं के लिए अधिक

असहज होता है, जिनका मेंस्ट्रुअल साइकल अनियमित रहता है। जिन महिलाओं को हर महीने पीरियड फ्लू होता है, उनके लिए यह अनुभव और भी ज्यादा तकलीफदेह हो सकता है। इसमें हर बार पीरियड्स में फ्लू जैसे लक्षणों का सामना करना पड़ता है। पीरियड से पहले गले में खराश, बुखार और शरीर में कमजोरी या फ्लू जैसी स्थिति होती है। पीरियड महिलाओं की जिंदगी में नेचुरल क्रिया है, लेकिन ये कई बार काफी तकलीफदेह होते हैं। इसका कोई निश्चित आंकड़ा नहीं है कि कितनी महिलाएं पीरियड्स फ्लू का सामना करती हैं। हालांकि, 90फीसदी महिलाओं को प्रीमेंस्ट्रुअल सिंड्रोम का सामना करना पड़ता है। लगभग इन सभी महिलाओं को पीरियड्स फ्लू के लक्षणों का सामना भी करना पड़ता है। इसलिए 'फिजिकल हेल्थ' में आज जानेंगे कि पीरियड्स फ्लू क्या है। साथ ही जानेंगे कि- इसके क्या लक्षण हैं? पीरियड्स फ्लू के क्या कारण हैं? इससे कैसे राहत मिल सकती है? पीरियड फ्लू क्या है? इसे मेंस्ट्रुअल फ्लू भी कहा जाता है। यह एक ऐसी स्थिति है जो महिलाओं को उनके पीरियड शुरू होने से पहले, दौरान या बाद में प्रभावित करती है। भले ही यह कोई मेडिकली पुष्टि की गई बीमारी नहीं है, लेकिन यह बहुत सी महिलाओं में देखने को मिलती है। पीरियड के समय शरीर में होने वाले हॉर्मोनल बदलावों के कारण हर महिला पर अलग-अलग असर होते हैं। कुछ लोगों को पीरियड से ठीक पहले ही पीएमएस यानी प्री-मेंस्ट्रुअल सिंड्रोम का सामना करना पड़ता है। जबकि कुछ को पूरे पीरियड के दौरान तबीयत खराब लगती है। इसमें पीरियड फ्लू जैसे लक्षण महसूस होते हैं इसका कोई स्पष्ट आंकड़ा या वजह नहीं है कि कितनी महिलाओं में पीरियड फ्लू के लक्षण दिखते हैं, लेकिन प्री-मेंस्ट्रुअल सिंड्रोम बहुत कॉमन है। लगभग 90फीसदी महिलाओं को जीवन में कभी-न-कभी पीएमएस के साथ ये लक्षण दिखते हैं। ज्यादातर मामलों में ये लक्षण हल्के होते हैं और कंट्रोल किए जा सकते हैं। पीएमएस के ज्यादा गंभीर रूप को प्री-मेंस्ट्रुअल डिस्फोरिक डिसऑर्डर कहा जाता है। यह लगभग 5फीसदी महिलाओं को प्रभावित करता है। डॉ. मितुल के मुताबिक, ये एक

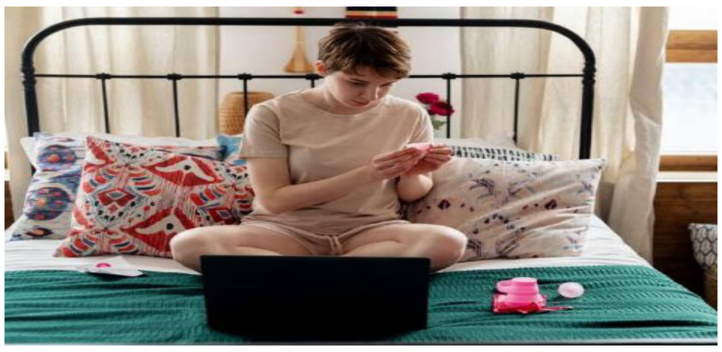

मानसिक स्वास्थ्य संबंधी बीमारी है, क्योंकि इससे गंभीर मानसिक तनाव हो सकता है। जिस तरह सामान्य फ्लू के कई कारण हो सकते हैं, वैसे ही पीरियड फ्लू के भी कई कारण होते हैं। इसके सबसे कॉमन कारण ग्राफिक में देखिए। 1. हॉर्मोनल बदलाव- एस्ट्रोजन और प्रोजेस्टेरॉन हार्मोन के स्तर में उतार-चढ़ाव शरीर में सूजन और इम्यून सिस्टम की प्रतिक्रिया पैदा कर सकते हैं, जिससे फ्लू जैसे लक्षण महसूस होते हैं। 2. पोषण की कमी- अगर शरीर में विटामिन डी, आयरन, जिंक या मैग्नीशियम जैसे जरूरी पोषक तत्वों की कमी हो तो थकान, सिरदर्द और मांसपेशियों में दर्द जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। 3. तनाव-तनाव इम्यून सिस्टम को कमजोर कर देता है, जिससे शरीर संक्रमण और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की चपेट में आ सकता है। 4. संक्रमण- सामान्य सर्दी-जुकाम जैसे संक्रमण पीरियड के लक्षणों को और खराब कर सकते हैं और पीरियड फ्लू जैसी स्थिति पैदा कर सकते हैं। 5. ऑटोइम्यून डिजीज-लूपस और रुमेटॉइड अर्थराइटिस जैसी बीमारियों से पीड़ित महिलाओं में इम्यून सिस्टम की गड़बड़ी के कारण शरीर में सूजन हो सकती है। 6. एलर्जी-खाने या किसी और चीज से एलर्जी होने पर भी पीरियड फ्लू जैसे लक्षण दिख सकते हैं। इसमें मतली , सिरदर्द और कमजोरी जैसे लक्षण दिख सकते हैं। 7. एंडोमेट्रिओसिस-इस स्थिति में बच्चेदानी की परत जैसा टिशू गर्भाशय के बाहर बढ़ने लगता है, जिससे भारी और दर्दनाक पीरियड, पेट फूलना और थकावट होती है। 8. एडेनोमायोसिस-इसमें गर्भाशय की परत मांसपेशियों

में अंदर तक बढ़ जाती है, जिससे पीरियड के दौरान बहुत ज्यादा ब्लीडिंग और तेज ऐंठन होती है। 9. थायरॉइड की समस्या- हाइपोथाइरॉइडिज्म और हाइपरथाइरॉइडिज्म दोनों से हॉर्मोनल असंतुलन हो सकता है, जिससे पीरियड से पहले बुखार और फ्लू जैसे लक्षण आ सकते हैं। 10. दवाइयां- कुछ दवाइयां, जैसे पेनकिलर या बर्थ कंट्रोल पिल्स गले में खराश, कंपकंपी, मांसपेशियों में दर्द जैसे फ्लू के लक्षण पैदा कर सकती हैं। कैसे मिलेगी राहत-अगर आपको पीरियड फ्लू हो गया है, तो ऐसे कई आसान उपाय हैं जिनसे आप इसके लक्षणों को कम कर सकते हैं और आराम पा सकते हैं। अगर इन सुझावों पर ध्यान दें तो ये मददगार हो सकता है-पर्याप्त आराम करें: शरीर को ठीक होने के लिए पर्याप्त नींद और आराम दें। इससे थकान कम होगी और शरीर संक्रमण से लड़ पाएगा। पर्याप्त पानी पिएं: खूब सारा पानी और हर्बल चाय जैसी तरल चीजें पिएं। इससे सिरदर्द, पेट फूलना और कमजोरी जैसे लक्षण कम हो सकते हैं। गर्म सिंकाई करें: पेट के निचले हिस्से या कमर पर गर्म पानी की बोतल या हीट पैड रखने से ऐंठन और मांसपेशियों के दर्द में राहत मिलती है। दवाई लें: इबुप्रोफेन या पेरासिटामोल जैसी ओवर-द-काउंटर दवाएं दर्द और बुखार को कम करने में मदद कर सकती हैं। ट्रिगर से बचें: कैफीन, तीखा खाना और शराब जैसी चीजें पीरियड फ्लू, बदहजमी और माइग्रेन को बढ़ा सकती हैं। इनसे दूर रहना बेहतर है। हल्की एक्सरसाइज करें: अगर शरीर साथ दे तो हल्की सैर या योग करें। इससे न सिर्फ शारीरिक लक्षणों में राहत मिलती है, बल्कि तनाव और बेचैनी भी कम होती है। गले के लिए गरारे करें: अगर पीरियड से पहले गले में खराश हो रही है, तो नमक के पानी से गरारे करें लें, खासकर रात में जब दर्द ज्यादा महसूस होता है। गर्म कपड़े पहनें: अगर आपको पीरियड के दौरान बुखार या ठंड लग रही हो, तो खुद को गर्म रखें और परतों में कपड़े पहनें। ह्यूमिडिफायर का इस्तेमाल करें: अगर आपका गला सूख रहा है या जलन हो रही है, तो कमरे में ह्यूमिडिफायर लगाएं। इससे हवा में नमी बनी रहेगी और राहत मिलेगी।

9 साल की बेटी अलग कमरे में नहीं सोती,डरती और रोती है, उसे इंडीपेंडेंट कैसे बनाएं, हमसे अलग सोने की आदत कैसे डालें

नयी दिल्ली। विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर से सवाल जवाब के माध्यम से. सवाल- मैं इंदौर का

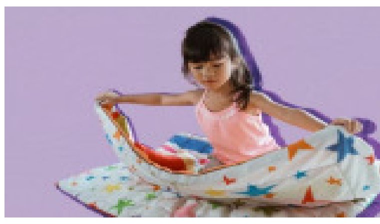

रहने वाला हूं। मेरी 9 साल की बेटी है। वह रात में अकेले सोने से डरती है। वह अक्सर कहती है कि उसे अंधेरे से डर लगता है और वह सपना देखती है कि हम कहीं चले गए हैं। हमारा मानना है कि अब वह बड़ी हो गई है और उसे अलग कमरे में सोने की आदत डालनी चाहिए ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके। हम उसकी भलाई चाहते हैं। लेकिन हमारे लिए यह तय कर पाना मुश्किल हो गया है कि आखिर किस उम्र में बच्चे को अकेले सोने के लिए तैयार करना चाहिए। हमारा डर यह भी है कि कहीं उसे अकेलापन न महसूस हो या यह

बदलाव उसके आत्मविश्वास को नुकसान न पहुंचा दे। कृपया मेरा मार्गदर्शन करें। जवाब- आपकी चिंता स्वाभाविक है। बहुत से पेरेंट्स को इस स्थिति का सामना करना पड़ता है। हालांकि इसमें बहुत चिंता करने की बात नहीं है। आपकी बेटी 9 साल की उम्र में भी आपके साथ ही सो रही है या रात में अकेले सोने से डरती है तो इसका मतलब है कि वह बचपन से ही आपके पास सोती आ रही है। यह उसके लिए सुरक्षा, सुकून और प्यार का प्रतीक बन चुका है, जो एक स्वाभाविक और सुंदर अनुभव है। लेकिन अब समय है कि प्यार के साथ-साथ उसमें धीरे-धीरे स्वतंत्रता के बीज भी बोए जाएं। हेल्दी पेरेंटिंग का मतलब है 'प्यार और स्वतंत्रता का संतुलन' बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं, खुद से खाना सीखते हैं, पॉटी-सुसु बताने लगते हैं, स्कूल जाते हैं और पानी की बोतल से खुद पानी पीना सीखते हैं। ये छोटी-छोटी चीजें आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के संकेत हैं। वह समय के साथ छोटे-छोटे काम खुद से करना सीखते हैं, जबकि बचपन में ये सारे काम कोई बड़ा उनके लिए कर रहा था। इसी तरह से अकेले सोना भी उस स्वतंत्रता की दिशा में एक कदम है। बच्चे को बचपन से ही आत्मनिर्भर बनाना जरूरी- अगर बच्चे बढ़ती उम्र में भी हर काम के लिए पेरेंट्स पर निर्भर रहते हैं तो इसका मतलब है कि अब तक के पालन-पोषण में कुछ कमी रह गई है। कुल मिलाकर इस समय उन्हें स्वतंत्रता देने की जरूरत है। छोटे-छोटे कामों से इसकी शुरुआत करें। बच्चे की क्षमता के अनुसार जितने काम उसके दायरे में आते हैं, वे काम करने के लिए उसे प्रेरित करें। चाहे वह घर के काम हों या उसके खुद के काम। जैसेकि 'पानी का गिलास ला दो', 'अखबार दे दो' और 'ये पैकेट डस्टबिन में फेंक दो' वगैरह-वगैरह। ये काम देखने में छोटे लग सकते हैं, लेकिन इनसे बच्चा महसूस करता है कि वह परिवार का एक अहम हिस्सा है। जब वह कोई काम खुद करता है तो उसकी तारीफ करें और कहें, 'वाह! अब तो तुम बड़े हो गए हो।' इससे वह स्वाभाविक रूप से जिम्मेदारी लेना शुरू करता है। बच्चे में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए कुछ

और कदम उठा सकते हैं। कई बार माता-पिता प्यार में ऐसा व्यवहार करने लगते हैं, जो अनजाने में बच्चे को बहुत ज्यादा डिपेंडेंट बना देता है। जैसेकि- खाना भी मां ही खिलाएं, कपड़े भी मां ही पहनाएं, सामान भी कोई और उठाए, जिस चीज की जरूरत हो उसे बोलने से पहले ही पूरा कर दिया जाए। ऐसे में बच्चा हर छोटी-बड़ी चीज के लिए दूसरों पर निर्भर रहना सीख जाता है। इससे वह न जिम्मेदारी सीखता है, न निर्णय लेना, न धैर्य, न आत्मविश्वास। वह हर काम में किसी और की मदद ढूंढने लगता है। इसलिए पेरेंट्स को चाहिए कि वे बच्चे को बचपन से ही अपने छोटे-छोटे फैसले लेने दें, उसे अपने काम खुद करना सिखाएं। याद रखें कि हर बार आगे बढ़कर मदद करने से ज्यादा जरूरी उसे यह भरोसा देना है कि वह ये काम खुद भी कर सकता है। इन छोटे-छोटे कामों और बदलावों से बच्चे में जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है, जो उसे अकेले सोने के लिए प्रेरित करती है। इसके साथ ही माता-पिता को यह समझना चाहिए कि अकेले सोना भी आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनने की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। यह कोई सजा नहीं, बल्कि बच्चे के लिए खुद पर भरोसा करना सीखने का एक अवसर है। इसलिए जरूरी है कि पहले उसे मानसिक रूप से तैयार करें, प्यार और स्नेह के साथ प्रेरित करें और समय आने पर धीरे-धीरे सोने की यह स्वतंत्रता उसे सौंपें। इसके लिए धीरे-धीरे कोशिश करें और इस दौरान कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें। बच्चे को अचानक खुद से न करें दूर-बच्चे को अचानक अलग करना सही तरीका नहीं है। अगर उसे अचानक अकेले सोने के लिए मजबूर किया जाता है तो वह खुद को असुरक्षित, असहाय और अस्वीकृत महसूस कर सकता है। यह बदलाव उसके आत्मविश्वास को मजबूत करने के बजाय कमजोर कर सकता है। ऐसे में बच्चा या तो हर वक्त माता-पिता की छाया में रहना चाहेगा या फिर भीतर ही भीतर डर और चिंता को दबाकर जीना शुरू कर देगा। इसलिए जरूरी है कि यह बदलाव धीरे-धीरे, प्यार और समझदारी से किया जाए ताकि वह न सिर्फ अलग सोना सीखे, बल्कि खुद पर भरोसा करना भी। अंत में यही कहूंगी कि बच्चों को स्वतंत्र बनाना है तो पहले उन्हें सुरक्षित महसूस कराना होगा क्योंकि आत्मनिर्भरता वहीं पनपती है, जहां विश्वास और भावनात्मक जुड़ाव की जड़ें गहरी हों। इससे उसमें धीरे-धीरे अलग सोने की आदत विकसित होगी।

कंगना रनोट हुई 40 की,आदित्य पंचोली के डर से बिल्डिंग से कूदीं,चंबल में डाकुओं के गन पॉइंट पर आईं, 4 नेशनल अवॉर्ड जीतकर बनाया रिकॉर्ड

मुंबई। साल था 2005 का जब 18-19 साल की लड़की, मुंबई में हीरोइन बनने का सपना लेकर आई थी, ऑडिशन के जरिए काम ढूंढ रही थी। एक दिन, जब वो कॉफी के एक एड के लिए गई, तब कुछ लड़कियां फिल्म गैंगस्टर के ऑडिशन के लिए महेश भट्ट के ऑफिस जा रही थीं। वो भी उनके साथ चली गई और ऑडिशन दे दिया। पहले तो उसे वो रोल नहीं मिला, लेकिन जब चुनी गई एक्ट्रेस से संपर्क नहीं हो पाया, तो उसे मेकर्स का अचानक फोन आया और पूछा, 'पासपोर्ट है? अगर नहीं है, तो एक हफ्ते में बनवा लो, फिल्म मिल सकती है।' इसके बाद उसे फिल्म मिली और उसकी फिल्म गैंगस्टर सुपरहिट साबित हुई और वो रातों-रात स्टार बन गई। हम बात कर रहे हैं कंगना रनोट की।आज वही कंगना 40 साल की हो चुकी हैं। उनके जन्मदिन के खास मौके पर जानिए उनकी जिद, संघर्ष और कामयाबी के दिलचस्प किस्से-माता-पिता डॉक्टर बनाना चाहते थे -कंगना का जन्म 23 मार्च 1986 को हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले के भांबला (अब सूरजपुर) में एक राजपूत परिवार में हुआ। उनकी मां आशा रनोट एक स्कूल टीचर हैं, जबकि पिता अमरदीप रनोट एक बिजनेसमैन हैं। संयुक्त परिवार में पली-बढ़ीं कंगना बचपन से ही जिद्दी और विद्रोही स्वभाव की थीं और समाज में लड़कियों के प्रति भेदभाव पर सवाल उठाती थीं।कंगना के माता-पिता उन्हें डॉक्टर बनाना चाहते थे और उन्होंने चंडीगढ़ के डीएवी स्कूल में मेडिकल की पढ़ाई भी शुरू की थी। हालांकि, 12वीं में केमिस्ट्री के टेस्ट में फेल होने और मॉडलिंग/एक्टिंग में रुचि के कारण उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। अचार और ब्रेड पर भी किया गुजारा-महज 16 साल की उम्र में कंगना अपनी खुद की पहचान बनाने की तलाश में दिल्ली आ गईं। यहां उन्होंने मॉडलिंग से शुरुआत की, फिर एक्टिंग की ओर रुख किया और अस्मिता थिएटर ग्रुप में डायरेक्टर अरविंद गौर के मार्गदर्शन में एक्टिंग सीखी और नाटकों में हिस्सा लिया। फिर अरविंद गौर की ही सलाह पर फिल्मों में किस्मत आजमाने के लिए कंगना मुंबई पहुंच गईं। मुंबई पहुंचने के बाद कंगना को कई बार केवल ब्रेड और अचार खाकर दिन गुजारने पड़े। 'गैंगस्टर' में रोल पहले चित्रांगदा को मिला था साल 2006 में कंगना ने फिल्म गैंगस्टर से बॉलीवुड में कदम रखा था। पहली फिल्म गैंगस्टर मिलने को लेकर कंगना ने टीवी शो 'आप की अदालत' में बताया था कि एक दिन वह कॉफी के एक एड का ऑडिशन देने गई थीं, तभी उन्होंने देखा कि कुछ लड़कियां महेश भट्ट के ऑफिस फिल्म गैंगस्टर के ऑडिशन के लिए जा रही हैं। जिसके बाद कंगना भी ऑडिशन देने के लिए चली गईं। ऑडिशन के बाद फिल्म के मेकर्स

ने उन्हें बुलाया कंगना की तारीफ तो की, लेकिन कहा कि वह इस रोल के लिए काफी छोटी हैं, क्योंकि किरदार एक बच्चे की मां का था। इसके बाद उस वक्त इस रोल के लिए एक्ट्रेस चित्रांगदा सिंह को सेलेक्ट कर लिया गया।लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। शूटिंग से ठीक एक हफ्ते पहले अचानक कुछ पर्सनल वजहों से चित्रांगदा ने मेकर्स का फोन उठाना बंद कर दिया। इसके बाद कंगना को फोन आया और पूछा गया कि क्या उनके पास पासपोर्ट है? कंगना के पास पासपोर्ट नहीं था, लेकिन उन्हें कहा गया कि एक हफ्ते में बनवा लो, तो उन्हें फिल्म मिल सकती है। इसके बाद कंगना ने अपने पिता की मदद से सिर्फ 2 दिन में पासपोर्ट बनवाया और इस तरह उन्हें यह फिल्म मिली। इस फिल्म में उनके एक्टिंग को काफी सराहा गया और उन्हें फिल्मफेयर अवॉर्ड फॉर बेस्ट फीमेल डेब्यू मिला। फैशन के लिए पहला नेशनल अवॉर्ड मिला- गैंगस्टर के बाद कंगना ने वो लम्हे और लाइफ इन ए मेट्रो जैसी फिल्मों में इमोशनल और मुश्किल किरदार निभाकर अपनी पहचान मजबूत की।साल 2008 में आई फिल्म फैशन उनके करियर का टर्निंग पॉइंट साबित हुई, जिसके लिए उन्हें बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस के लिए पहला नेशनल अवार्ड मिला।इसके बाद साल 2009 से 2012 के बीच कंगना के करियर में उतार-चढ़ाव आए। 2009 में उन्होंने फिल्म राजः द मिस्ट्री कंटिन्यूज़ में एक मॉडल की भूमिका निभाई, जो हिट रही, लेकिन उन्हें एक जैसे रोल मिलने लगे। उसी साल आई फिल्म वादा रहा और एक निरंजन ने खास प्रदर्शन नहीं किया। 2010 में फिल्म काइट्स में उनका छोटा सा रोल था। हालांकि, फिल्म वन्स अपॉन ए टाइम इन मुंबई में उनके काम की तारीफ हुई। बाद की फिल्में नॉक आउट और नो प्रॉब्लम उनके करियर को ज्यादा आगे नहीं ले जा सकीं। लेकिन फिर 2011 में आई फिल्म तनु वेड्स मनु ने उनकी इमेज बदल दी और दर्शकों ने उनके कॉमिक अंदाज को भी खूब पसंद किया। 2013 में कृष 3 जैसी सुपरहिट फिल्म के बाद कंगना ने 2014 में क्वीन से अपने करियर को नई ऊंचाई दी। इस फिल्म में एक साधारण लड़की के आत्मनिर्भर बनने की कहानी ने दर्शकों का दिल जीत लिया और उन्हें बेस्ट एक्ट्रेस का नेशनल अवॉर्ड मिला।इसके बाद तनु वेड्स मनु रिटर्न्स (2015) में डबल रोल निभाकर उन्होंने लगातार दूसरा नेशनल अवॉर्ड जीता। आगे चलकर फिल्म मणिकर्णिकाः द क्वीन ऑफ झांसी और पंगा के लिए उन्हें चौथा राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। बता दें कि कंगना किसी महिला कलाकार द्वारा जीते गए नेशनल अवॉर्ड्स की संख्या में दूसरे स्थान पर हैं। शबाना आजमी पहले स्थान पर हैं, जिन्हें 5 नेशनल अवॉर्ड मिले हैं।कंगना फिल्मों के अलावा अपने बयानों और विवादों के कारण भी खबरों में रही हैं। उन्होंने बॉलीवुड एक्टर आदित्य पंचोली पर शारीरिक, मानसिक और यौन शोषण के कई गंभीर आरोप लगाए थे। एक्ट्रेस ने 2017 में टीवी शो 'आप की अदालत' में आरोप लगाया था कि आदित्य पंचोली ने उनके साथ मारपीट की और उन्हें लंबे समय तक घर में बंद करके रखा। कंगना ने कहा था कि वह लगातार डर के माहौल में जी रही थीं और अक्सर वहां से भागने की कोशिश करती थीं। उन्होंने एक घटना का जिक्र करते हुए कहा था कि पंचोली ने उनके घर की डुप्लीकेट चाबी बनवा ली थी और बिना इजाजत वहां आ जाते थे। एक बार हालात इतने बिगड़ गए कि कंगना को अपनी जान बचाने के लिए पहली मंजिल से कूदकर भागना पड़ा। उन्होंने बताया कि वह नंगे पैर भागते हुए सड़क पर निकलीं और रिक्शा लेकर किसी तरह वहां से बच निकलीं, लेकिन इस दौरान उन्हें चोटें भी आईं।कंगना ने यह भी कहा था कि भागने के बाद भी उनका पीछा नहीं छोड़ा गया। उन्होंने बताया कि अगली सुबह जब उनके घर की घंटी बजी और उन्होंने दरवाजे के की-होल से देखा, तो सामने आदित्य पंचोली खड़े थे, जिससे वह बचकर निकली थीं। उन्होंने आगे बताया था कि एक बार शूटिंग के दौरान उन्हें धमकी भरे फोन कॉल्स आए और जब वह वहां से निकलीं, तो उनकी गाड़ी का पीछा किया गया। यहां तक कि उनके रिक्शा को टक्कर मारने की कोशिश भी की गई। इस मुश्किल समय में फिल्म डायरेक्टर अनुराग बसु और उनकी पत्नी ने उनकी मदद की। कंगना ने बताया था कि उन्होंने लगभग 15 दिनों तक उन्हें अपने ऑफिस में छुपाकर रखा था।कंगना रनोट की साल 2013 में फिल्म रिवॉल्वर रानी की शूटिंग के दौरान एक खतरनाक घटना हुई थी, जब एक्ट्रेस डकैतों के गन पॉइंट पर आ गई थीं। यह घटना मध्य प्रदेश के चंबल इलाके में हुई, जो कभी डकैतों का गढ़ हुआ करता था।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।